।। कोबातीर्थमंडन श्री महावीरस्वामिने नमः ।।

।। अनंतलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः ।। ।। गणधर भगवंत श्री सुधर्मास्वामिने नमः ।।

।। योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।। ।। चारित्रचूडामणि आचार्य श्रीमद् कैलाससागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

पुनितप्रेरणा व आशीर्वाद

राष्ट्रसंत श्रुतोद्धारक आचार्यदेव श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

जैन मुद्रित ग्रंथ स्केनिंग प्रकल्प

ग्रंथांक : १

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-३८२००७ (गुजरात)
(079) 23276252, 23276204
फेक्स : 23276249
Websiet : www.kobatirth.org
Email : Kendra@kobatirth.org

शहर शाखा

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
शहर शाखा
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
त्रण बंगला, टोलकनगर
परिवार डाइनिंग हॉल की गली में
पालडी, अहमदाबाद – ३८०००७
(079) 26582355

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकबर की धार्मिक नीति

कु० नीना जैन

महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकबर की धार्मिक नीति

जीवाजी विश्व विद्यालय ग्वालियर, एम. ए. (इतिहास)
सन् १९७७ ई० परीक्षार्थी

लघु-प्रबन्ध

प्रस्तोत्री-
कु० नीना जैन

निर्देशक-
प्रो० आर. एन. तिगनाथ
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष इतिहास विभाग
महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, ग्वालियर

केन्द्र-
महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रो० आर. एन. तिगनाथ,
प्राध्यापक एवम् अध्यक्ष इतिहास विभाग,
महारानी लक्ष्मी बाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

-: प्रमाण - पत्र :-

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर की एम.ए. इतिहास की परीक्षा के अष्टम प्रश्न पत्र के स्थान पर प्रबन्ध प्रस्तुत करने की सुविधा का उल्लेखनीय उपयोग कुमारी नीना जैन ने किया है । इस लघु प्रबन्ध का विषय है -" अकबर की धार्मिक नीति -"

मैं प्रमाणित करता हूं कि मेरे निर्देशन में कु० नीना जैन ने यह प्रबन्ध लिखा है और यह मौलिक, सुचिन्तित और उच्च कृति है ।

दिनांक 11 मार्च १९७७ (आर. एन. तिगनाथ)

-0- -0- -0-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रस्तावना

अकबर भारतीय इतिहास के महानतम शासकों में अपना शीर्ष स्थान रखता है। मध्यकाल में मुसलिम तलवारों की द्युति के मध्य सह्योग और सहानुभूति की ढाल लिये हुए यह सम्राट अपना अद्वितीय स्थान रखता है। मुसलिम विजेताओं की देशीय राजाओं और प्रजा के प्रति तीव्र क्रूरता और हिंसा की नीति के बीच अकबर अपनी सौहार्दयता के लिये प्रसिद्ध है। उसकी यह सौहार्दयता मूल रूप से धार्मिक नीति में प्रस्फुटित हुई है, जिससे वह महानता के उच्चासन पर आसीन हो सका। उसकी आन्तरिक जिज्ञासा और आत्म लालसा धार्मिक सहिष्णुता एवम् नवीनता का रूप लेकर मध्य युग के अशांति पूर्ण वातावरण में शांति का सन्देश लेकर हमारे समक्ष आई। इस अशांति पूर्ण और असहिष्णुता के बीच अकबर की धार्मिक सहिष्णुता अपना निराला स्थान रखती है। इसी निरालेपन ने सहज ही मेरे जिज्ञासु मन को अपनी ओर आकृर्षित किया। फलत: यह लघु प्रबन्ध आपके समक्ष है।

यद्यपि "अकबर की धार्मिक नीति" यह विशेष्य अपने आप में उपाधि हेतु विशद अध्ययन की रेखाओं से परिपूरित है फिर भी लघु प्रबन्ध की परिसीमा को ध्यान में रखते हुए इसे मैंने संक्षिप्त रूप ही प्रदान - किया है।

प्राय: मध्यकाल के अग्रगण्य इतिहासकार व विद्यार्थी सभी के समक्ष अकबर की धार्मिक नीति अपना विशिष्ट स्थान लिये हुए दिखाई देती है और मध्यकालीन धार्मिक नीति का अध्ययन करने पर अकबर की धार्मिक नीति ही विशाल एवम् नवीन रूप लिये हुए दिखाई देती है। इस क्षेत्र में अत्याधिक विशद रूप में कार्य हो चुका है जिसने अकबर की धार्मिक नीति में निखार ला दिया है। मेरा यह लघु प्रबन्ध भी इस

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिशा में छोटा सा बालकीय प्रयास है । जिसमें अकबर की धार्मिक नीति का विश्लेषणात्मक वर्णन किया गया है ।

वस्तु इस दु:साध्य से लगने वाले कार्य को सरल बनाने में गुरुवर प्रो० आर० एन० तिगनाथ (अध्यक्ष इतिहास विभाग) ने मुझे अनेकश: प्रकार से अमूल्य सहयोग दिया । इस समस्त कार्य की पूर्ति का श्रेय उन्हीं को है जिन्होंने न केवल मुझे सहायता ही दी अपितु समय समय पर नैराश्य से परिपूर्ण हृदय को नवीन आशा की किरणों से परिपूरित कर ऐतिहासिक जगत में भटकती हुई को नवीन मार्ग प्रदान किया । साथ ही कार्य करने की नवीन विधियों से मुझे अवगत करा कर सदैव उत्प्रेरित किया इस सब को व्यक्त करने की न मुझ में सामर्थ्य है और न मेरे शब्दों में । आपका आशीर्वाद मेरे प्रत्येक शुभ कला की सफलता के लिये प्रेरणा स्त्रोत बन गया ।

शासकीय महाविद्यालय, शिवपुरी के इतिहास विभाग के प्रोफेसर के० बी० अस्थाना के प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रकट करने में मैं पुलक का अनुभव कर रही हूं जिन्होंने इस अकिंचिन को सहायता देने में कभी भी मुख नहीं मोड़ा ।

प्राथमिक विद्यालय राजपुरा, पुरानी शिवपुरी के सुयोग्य अध्यापक श्री श्रवणलाल वर्मा, व्ही० टी० पी० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय शिवपुरी के - डा० जी० डी० चतुर्वेदी तथा व्याख्याता श्री एस० एस० शर्मा के प्रति भी मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूं जिन्होंने समय समय पर अपना अमूल्य समय देकर मुझे हार्दिक सहयोग दिया ।

इसके साथ ही प्रस्तुत प्रबन्ध में विभिन्न विद्वानों और इतिहासकारों के हिन्दी तथा अंग्रेजी के ग्रंथों से भी मुझे असीम सहायता - प्राप्त हुई है । अत: उन विद्वानों व इतिहास कारों की भी मैं आभारी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हूं और श्री जे० के० सलूजा, भारत टायपिंग स्कूल तथा श्री कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस शिवपुरी को भी धन्यवाद देती हूं जिन्होंने अतीव रूचि व श्रम के साथ कार्य सम्पादित किया ।

इन्हीं शब्दों के साथ ही मैं यह लघु प्रबन्ध प्रस्तुत कर रही हूं ।

(कुमारी नीना जैन)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रमणिका -

क्रमांक. अध्याय	पृष्ठ क्रमांक
प्रथम अध्याय -	
खण्ड - अ - अकबर के पूर्व सुलतानों की धार्मिक नीति । महमूद गजनवी व मुहम्मद गौरी, दास वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश लोधी वंश ।	
खण्ड ब - अकबर के पूर्वजों की धार्मिक नीति- बाबर, हुमायूं ।	
द्वितीय अध्याय -	
अकबर का व्यक्तित्व : वेशभूषा, भोजन, साहारता स्वभाव, धार्मिक उदारता, चारित्रिक दुर्बलतायें, ईश्वरीय निष्ठा ।	
तृतीय अध्याय -	
धार्मिक नीति को प्रभावित करने वाले तत्व - तत्कालीन परिस्थितियां, व अन्य तत्व ।	
चतुर्थ अध्याय -	
धार्मिक नीति का विकास (खुतबा पढ़ने से पूर्व १५७९ तक):प्रारम्भिक धार्मिक - विचार, धार्मिक नीति का क्रमिक विकास, इस्लाम के प्रति दृष्टि कोण ।	

For Private And Personal Use Only

क्रमांक. अध्याय पृष्ठ क्रमांक

पंचम अध्याय :

विभिन्न धर्माचार्यों से सम्पर्क, खुतबा व महजर :

हिन्दू, पारसी, जैन, ईसाई, खुतबा, महजर ।

षष्टम अध्याय :

अकबर और दीन - ए - इलाही

दीनइलाही का अभ्युदय, स्वरूप, प्रारम्भ, विधि - विधान, सिद्धान्त, नियम, वर्गीकरण व सदस्य संख्या, असफलता, दीन-ए-इलाही के बारे में विभिन्न मत, आलोचना एवम् समीक्षा ।

सप्तम अध्याय :

धार्मिक नीति के परिणाम ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खण्ड - 'अ'

अकबर से पूर्व सुल्तानों की धार्मिक नीति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकबर के पूर्व सुल्तानों की धार्मिक नीति : (खण्ड अ)

इस्लाम व भारत में इसका प्रवेश :

इस्लाम का उत्कर्ष व प्रसार विश्व इतिहास में युगान्तर घटना है । पैगम्बर मोहम्मद के पूर्व अरब मूर्ति पूजकों का देश था किन्तु ५७० में मोहम्मद के जन्म व उनके ज्ञान प्राप्त करने के बाद इस्लाम अरब वासियों के समक्ष में रंगमंचीय नाटक की भांति यकायक उपस्थित हुवा और शीघ्र ही बड़ी तेजी के साथ विकास कर गया । जब मोहम्मद साहब ने ६३० ई० में कुरैश की शक्ति नष्ट करके मक्का को विजित कर लिया तब लोग - इस्लाम के काफी संख्या में अनुयाई हो गये और इस्लाम ने वृहद रूप धारण कर लिया ।

भारत में इस्लाम का आगमन बड़ी तीव्रता के साथ हुवा । - लोगों की धारणा है कि भारत में इस्लाम धर्म का प्रचार विजेताओं की शक्ति तथा अत्याचार के कारण हुवा । किन्तु डा० ताराचन्द ने अपनी पुस्तक इन्फल्युसैंस आँफ इस्लाम ओन इंडियन कल्चर में यह बताया है कि इस्लाम का प्रचार शांति पूर्ण ढंग से दक्षिण की ओर से हुवा । यही नहीं टामस अनार्ल्ड का भी यही कहना है कि - इस्लाम का धर्म प्रचार न तो अत्याचारी के निर्दय कृत्यों का परिणाम है और न मुसलिम योधा के उस काल्पनिक रूप के कारण हुवा है जिसमें वह एक हाथ में तलवार और दूसरे में कुरान लिये चित्रित किया गया है । उनके धर्म प्रचार का मुख्य कारण उनके उपदेशकों का अथक परिश्रम तथा उनके व्यापारियों की कार्य क्षमता है जिन्होंने इस भूमण्डल के कोने कोने में अपने धर्म की वाणी सुनाई, डा० ईश्वरी प्रसाद ने भी इसी मत का समर्थन किया है।१ वास्तव में दक्षिण भारत में मालाबार आदि तटो पर शांति पूर्ण ढंग

---

१ - डा० ईश्वरी प्रसाद - मेडीवल इन्डिया पृष्ठ १२ , १९६६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से और उत्तर भारत में शक्ति और बर्बरता के द्वारा इस्लाम का प्रचार हुआ। सिन्ध पर अरबों की विजय ने इस्लाम के प्रचार का रास्ता खोल दिया क्योंकि जिन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया उन्हें जजिया से मुक्त कर दिया और जिन्होंने नहीं स्वीकारा वे जजिया कर के बोझ से दबा दिये गये। अन्ततोगत्वा सुबक्त गीन एवं महमूद गजनवी के आक्रमणों व मुहम्मद गोरी की विजयों ने भारत में इस्लाम का राज्य स्थापित कर दिया। इस प्रकार इस्लाम का प्रारम्भ धार्मिक रूप में हुआ परन्तु परिस्थितियों ने उसे राजनैतिक रूप दे दिया। (२)

महमूद गजनवी और मुहम्मद गोरी की धार्मिक नीति :

महमूद गजनवी भारत में धार्मिक उद्देश्यों से पूर्ण हृदय लेकर आया था। इस्लाम ने उसकी असीम महत्वाकांक्षाओं को धार्मिकता का जामा पहना दिया था। कहा जाता है कि खलीफा के मान्यता पत्र के बदले में उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह प्रति वर्ष भारत वर्ष के काफिरों पर आक्रमण करेगा। उसका दरबारी इतिहासकार उतबी बताता है कि उसके आक्रमणों का उद्देश्य जिहाद था। जिसका मूलोउद्देश्य इस्लाम का प्रचार और कुफ्र का मूलोच्छदन करना था। वह लिखता है कि - सुल्तान महमूद ने पहले सिजिस्तान पर आक्रमण करने का संकल्प किया परन्तु बाद में उसने हिन्द के विरुद्ध जेहाद करना ही अधिक अच्छा समझा (तारीख-ए-यमीनी) ईश्वरी प्रसाद एवम् ए० एल० श्रीवास्तव आदि इतिहासकार भी यही बताते है कि धार्मिकता ही महमूद के आक्रमणों का मूल कारण थी। किन्तु प्रो० हबीब बताते है कि महमूद धर्मान्ध न था भारत पर आक्रमण उसने धार्मिक उदेश्यों को लेकर नहीं वरन लूट के लालच से किये(३)

- -

(२) दिनकर - संस्कृति के चार अध्याय।

(३) प्रो० हबीब - महमूद आफ गजना पृष्ठ ५३

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यहां तक कि सोमनाथ के मंदिर ४ के बारे में उन्होंने लिखा है कि - ब्राह्मणों का धन देने का वचन और महमूद की अस्वीकृति की कहानी बाद में गढ़ी गई है। ५ किन्तु अन्य मुसलमान विद्वान इसका समर्थन नहीं - करते है।

वास्तविकता यह है कि महमूद इस्लाम की धार्मिक भावनाओं से ओत प्रोत था जिससे उत्साहित होकर उसने आक्रमण किये। बाद में आक्रमणों में प्राप्त सम्पत्ति में उसे और भी विजयों के सम्बन्ध में उत्सुक बना दिया।

धार्मिक क्षेत्र में मुहम्मद गोरी का उद्देश्य गौण था उसका प्रमुख ध्येय भारत में अपनी राजनैतिक सत्ता की स्थापना करना था। यद्यपि समकालीन इतिहासकार हसन निजामी की ताजुल मआसिर तथा मिनहाज की तबकाते नासिरी से यह पता चलता है कि कन्नौज में गोरी ने अत्याधिक नरहत्या की और बनारस में अनेक मंदिरों का विध्वंस कराया। किन्तु अन्य धार्मिक अत्याचारीयों की भांति उसने बलात धर्म परिवर्तन तथा धर्म के नाम पर कठोर अत्याचार नहीं किये।

- -

४ - श्री नाजिम ने सुल्तान महमूद नाम की पुस्तक में पृष्ठ ११८ पर लिखा है कि जब महमूद ने मूर्ति देखी तो आज्ञा दी कि इसका ऊपरी भाग गदा से तोड दो फिर चारो ओर आग लगा दी जाय, फरिश्ता का कथन है कि मूर्ति खोखली थी। सत्य प्रतीत नही होता। अलबेरुनी ने लिखा है कि लिंग ठोस सोने का बना था।

५ - मोहम्मद हबीब - महमूद ऑफ गजना - पृष्ठ ५३.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वस्तुत: यह कह सकते है कि वह महमूद गजनी की अपेक्षा अधिक धार्मिक सहिष्णु था ।

दास वंश के सुल्तानों की धार्मिक नीति :

दास वंश के सुल्तान ही दिल्ली सल्तनत के प्रारम्भिक सुल्तान थे जिन्होंने निष्ठा पूर्वक सल्तनत की जणे मजबूत करने में योगदान दिया इन सुल्तानों में एवक अल्तमश और बलबन ही प्रमुख थे । इनका शासन पूर्णत: इस्लामी नियमों पर ही आधारित था ।

दिल्ली सल्तनत के प्रथम शासक एवक की इस्लाम में अत्याधिक निष्ठा थी । यहां तक कि उसने अनेक हिन्दू मंदिरों को तोड़ा और मस्जिदों का निर्माण कराया । उसमें धार्मिक सहिष्णुता का अभाव था इस्लाम में उसका पूरा विश्वास था ।

अल्तमश का जहां तक प्रश्न है वह एवक से भी धार्मिक कट्टरता में आगे था । हसन निजामी बताता है कि जालोर में पहुचने पर मंदिरों का जो कि सिर उठाये थे नाम भी न रहा और कुफ्र के अन्धेरे से इस्लाम का प्रकाश चमक उठा । ६ मिनहाज भी लिखता है कि मालवा पर चढाई की और भेलसा के किले पर अधिकार कर लिया वहां एक मंदिर जो तीन सो वर्षों में तैयार हुआ था जो १०३ गज ऊंचा था विध्वंस कर दिया गया । ७ इस प्रकार धार्मिक दृष्टि से इल्तुतमिश इस्लाम का कट्टर अनुयायी था यद्यपि आधुनिक मुसलिम इतिहासकारों ने उसकी उदारता की प्रशंसा की है । परन्तु धार्मिक उदारता काकही विवरण नहीं दिया । वास्तविकता भी यही है कि उसने धार्मिक उदारता की नीति का अनुसरण नहीं किया । उसने सदैव उल्मा वर्ग का समर्थन किया जो कि सुन्नी धर्म का अनुयायी था । वह कट्टर धार्मिक मुसलमान था जो प्रतिदिन नियम पूर्वक पांच वार नमाज पढता एवम् अन्य धार्मिक कृत्य किया करता था ।

६ - रिजवी - आदि तुर्क कालीन भारत पृ० २७५
७ - " " " "

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिनहाज लिखता है कि "इस प्रकार का धर्म निष्ठ और साधु फकीरों ईश्वर भक्तों तथा धर्म गुरूओं और धर्माचार्यों के प्रति इतना दयालु तथा श्रद्धालु राजा इस सृष्टि में कभी उत्पन्न नहीं हुआ।" १२२८ में अब्बासी खलीफा से प्रमाण पत्र लेकर उसने एक नवीन अध्याय जोड़ा और तुर्की सल्तनत को धार्मिक मान्यता भी प्राप्त कर दी।

बलबन की धार्मिकता उसके धार्मिक स्वरूप की उत्कृष्टता को प्रकट करती है। एक ओर जहां वह उलेमा वर्ग पर कठोर नियंत्रण रखता था वहीं पर साधु, फकीर एंव आलिमों के प्रति वह अत्याधिक उदार था। मिनहाज तो उसकी उदारता को उच्चतम बिन्दु तक पहुंचा देता है वह लिखता है कि "यदि नगर में कोई शेख सैयद सन्त अथवा आलिम का स्वर्गवास हो जाता तो सुल्तान उसके जनाजे के साथ उपस्थित रहता।" इस प्रकार इस्लाम में उसकी अटूट आस्था थी किन्तु हिन्दुओं से वह घृणा करता था। वह कहा करता था कि ब्राह्मण जो कि कुफ्र के इमाम है, को देखते ही नष्ट कर देना चाहिए। बलबन धर्मान्ध था और अपनी बहु-संख्यक जनता के साथ उसका व्यवहार असहिष्णुता पूर्ण रहा। तुर्की की श्रेष्ठता में उसका विश्वास था। वस्तुत: धार्मिक असहिष्णुता के क्षेत्र में वह अपने पूर्ववर्ती शासकों से भी आगे था।

खिलजी वंश के सुल्तानों की धार्मिक नीति :

खिलजी वंश के सुल्तानो की धार्मिक नीति भी अमानुषिक हत्याएं व नृशंसता से परिपूर्ण थी। खिलजीयों में दासवंश की कटटर इस्लामिक धार्मिकता उभर कर सामने आ गई है। इस वंश के शासकों ने मुख्य रूप से जलालुद्दीन फीरोज खिलजी एंवम अलाउद्दीन प्रमुख है।

सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी इस्लाम का परम भक्त था वह कहा-करता था "मैं अपनी नीति के विषय में केवल उन लोगों का ही अनु-करण करता हूं जो पैगम्बरों की आज्ञाओं का पालन करना अपना परम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्तव्य समझते हैं । " " मैं प्रतिदिन एक सिपारा कुरान पढ़ता हूं । पांचों समय की नमाज पढ़ता हूं । " ८ उसके सम्पूर्ण जीवन में धार्मिक अनुरक्ति स्पष्ट प्रतिफलित होती है वह मुसलिम प्रजा को अत्याधिक प्रेम करता था । क्योंकि रण थम्भौर विजय के सम्बन्ध में वह कहता है कि " इस प्रकार के दस किलों को मुसलमानों के एक बाल को हानि पहुंचा कर लेने के पक्ष में नहीं । " ६ किन्तु सीदी मौला की हत्या से उसकी क्रूरता प्रदर्शित होती है । कुछ मुसलिम इतिहास कार बरनी, इसामी आदि इस कृत्य के लिये सुल्तान की आलोचना करते हैं परन्तु वास्तव में उसका दण्ड अपराध के योग्य था क्योंकि बरनी स्वयम् लिखता है कि " चिरंजतन कोतवाल और हथिया पायक रात रात भर सीदी के पास बैठ कर षडयंत्र रचा करते थे । १० इससे स्पष्ट है कि जलालुद्दीन उसके दण्ड के लिये दोषी नहीं माना जा सकता है । अतः जलालुद्दीन की धार्मिकता में कोई आंच नहीं आती है । वास्तव में तो इस्लाम में उसकी अगाढ़ आस्था थी ।

हिन्दुओं के प्रति व्यवहार में जलालुद्दीन की नीति भी अपने पूर्व शासकों की अपवाद सिद्ध नहीं हुई । यद्यपि सुल्तान सहृदय एवं दयालु था किन्तु हिन्दुओं की मूर्ति पूजा आदि का तो वह कट्टर विरोधी था । बरनी लिखता है कि " जलाली राज्यकाल में अधर्मियों बदमजहबों, हिन्दुओं तथा नास्तिकों को किसी स्थान में प्रवेश करने की आज्ञा नहीं थी । ११ जलालुद्दीन को इस बात का बड़ा दुःख था कि वह हिन्दुओं

- -

८ - रिजवी खिलजी कालीन भारत पृष्ठ १२

६ -	,,	,,	,,	२५
१० -	,,	,,	,,	२२
११ -	,,	,,	,,	२०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की मूर्ति पूजा का अन्त न कर सका तथा उन्हें दाने दाने को मोहताज नहीं कर सका ।

अलाउद्दीन खिलजी धर्म के क्षेत्र में अपने पूर्व कालिक सुल्तानों की पंक्ति में नवीन स्थान ग्रहण करता है । यह तो स्पष्ट है कि वह इस्लाम का भक्त था किन्तु उलेमाओं आदि के हस्तक्षेप को वह राजनीति में सहन नहीं कर सकता था । यही नहीं राजनैतिक कार्यों के आगे धार्मिक पक्ष को प्राथमिकता भी वह नहीं देता था । जैसा कि बरनी बताता है "" मैं नहीं समझता कि यह आज्ञाएँ शरा के अनुसार है या शरा के विरुद्ध है । मैं जो कुछ राज्य के लिये उचित समझता हूं उन्ही की आज्ञा देता हूं । १२ इसी तरह अनेक स्थानों पर वह राजनैतिक कार्यों को प्राथमिकता देता है यही कारण है कि तत्कालीन कट्टर लेखक बरनी ने सुल्तान को अंशत: धर्म विहीन भी प्रदर्शित करने का प्रयास किया है । जैसे वह लिखता है "" शराओं की आज्ञा पालन करने पर वह कोई ध्यान नहीं देता था । नमाज रोजे का न तो उसे ज्ञान ही था और न जानकारी ही । १३ साथ ही वह यह भी बताता है कि अलाउद्दीन एक नवीन धर्म की स्थापना करना चाहता था । परन्तु निजामी इसका तर्क संगत खण्डन करते है तथा अपने पक्ष की परिपुष्टि के लिये अनेक मत देते है । १४ अन्तत: यही कहा जा सकता है कि अलाउद्दीन में इस्लाम के प्रति निष्ठा तो थी किन्तु वह राजनैतिक कार्यों में उसे बाधक नहीं होने देना चाहता था ।

---

१२ - बरनी - तारीख - ए - फीरोज शाही पृष्ठ २९६

१३ - रिजवी - खिलजी कालीन भारत पृष्ठ ६३

१४ - निजामी - दी कोम्प्रीहैंसिव हिस्ट्री ऑफ इण्डिया - दी देहली सल्तनत - भाग ५ पृष्ठ ३३६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हिन्दुओं को अलाउद्दीन फूटी आँखों भी समृद्ध नहीं देखना चाहता था । उसने अपने शासन में हिन्दुओं को अत्याधिक दीन हीन बना दिया था । काजी मुगीस व्दारा दिये गये उत्तर को बरनी ने लिखा है कि "" हिन्दु मुस्तफा के दुश्मनों में सब से बड़े दुश्मन है मुस्तफा अल्लेहिस्सलाम ने हिन्दुओं के विषय में यह आज्ञा दी है कि उनकी हत्या कर दी जाय उनकी धन सम्पत्ति लूट ली जाय या उन्हें वन्दी बना लिया जाय या तो उनसे इस्लाम स्वीकार करा लिया जाय अन्यथा हत्या करदी जाय । १५ इस समकालीन इतिहासकार के वर्णन से हिन्दुओं की दीन स्थिति का स्पष्ट चित्र समक्ष आ जाता है किन्तु निजामी इसकी आलोचना करते हुए बताते है कि "" पैगम्बर ने कभी हिन्दू को नहीं देखा । और न ही वाद के छ: सुन्नी धर्मशास्त्रों में इसका वर्णन है ।"१६

कुछ भी हो यह तो निश्चित है कि अलाउद्दीन हिन्दुओं को निम्नतम स्थिति तक ले आना चाहता था फलत: हिन्दुओं को जीवन यापन अत्यधिक कठिन हो गया । इस लिये बरनी लिखता है कि "" हिन्दुओं को लज्जित पतित और दरिद्र बना दिया है । मैंने सुना है कि हिन्दुओं की स्त्रियां तथा वालक मुसलमानों के व्दार पर भीख मांगा करती है । १७ इस प्रकार अलाउद्दीन कट्टर धर्मान्ध सिद्ध हुआ जिसने इस्लाम की रक्षा के लिये काफिरों का सफाया कर दिया ।

तुगलक वंश के सुल्तानों की धार्मिक नीति :

तुगलक शासकों में धार्मिक नीति के विभिन्न पहलू हमें देखने को मिलते है । जहां एक ओर प्रारम्भिक काल में मोहम्मद धर्म को कोई प्राथमिकता नहीं वहीं फीरोज प्रारम्भ से ही कट्टर धर्मान्ध था । इस प्रकार

---

१५ - रिजवी - खिलजी कालीन भारत - पृष्ठ ७०

१६ - निजामी - दी कोम्प्रीहैंसिव हिस्ट्री आफ इन्डिया - दी देहली सल्तनत भाग ५ पृ० ३३७

१७ - रिजवी खिलजी कालीन भारत पृ० ७४.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुगलक काल में धार्मिक नीति के नवीन पक्ष भी हमारे समक्ष आते हैं ।

तुगलक वंश का प्रथम शासक गयासुद्दीन तुगलक अपने निजी जीवन में कट्टर सुन्नी मुसलमान था । खुसरो की हत्या करने के बाद वह एक श्रेष्ठ इस्लामी शासक के रूप में पदासीन हुआ । अत: उसको धर्मान्ध - होना स्वभाविक सा ही था । यही कारण है कि इस्लामी नियमों के विरुद्ध व्यवहार करने पर वह शेख निजामुद्दीन औलिया से भी अत्यन्त नाराज था ।

हिन्दुओं के प्रति गयासुद्दीन का व्यवहार प्रशंसनीय नहीं था । अलाउद्दीन के अनेक नियमों को उसने जारी रखा और हिन्दुओं को सम्पत्ति एकत्रित करने की आज्ञा नहीं दी गयी । जहाँ तक अधिक कर न लगाने का प्रश्न है इसके सम्बन्ध में बरनी स्पष्ट लिखता है कि " सुल्तान ने हिन्दुओं पर अधिक कर इस लिये नहीं लगाया कि वह निराश होकर अपनी भूमि तथा व्यवसाय छोड़कर भागने पर बाध्य नहीं करना चाहता था । इस प्रकार ग्यासुद्दीन का भी हिन्दुओं के प्रति व्यवहार उचित नहीं था ।

मोहम्मद तुगलक के आते ही धार्मिक क्षेत्र में हम नवीन मोड़ देखते है । अपने प्रारम्भिक काल में उसने धर्म निरपेक्षता का परिचय दिया, और प्रशासन आदि में उलेमा पर नियंत्रण रखा । अशरफ तो यहाँ तक लिखते है कि भारतीय मुसलमानों की योजनाबद्ध रूप से मनाही कर दी गई थी और सुल्तान विदेशी लोगों पर विश्वास करने लगा । यही नहीं बरनी को इस बात का बड़ा दुख: था कि सुल्तान उलेमा आदि की हत्या करने में किसी प्रकार की हिचकिचाहट, प्रदर्शित नहीं करता था । यही कारण है कि उसने मोहम्मद तुगलक ब को एक विचित्र शासक के रूप में प्रदर्शित किया है । उसने हिन्दुओं को भी उच्च पद देना प्रारम्भ कर दिया था । डा० मेहदी हुसैन ने अपनी पुस्तक - राइज एन्ड फाल आँफ दी मुहम्मद बिन तुगलक में रतन नामक हिन्दू का विवरण दिया है जो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिन्ध का सूबेदार था किन्तु ईश्वरी प्रसाद यह बताते है कि वह सूबेदार न होकर राजस्व अधिकारी था । इससे यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि उसका अपनी बहुसंख्यक प्रजा से धर्म के कारण असहिष्णुता पूर्ण व्यवहार नहीं था ।

इस्लाम के प्रति मोहम्मद की पूर्ण निष्ठा थी इब्नबतूता उसकी नमाज की दिल खोल कर प्रशंसा करता है । बरनी ने भी उसकी दानशीलता तथा नमाज के प्रति रूचि का स्पष्ट विवरण दिया है किन्तु मुसलिमों को कटु दण्ड के समय वह आक्रोशित हो जाता है और सुल्तान की बुराई करने में किसी प्रकार पीछे नहीं हटता । वह बड़े सुन्दर शब्दों में लिखता है - "कि एक ओर मैं उसकी धर्म निष्ठता और नम्रता अपनी आंखों से देखता था तो दूसरी ओर कोई दिन ऐसा व्यतीत नहीं होता था जब कि सुन्नी मुसलमानों के खीरा खीरे ककड़ी की भांति न काट डाले जाते हो । --- ऐसा कोई सप्ताह व्यतीत नहीं होता था जब कि अनेक मुसलमानों की - हत्या न कराई जाती हो । और उसके महल के व्दार के आगे रक्त की नदी न बहती हो । १८ इस प्रकार उसने मुसलिम जनता को भी कठोर दण्ड दिये किन्तु इन दण्डों के फल स्वरूप मुसलिम प्रजा उससे नाराज हो गयी और विद्रोह करने लगी । जिससे प्रभावित होकर उसने खलीफा से आज्ञा पत्रप्राप्त करने के लिये बड़ी सेवा की । बरनी लिखता है कि -" देहली में कुब्बे सजाये गये सुल्तान अमीरूल मोमिनीन की लिवा तथा मनशूर अपने सिर पर रख कर शहर के व्दार से महल के व्दार के भीतर तक गया और अत्याधिक आदर सम्मान किया ।" १९

---

१८ - रिजवी - तुगलक कालीन भारत - भाग १ पृष्ठ ३६

१९ - ,, ,, ,, ,, पृष्ठ ६०

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस तरह हम देखते हैं कि सुलतान मोहम्मद हमें धर्म क्षेत्र में विभिन्न रूपों को प्रदर्शित करता है । वास्तव में वह दिल्ली सुलतानों की पंक्ति में एक नवीन रूप का अवलोकन करता है ।

फीरोज तुगलक धार्मिक दृष्टि से एक श्रेष्ठ मुसलमान के रूप में हमारे समक्ष आता है । इस्लाम के प्रचार और प्रसार को वह अपना धार्मिक कर्तव्य समझता था । वह अपने ग्रन्थ फतूहाते फीरोजशाही में लिखता है कि मैंने अपनी काफिर प्रजा को पैगम्बर का धर्म अंगीकार करने के लिये प्रोत्साहित किया और घोषणा की कि प्रत्येक व्यक्ति को जो अपना धर्म छोड़कर मुसलमान हो जाएगा, जजिया से मुक्त हो जाएगा । उसे इस बात का बड़ा खेद था कि ब्राह्मण जो कि कुफ्र के इमाम है - जजिया से वंचित है फलत: उसने ब्राह्मणों पर भी जजिया लगा दिया ।

उलेमा के प्रति भी वह अपनी पूर्ण श्रद्धा तथा भक्ति रखता था वह जानता था कि मोहम्मद की मृत्यु के बाद उन्ही ने उसे शासक नियुक्त किया था तथा सुलतान मोहम्मद की असफलता का कारण भी उलेमा से संघर्ष था । इन सब कारणों से फीरोज अत्याधिक सजग था साथ ही उसकी आत्म प्रवृति भी धार्मिकता की ओर अधिक झुकी हुई थी । इस लिये उसकी इस्लाम में पूर्ण निष्ठा थी ।

हिन्दुओं के प्रति फीरोज की नीति कटटर धर्मान्ध मुसलमान की थी वह हिन्दुओं के धार्मिक रीति रिवाजों को पूर्णत: नष्ट कर देने के पक्ष में था । उसने नगर कोट, जाजनगर पर आक्रमण के समय वहां के प्रसिद्ध मंदिरों को भूमि सात कर दिया । अनेकों मूर्तियों को तुड़वा कर फिकवा दिया । अफीफ की तारीख और फीरोज की आत्म कथा हिन्दुओं पर किये गये अत्याचारों का स्पष्टांकन करती है । अपनी पुस्तक फतूहात में फीरोज लिखता है कि " मुझे यह सूचना मिली कि कुछ हिन्दुओं ने सालिहपुर गांव में एक नया मंदिर बनवा लिया और मूर्ति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूजा किया करते हैं तो मैंने कुछ व्यक्तियों को मंदिर के विनाश के लिये भेज दिया । २० इस प्रकार के अनेक उदाहरण उसकी नृशंसता का परिचय देते है । वस्तुत: अन्तत: यही कहा जा सकता है कि फीरोज इस्लाम के अतिरिक्त किसी भी धर्म को जागृत अवस्था में नही देखना चाहता था यही कारण है कि इस्लामी निष्ठा के लिये हिन्दुओं पर अनेक अत्याचार किये ।

लोधी सुल्तानों की धार्मिक नीति :

लोधी शासकों ने भी धार्मिक क्षेत्र में अपने पूर्व शासकों का अनुकरण किया उन्होने उलेमाओं को पूर्ववत् उच्च पदों पर ही प्रतिष्ठित किया । लेकिन उन्होने फीरोज तुगलक आदि की तरह उलेमाओं को ही राज्य का महत्व पूर्ण वर्ग नही माना अपितु वह उलेमाओं पर भी नियंत्रण रखते थे ।

बहलोल लोधी अवश्य अफगान अमीरों के साथ ही उलेमाओं को भी अत्यधिक महत्व देता था । किन्तु सिकन्दर ने इस महत्व को कम कर दिया और यही स्थिति इब्राहीम के समय भी रही । कुछ लोगों का कहना है कि बहलोल ने सईद आईन नामक सन्त की सेवा की थी और उसे अभीष्ट धन (२००० रुपये) दिया था जिसके बदले में सन्त ने प्रसन्न होकर ये शब्द कहे - ईश्वर करे दिल्ली साम्राज्य की राजगद्दी को आप सुशोभित करें । २१ कुछ भी हो यह तो निश्चित है कि बहलोल दरवेश सन्त एवं उलेमाओं का अत्याधिक आदर करता था लेकिन सिकन्दर के आते ही उलेमा की इस स्थिति पर नियंत्रण लग गया । यद्यपि यह निश्चित है कि सिकन्दर बड़ा धार्मिक व्यक्ति था और राज्य प्रबन्ध में

- -

२० - रिजवी - तुगलक कालीन भारत - भाग २ पृष्ठ ३३३

२१ - डोर्न - मखजन अफगानी पृष्ठ ४३ तारीखे दाऊदी में २००० टंक के स्थान पर १३०० टंक लिखे हैं ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उलेमा के परामर्श को भी वह मानता था । किन्तु राज्य पर उलेमा के प्रभाव को वह स्वीकार नहीं करता था । फीरोज की भांति मुस्लिम विधवाओं की लड़कियों की शादी के लिये वह दहेज का प्रबन्ध किया करता था । अपने धर्म के लिये उसमें इतना उत्साह था कि मथुरा के मंदिर तुड़वाने और उनके स्थान पर सराय तथा मस्जिद बनवाने की उसने आज्ञा दे दी थी । हिन्दुओं को यमुना के घाटों पर स्नान करने की आज्ञा नहीं थी । वास्तव में इसने हिन्दू धर्म को कुचलने और इस्लाम का उत्थान करने के लिये हर संभव प्रयत्न किया उसकी आधीनता में दिल्ली सल्तनत इस्लाम के प्रचार का उतना ही सक्रिय साधन बन गई जितना कि फीरोज तुगलक के समय में थी । इस लिये हम कह सकते है कि उसकी धार्मिक नीति कट्टर इस्लामी थी । इब्राहीम की भी इस्लाम में पूर्ण निष्ठा थी । किन्तु उसने सिकन्दर की भांति हिन्दुओं के प्रति घृणात्मक व्यवहार नहीं किया । वास्तविकता तो यह थी कि आन्तरिक विद्रोह और बाह्य आक्रमणों के कारण वह इस ओर अपना ध्यान ही नहीं दे सका ।

इस प्रकार हम कह सकते है कि अकबर के पूर्व दिल्ली सुल्तानों की धार्मिक नीति इस्लाम धर्म प्रधान थी । प्राय: प्रत्येक सुल्तान ने इस्लाम के संवर्धन और विकास के हर सम्भव प्रयास किये और हिन्दुओं पर अनेक प्रकार के अत्याचार किये । इस काल में शासन में उलेमा वर्ग बड़ा ही प्रभाव शाली था । कुछ शासकों के समय तो उलेमा ही राज्य के प्रधान बन गये जिन्होंने सम्पूर्ण राज्य पर अपना प्रभाव स्थापित कर लिया ।

अधिकांशत: प्रत्येक शासक की नीति इस्लाम को ध्यान में रख कर ही निर्धारित होती थी और इस लिये यदि इस काल को धर्म राज्य कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं ।

-0- -0- -0-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खण्ड - 'ब'

अकबर के पूर्वजों की धार्मिक नीति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकबर के पूर्वजों की धार्मिक नीति (खण्ड ब)

अकबर का जन्म मध्य एशिया के तुर्की बादशाह अमीर तैमूरलंग की सातवीं पीढ़ी में हुआ था । पितृ पक्ष में वह तैमूर से सम्बन्धित था, उसके पितामह बाबर की माता तेरहवी सदी के प्रसिद्ध मध्य एशिया के आतंक वादी मंगोल चंगेज खां के द्वितीय पुत्र चगताई से उत्पन्न मंगोल के खान यूनुस खां की पुत्री थी । अकबर के पिता हुमांयू ने ईरान के निवासी अली अकबर जामी की पुत्री हमीदा बानू से विवाह किया था और इसी हमीदा बानू बेगम से अकबर का जन्म हुआ था । इस तरह अकबर के पूर्वज मध्य एशिया व ईरान से सम्बन्धित थे । यद्यपि चंगेज खां व तैमूर लंग में धार्मिक कट्टरता का अभाव था । वे समयानुकूल धार्मिक कृत्य करते थे, लेकिन यहां हम उनकी धार्मिक नीति का विवेचन न कर केवल अकबर के पितामह बाबर और पिता हुमांयू की धार्मिक नीति का ही वर्णन करेंगे ।

बाबर की धार्मिक नीति :

यद्यपि बाबर एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था लेकिन इसका यह तात्पर्य नहीं कि उसमें धार्मिक कट्टरता थी । सुन्नी मत के प्रति उसकी श्रद्धा और विश्वास ने उसे दूसरे मतपंथ के लोगों से मित्रता करने से नहीं रोका । वह नियम पूर्वक रोजे रखता था, नमाज पढ़ता था तथा अन्य धार्मिक रीति रिवाजों का पालन करता था । वह शराब का शौकीन अवश्य था लेकिन अपने बेटे हुमांयू की तरह वह नशे का गुलाम नहीं था । ईश्वर के प्रति उसका इतना अटूट विश्वास था कि उसे "ईश्वर पुत्र" ठीक ही कहा गया है । वह कहा करता था "ईश्वर की इच्छा के बिना कुछ भी नहीं हो सकता, उसकी शरण में रह कर हमें आगे बढ़ना चाहिये" १

१ - ए.एल. श्रीवास्तव - मुगल कालीन भारत पृष्ठ ४३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जब जब उसे विजय श्री प्राप्त होती थी वह भगवान को अनेकानेक धन्यवाद देता था और मानता था कि यह उसकी अनुकम्पा का परिणाम है। पानीपत के युद्ध के बाद भी उसने इसी प्रकार के विचार व्यक्त किये थे। " एक भाले की लम्बाई के बराबर जब सूर्य ऊंचा आ गया तो युद्ध शुरू हुआ और दोपहर तक चलता रहा। तब शत्रु बिलकुल हार गया और भगदड़ मच गई। मेरे लोग विजयी हुए और उल्लास से भर गये। भगवान की दया और कृपा से यह कठिन कार्य मेरे लिये आसान हो गया और वह शक्तिशाली सेना आधे दिन के भीतर मिट्टी में मिल गयी। " २ सुन्नी मत का अनुयायी होते हुए भी बाबर ने समरकन्द में शियामत को प्रोत्साहन दिया था।

जहां तक बाबर का हिन्दू वर्ग के प्रति व्यवहार का सम्बन्ध है वह अपने युग की परिस्थितियों से ऊपर न उठ सका। राणा सांगा के विरुद्ध उसने जिहाद आरम्भ किया था और अपने आदमियों को यह कह कर उसके विरुद्ध लड़ने के लिये भड़काया कि वह काफिर है और उसके - विरुद्ध युद्ध करना उनका धार्मिक कर्तव्य है। बस सब से अच्छा यही है कि अपने लिये ये दो बाते ठीक कर लेनी चाहिये कि यदि शत्रु को परास्त किया तो गाजी ३ हुए और मारे गये तो शहीद ४ हुए। दोनों प्रकार से अपनी मुक्ति है और पदवी बड़ी और बढ़ कर है। विजय प्राप्ति के बाद बाबर ने गाजी का खिताब ५ प्राप्त किया था। चन्देरी के मेदिनीराय

---

२ - एस० आर० शर्मा - अनुवादक मथुरालाल शर्मा भारत में मुगल साम्राज्य पृ० २३

३ - गाजी उन्हें कहते है जो दूसरे मतवालों को मारते हैं।

४ - शहीद वह है जो धर्म के लिये मारे जाते हैं।

५ - इस विजय पर बाबर ने पहले पहल यह पदवी धारण की क्योंकि इस बार शत्रु मुसलमान नहीं थे।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के विरुद्ध भी उसने ऐसा ही धर्म युद्ध लड़ा था और चन्देरी से उत्तर पश्चिम की ओर एक पहाड़ी सिरे पर काफिरों के सिरों का मीनारा बनवाया। बाबर किस निर्दयता के साथ लुटेरों का दमन किया करता था इसका अहमद यादगार ने वर्णन किया है। ** जब वह सरहिन्द पहुंचा तो समाना के काजियों में से एक ने यह शिकायत की कि मोहन मुन्दाहिर ने उसकी सम्पत्ति पर आक्रमण किया है, उसको जला दिया है और उसके लड़के को मार डाला है। इस पर विश्व विजेता बादशाह ने अली कुली हमदानी को तीन हजार घुड़ सवारों के साथ बदला लेने के लिये नियुक्त किया और आदेश दिया कि मुन्दाहिर ने प्रार्थी के साथ जो दुर्व्यवहार किया है और उसको जो हानि पहुंचाई है उसका पूरा पूरा बदला लिया जाय। मुन्दाहिर के लगभग एक हजार आदमी मारे गये और एक हजार आदमी औरते और बच्चे बंदी बना लिये गये। बहुत हत्याएँ की गई। कटे हुऐ सिरों का ढेर लग गया और मोहन मुन्दाहिर को जीता पकड़ लिया गया। ६ चाहे बाबर में अनेक गुण थे लेकिन था तो वह एक मुसलमान बादशाह। यही कारण है कि चन्देरी में राजपूतों के आत्म बलिदान के विषय में उसने कहा था कि वे सब नर्क में पहुंच गये पश्चाताप करने के बाद जब उसने तमगा नामक कर उठाया तो उससे केवल मुसलमान ही मुक्त किये गये थे हिन्दू नहीं। अयोध्या में उसने अपनी मस्जिद ऐसे स्थान पर निर्माण करायी थी जिसे श्री राम चन्द्र जी का जन्म स्थान मान, लाखों हिन्दू पूजते थे। ७ बाबर की इस नीति के कारण भोपाल के हस्तलिखित

---

६ - एस.आर. शर्मा - हिन्दी अनुवादक - मथुरालाल शर्मा भारत में मुगल साम्राज्य - पृष्ठ ४२-४३

७ - ए.एल.श्रीवास्तव - मुगल कालीन भारत - पृष्ठ ४४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पत्र ८ को जो बाबर का माना जाता है और जिस में संक्षेपत: उसकी उदार नीति का उल्लेख है, स्वीकार करना कठिन है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि बाबर की उदारता के विषय में जो उल्लेख मिलता है उसका यहां विरोध किया जा रहा है। फरिश्ता ने लिखता है कि - बाबर की उपस्थिति से ही दौलत खां के कुटुम्ब की इज्जत बची थी। ६

- -

८ इस पत्र में लिखा है कि हे मेरे पुत्र। भारत वर्ष में विभिन्न धर्मों के लोग निवास करते है। भगवान को धन्यवाद दो कि शहशाह ने इस देश का शासन तुम्हारे सुपुर्द किया है। इस लिये तुम्हारा कर्तव्य है कि -

१ - धार्मिक पक्षपात का तुम्हारे ऊपर कोई प्रभाव नही होना चाहिये और निष्पक्ष होकर तुमको न्याय करना चाहिये। जनता के विभिन्न वर्गों की धार्मिक भावनाओं का ध्यान रखना चाहिये।

२ - विशेष कर तुमको गो-वध से दूर रहना चाहिये। ऐसा करोगे तो लोगों के दिलों में तुम्हें जगह मिलेगी। इस देश के लोग तुम्हारे कृतज्ञ होगे और तुम्हारे साथ उनका कृतज्ञता का दृढ बन्धन हो जायेगा।

३ - तुम किसी जाति के प्रार्थना भवन को मत गिराना और सदैव न्याय प्रिय रहना, जिससे बादशाह और प्रजा का परस्पर सम्बन्ध अच्छा बना रहे और जिससे देश में शांति और सन्तोष रहे।

४- इस्लाम का प्रचार दमन शास्त्र की अपेक्षा स्नेह शास्त्र से और एहसान से अधिक होगा।

५ शिया और सुन्नी के पारस्परिक झगड़ों की ओर ध्यान मत देना, अन्यथा इससे इस्लाम निर्बल होगा।

६ अपनी प्रजा की विशेषताओं को ऐसा मानना जैसे वर्ष की विभिन्न ऋतुओं को ऐसा करने से शासन को कोई रोग नहीं लगेगा।

६ - एस.आर. शर्मा हिन्दी अनुवादक - मथुरा लाल शर्मा - भारत में मुगल साम्राज्य पृष्ठ ४१

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसी तरह एर्सकिन ने बाबर की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि "बाबर के चरित्र में सब से प्रशंसनीय बात यह है कि उसके व्यवहार में हमेशा कृपालुता, और मानवता बनी रहती थी यदि उसकी जीवनी में कहीं निर्दय हत्याओं का वर्णन आता है तो वह उस युग की विशेषता है, उसके स्वभाव की नहीं १० अन्य कट्टर पंथी सुन्नी मतावलम्बियों की तरह उसने इस्लाम धर्म के काफिरों को सताने का अपना कर्तव्य नहीं बना लिया था। हिन्दू वर्ग के प्रति बाबर का व्यवहार सल्तनत- युग के अन्य शासकों के व्यवहार की भांति बुरा नहीं था।

हुमायूं की धार्मिक नीति :

बाबर की तरह हुमायूं भी निष्ठावान मुसलमान था। पांचों वक्त की नमाज वह नियमित रूप से पढ़ता था। और इसके साथ - साथ अन्य धार्मिक रीति - रिवाजों का भी पालन करता था अपने पिता की भांति वह भी साम्प्रदायिक कट्टरता से दूर था। सुन्नी होते हुए भी शिया मतावलिम्बियों के प्रति उसके हृदय में द्वेष भाव नहीं था। इसका एक कारण तो यह हो सकता है कि बाबर से विरासत में मिली हुई उदार भावना और दूसरा उसकी पटरानी हमीदा बानू बेगम शिया थी और विश्वास पात्र सेवक बैराम खां भी शिया ही था। जब वह फारस में था तो राजनैतिक लाभ के लिये शियामत के रीति रिवाजों को भी मानता रहा। यद्यपि उसने परिस्थितिवश ही शियामत ग्रहण किया था क्योंकि फारस का कट्टर शियामतावलम्बी शाहतहमस्प हुमायूं को शियामत में दीक्षित करने के लिये उत्सुक था और यदि हुमायूं इसके लिये तैयार नहीं होता तो उसे बल प्रयोग द्वारा ऐसा करने के लिये बाध्य किये जाने की छिपी हुई धमकी दी गई थी।

१० - एस.आर. शर्मा - हिन्दी अनुवादक - मथुरालाल शर्मा - भारत में मुगल साम्राज्य - पृष्ठ ३६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वह नमाज और वजू यथा समय करता था और वजू करने से पहले कभी भी खुदा का नाम अपने मुंह से उच्चारण नहीं करता था।[11] एक बार उसने अपने प्रधान न्यायाधीश या सदर मीर अबुल हय को केवल अब्दुल के नाम से पुकारा। परन्तु जब उसने वजु कर ली तो उससे क्षमा चाही और कहा कि उसके नाम में हय शब्द खुदा का द्योतक है। इस लिये वह वजू करने से पहले इस शब्द का उच्चारण नहीं कर सकता था।

जहां तक हिन्दुओं के साथ हुमायूं के व्यवहार की बात है उसका अपने युग की परिस्थितियों के ऊपर उठना कठिन था यद्यपि उन दिनों की प्रचलित रीति नीति के विरुद्ध उसने इस्लाम के काफिरों पर अत्याचार करने से इन्कार कर दिया फिर भी वह इसी नीति का पूरी तरह से पालन न कर सका। कल्पित गोपाल पत्र (जिसका वर्णन पिछले पृष्ठों में किया गया है) में वर्णित हिन्दुओं को धार्मिक स्वतंत्रता देने तथा गोहत्या पर रोक लगाने की तथा कथित आज्ञाओं के होते हुए भी हुमायूं ने अपनी बहुसंख्यक हिन्दू प्रजा के धर्म - कर्म में उसी तरह छेड़ छाड़ की जिस तरह मुगलों के पहले मुसलमान सुल्तान करते थे। कालिंजर में उसने हिन्दुओं के मंदिर तोड़े। उनके धार्मिक विचार विश्वासों पर चोट पहुंचाने से भी वह नहीं चुका।[12] वह अपने धर्मावलम्बियों का बहुत ही पक्षपात करता था यद्यपि उसकी यह नीति सदैव हानिकर सिद्ध हुई फिर भी यदि विपक्षी हिन्दुओं से युद्ध करते समय उनकी ओर के किसी मुसलमान सैनिक से उसका सामना हो जाता था तो वह उस पर वार नहीं करता था। इस बात का प्रमाण हमें उस समय मिलता है जिस समय बहादुर शाह (गुजरात के शासक) ने चित्तौड़ पर आक्रमण

- -

११ - फरिश्ता - ब्रिग्ज - भाग २ पृष्ठ १७८

१२ - ए.एल. श्रीवास्तव - मुगल कालीन भारत पृष्ठ ८२.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना उचित नहीं समझा क्योंकि ऐसा करके वह अपयश लेना नहीं चाहता था । जब कि उसका एक भाई धर्म युद्ध करके काफिरों को हरा रहा था । फिर भी वह कोई निर्मम प्रताड़क नहीं था और न हिन्दू धर्म को नष्ट करने की कोई सुनिश्चित नीति ही उसने अपनाई । एल्फिंस्टन ने कहा है " स्वभाव से न वह चालाक था, न निर्दयी । यदि वह यूरोप में एक संतुलित सम्राट होता तो सम्भवत: वह चार्ल्स द्वितीय से अधिक क्रूर या रक्त पिपासु नहीं होता । "

इस तरह हम देखते है कि बाबर व हुमायूं की धार्मिक नीति दिल्ली सलतनत के सुल्तानों की अपेक्षा उदार थी ।

-0- -0- -0-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकबर का व्यक्तित्व

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकबर का व्यक्तित्व

अमीर तैमूर ने भारत वर्ष को तलवार के जोर से जीता था। पर वह एक बादल था कि आया, गरजा, बरसा और देखते देखते चुक गया। बाबर उसके पड़पोते का पोता था जो उसके सवा सौ वर्ष बाद हुआ था। उसने साम्राज्य की स्थापना आरम्भ की थी, पर इसी प्रयत्न में उसका देहान्त हो गया। उसके पुत्र हुमांयू ने साम्राज्य प्रसाद की नींव डाली और कुछ ईंटें भी रखीं, पर शेरशाह के प्रताप ने उसे दम न लेने दिया। अन्तिम अवस्था में जब फिर उसकी ओर प्रताप रूपी वायु का झोंका आया, तब आयु ने उसका साथ न दिया। अन्त में सन् - १५५६ ई० में प्रताप शाली अकबर ने राज्यारोहण किया। तेरह बरस के लड़के की क्या बिसात, पर ईश्वर की महिमा देखो कि उसने साम्राज्य प्रासाद को इतनी ऊंचाई तक पहुंचाया और नींव को ऐसा दृढ़ किया कि पीढ़ियों तक वह न हिली। वह लिखना पढ़ना नहीं जानता था, पर फिर भी अपनी कीर्ति के लेख ऐसी कलम से लिख गया कि काल कक उन्हें घिस घिस कर मिटाता है, पर वे जितना घिसते हैं उतना ही चमकते जाते हैं। उसकी गणना विश्व के शक्ति शाली व महानतम शासकों में की जाती है। उसके व्यक्तित्व के विषय में उसके समकालीन इतिहास-कारों ने प्रकाश डाला है। पुर्तगाली ईसाई शिष्ट मण्डल के पादरी मांसरेट और अकबर के पुत्र जहांगीर ने अकबर के व्यक्तित्व का विस्तृत वर्णन किया है।

According to father Monserrate : He was in face and stature fit for the dignity of king, so that any body, even at the first glance, would easily recognise

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

him as the king. His shoulders were broad, and his legs slightly bandy, and adapted to riding. His Complexion was fair, but slightly suffused with a darker tint. He carried his head slightly inclimed to one side, towards the right shoulders, his frow was broad and open, and his eyes sparkled as does the sea when lighted by the Sun. His eyelids were heavy as are those of the Sarmatiions, the chinese, the Niphonians and nearly all asiatics of the northern regions. His eyebrows were narrow, and his nose was middle size and dropping, but had a night bridge. His nostrials were excparded as though he were enraged, and on the left one he had a wrat, which met the upper lip. He shaved his beard, but not his moustache, following the custom of young Turks before they assume the full costume of manhood, who, after they have taken the virile toga, cherish and arrange their beards, Unlike his foregathers he did not shave his head, nor did he wear a cap, but bound his hair with a turban, which, they say he did in imitation of the Indian custom, in order to conciliate them. He dragged his left leg slightly, as through he were lame in it, though he had not been injured in the foot. He has in his body, which is very well made, and neither thim and meagre nor fat and gross much courage and strength. When he laughs he is distorted, but when he is tranguil and serene he has

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

a noble mien and great dignity. In his wrath he is majestic." १"

जहांगीर ने लिखा है कि" उसका शरीराकार मध्यम था परन्तु कुछ लम्बा प्रतीत होता था । उसका गेहुंआ रंग था, उसकी आंखे व भौंहे काली थीं और उसका रंग रूप साफ होने की अपेक्षा कुछ सांवला था, उसका शरीर सिंह के समान था, छाती चौड़ी थी, उसके हाथ तथा भुजाएँ लम्बी थीं । उसके नाक की बाईं ओर एक मसा था, जो देखने में बड़ा अच्छा मालूम होता था तथा इसका आकार आधे मटर के बराबर था, कुछ व्यक्ति जो मुख लक्षण विद्या के ज्ञाता थे, इस मसे को समृद्धता तथा भाग्यशाली होने का प्रतीक बताते थे । उसकी तेजस्वी आवाज बहुत ही प्रभाव शाली थी । बोलने तथा व्याख्यान करने में वह बहुत ही प्रवीण था । अपने कार्यों तथा स्वभाव में संसारी जीव नही था, वरन उसमें ईश्वरीय प्रकाश विद्यमान था । " २

उपरोक्त तर्कों के आधार पर हम कह सकते हैं कि अकबर का व्यक्तित्व आकर्षक था । वह घुटनों तक नीचा रेशमी अंगरखा पहनता था । जो कि स्वर्ण सूत्रों की बुनाई तथा फूल पत्तियों के आकर्षक कशीदों से सुशोभित रहता था और एक बड़े फीते द्वारा वह उसे बांधता था । उसका पायजामा एड़ी तक पहुंचता था और उसमें मोती लगे रहते थे । मोती के गुच्छे से वह पायजामें को बांधता था । उसके जूते भी अनूठे और अपने ही ढंग के होते थे । वह आकर्षक पगड़ी बांधता था । उसकी पगड़ी बहुमूल्य मोतियों और रत्नों से सुशोभित रहती थी । पगड़ी बांधने के ढंग में हिन्दू और मुसलमान दोनों प्रणाली का सम्मिश्रण रहता था । वह पारसियों जैसी वेशभूषा भी पहनता था ।

1- Sir Wolsehey Haig : The Cambridge History of India Vol. IV P. 155

2- Tuzuk-i-Jahangiri- Vol. I P. 34

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

According to V.A. Smith : He is said to have worn the sacred shirt and girdle which every Parsee must wear under his Clothes. " 3

अकबर स्वल्पाहारी था और सामान्यत: एक ही बार भरपेट भोजन करता था, वह भी प्राय: मध्यान्ह में । प्रीतिभोजों या दावतों को छोड़कर अकबर प्राय: अकेले में ही भोजन करता था । बाल्याकाल में ही उसे आमिष भोजन में ही अभिरुचि नहीं थी । ज्यों - ज्यों उसकी आयु बढ़ती गई वह आमिष भोजन के प्रति उदासीन होता गया । जीवन के उत्तर काल में तो वह पूर्णत: निरामिष हो गया था । वह कहता था कि -" यह उचित नहीं कि एक आदमी अपने पेट को पशुओं की कब्र बनाये ।" ४ हो सकता है कि यह हिन्दुओं और जैनियों के प्रभाव से हुआ हो लेकिन उसे आमिष भोजन के प्रति शुरू से ही रुचि न थी । उसने स्वयं कहा कि" मुझे अपनी छोटी उम्र से ही मांसाहार नीरस लगता है । जब कभी मैं आज्ञा देकर मांस बनवाता था तब भी उसको खाने की बहुत ही कम परवाह करता था । इसी स्वभाव से मेरी दृष्टि पशु रक्षा की ओर गई और मैंने पीछे से मांसाहार का सर्वथा त्याग कर दिया ।" ५

अकबर के इन विचारों से पता चलता है कि उसे आमिष भोजन से घोर घृणा थी । ऐसा माना जाता है कि अकबर ने अपनी हिन्दू रानियों के प्रभाव से भोजन में मांस, लहसुन व प्याज भी त्याग दिया था । अपनी तरुणावस्था में वह मद्यपान करता था । १५८० में ताड़ी

3- Smith : Akbar the great Mogul P. 163.

4- Ain-i-Akbari Vol. III Translated in to English by H.S.Jarrett P. 443.

5- Ain-i-Akbari Vol. III Translated in to English by H.S.Jarrett P. 446.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के प्रति रुचि उत्पन्न हुई और वह ताड़ी पीने लगा पर प्रौढ़ावस्था में ताड़ी पीना छोड़ दिया । अकबर अफीम के निद्राकारी निर्णञ्जन को ब पसंद करता था, अफीम की बनी हुई कई चीजे खाता था परन्तु प्रौढ़ावस्था में उसने मद्यपान त्याग दिया । यद्यपि अकबर के समय में तम्बाकू और हुक्के का प्रचार व्यापक रूप से हो गया था पर वह स्वयं तम्बाकू नहीं पीता था । अकबेरफलों का शौकीन था । Jahangir says: Akbar had a great liking for fruit, especially grapes, melons and pomegranates, and was in the habit of eating it whenever he indulged in either wine or opium. "6

अकबर विनोदी स्वभाव का प्रसन्नचित्त वाला व्यक्ति था । मधुरवचन बोलना उसका स्वभाव था । अहंकार तथा दम्भ से उसे घृणा थी । वह एक मिलन सार नरेश था और छोड़े बड़े सभी व्यक्तियों से मिलता था । वह अपने सद्व्यवहार और मधुर स्वभाव के कारण अपने अमीरों, सामन्तों, दरबारियोंतथा प्रजाजनों में अत्यन्त लोकप्रिय था । इस विशेषता के कारण सभी उसके प्रति श्रद्धा रखते थे । उसके व्यक्तित्व में एक खास गुण यह था कि वह अपना काम मीठा बन कर निकालने का ही प्रयत्न करता था । वह मानता था कि अगर मीठी दवा से रोग मिटता हो तो कड़वी दवा का उपयोग नहीं करना चाहिये । इसी नीति के व्दारा उसने अनेक राज्यों और वीरों को अपने अधीन कर लिया था । उसका व्यवहार उच्च कोटि का था और वह सदा न्याय का पक्ष ग्रहण करता था ।

6- Tuzuk-i-Jahangir Translated by Rogers and Beveridge Vol. I P. 270- 350.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

He said, If I were guilty of an unjust act; I would rise in judgement against my self. " 7.

यद्यपि अकबर की क्रोधाग्नि शीघ्र ही शान्त हो जाती थी, लेकिन उसका क्रोध होता बहुत भयंकर था और क्रोधावेश में वह भयंकर दण्ड दे बैठता था। क्रोधावेश में उसने अपने धायभाई आधम ख़ाँ को किले की - दीवार से गिरवा कर मरवा दिया था, मामा मुअज्जम को कठोर दण्ड दिया था तथा राजमहल के एक मशालची को, जो सो गया था, दुर्ग की दीवार से फिंकवा कर वध करवा दिया था। परन्तु अकबर का ऐसा क्रोध अल्पकालीक ही होता था। सामान्यत: वह पूर्ण आत्म नियंत्रण बरतता था। पराजित शत्रु के प्रति वह मानवोचित उदार व्यवहार करता था - परन्तु विरोधियों के प्रति उतना ही कठोर हो जाया करता था। विदेशी राजकुमारों, विदेशियों, विदेशों से उसके संरक्षण में आये राजकुमारों के प्रति वह अधिक शिष्टता, नम्रता और उदारता का व्यवहार करता था।

अकबर को विभिन्न प्रकार के आमोद - प्रमोद और आखेट में रुचि थी। वह जंगल में भयंकर से भयंकर शेरों, चीतों तथा हाथियों का शिकार करता था। वह स्वयं अचूक निशाने बाज, अद्भुत लक्ष्य भेदी और चतुर शिकारी था। वह प्रवीण अश्वारोही था और क्रूर से क्रूर हाथियों को वश में कर लेने की उसमें अपूर्व क्षमता थी। घुड़सवारी में उसकी रुचि थी तथा घोड़े की पीठ पर बैठ कर वह प्राय: दिन में पचास - साठ किलो मीटर दूर की यात्रा कर लेता था। उसे घूंसेबाजी, मल्लयुद्ध तथा पहलवानों की कुश्तियां देखने की भी रुचि थी। कभी कभी वह वर्ग - संघर्ष में भी रुचि लेता था। हो सकता है कि इस प्रकार के संघर्ष देखने की उसमें तुर्की और मंगोल परम्परा रही हो। चौगान खेलने, संगीत सुनने, पोलो खेल देखने, विदूषकों के काम तथा बाजीगरों के करतब एवं मदारियों के

7 - Ain-i-Akbari Vol. III Trans. by H.S.Jarrett P.434

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तमाशे देखने का भी उसे शौक था । नगाड़ा बजाने में वह दक्ष था । खेलों में उसे इतनी अधिक रुचि थी कि कभी- कभी तो वह रात्रि में प्रकाश करवा कर खेल करवाता था । उसने अपने अस्तबल में कई सहस्त्र ऊंटों - घोड़ों और हाथियों को पाल रखा था । इन विभिन्न प्रकार के आमोद - प्रमोद, आखेट, खेल - तमाशे तथा पशु पालन में रुचि रखने पर भी अकबर इनमें इतना लिप्त नहीं रहता था कि वह अपने प्रशासन और राज-काज को भूल ही जाये । इन प्रदर्शनों, पशु - युद्धों, खेल - तमाशों आदि के बीच भी अकबर अपनी समस्याओं पर मनन और चिन्तन करता रहता था ।

अकबर का दैनिक जीवन बड़ा ही संयमित था । उसकी आदतें सीधी - साधी, संयमित और गौरव शाली तथा गम्भीर थीं । वह बहुत कम सोता था । जहांगीर ने लिखा है" वे रात भर जगा करते थे, दिन में कम सोते थे । दिन और रात में मिला कर डेढ़ पहर से अधिक नहीं सोया करते थे । वे रात्रि जागरण को अपनी आयु की वृद्धि के समान मानते थे ।" ८ इसी प्रकार स्मिथ ने भी लिखा है कि - He slept little and lightly, seldom more than three hours in the night time. The hours which he kept must have been dreadfully trying to the Court. " 9

समय का सदुपयोग वह बड़ी सावधानी से करता था और दिन में राजकार्य और राजसभा में व्यस्त रहता था । वह अपना समय दार्शनिकों, विद्वानों और धर्माचार्यों के सत्संग में व्यतीत करता था । अनेक बार वह एकान्त में बैठकर आध्यात्मिक समस्याओं पर चिन्तन और मनन भी किया करता

- -

8- एस. आर. शर्मा हिन्दी अनुवादक मथुरालाल शर्मा - भारत में मुगल साम्राज्य - पृष्ठ - २८३.

9- Smith : Akbar the great Mogul. P. 340.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

था। अबुलफजल लिखता है कि " सम्राट में इतनी अच्छी आदतें हैं कि मैं उनका पूर्ण रूप से वर्णन नहीं कर सकता। यदि मैं इस विषय पर - कोषों की भी रचना करूं तो भी वह सम्पूर्ण नहीं होगा।" १०

अकबर की साक्षरता के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं। यद्यपि वह अपने पिता हुमायूं और पितामह बाबर की तुलना में सुशिक्षित और विद्वान तो नहीं था किन्तु पूर्णतया निरंकुश भी नहीं था। उसके पिता हुमायूं का अधिकांश समय अपने भाइयों के विरुद्ध सैनिक अभियानों और युद्धों में तथा निर्वासन के संकटों में व्यतीत हुआ था। इस लिये वह अकबर की शिक्षा की समुचित व्यवस्था न कर सका। फिर भी काबुल पर आधिपत्य स्थापित करने के बाद उसने अकबर की शिक्षा के लिये विद्वान मौलवी नियुक्त किये। परन्तु अकबर का मन पढ़ने - लिखने में नहीं लगता था। उसने अपना बाल्याकाल खेलों, शिकार और घुड़दौड़ में व्यतीत कर दिया। अतएव वह पूर्ण रूपेण साक्षर एवं विद्वान न बन सका। श्री एन.एल. लॉ - लिखते हैं कि - अकबर पूर्ण रूपेन निरक्षर नहीं था। यदि वह लिख नहीं सकता था तो कम से कम पढ़ तो अवश्य ही लेता था। - ११ इसके विपरीत कुछ विद्वानों का मत है कि अकबर निरक्षर था वे उसकी साक्षरता में संदेह करते हैं जैसा कि अबुल फजल ने लिखा है - उसके पवित्र हृदय एवं पुण्यात्मा की अभिरुचि कभी भी बाहरी पढ़ने लिखने की ओर नहीं झुकी। साक्षरता के प्रति उदासीन रहने पर भी उसका उत्कृष्ट ज्ञान मानों समस्त मानवता के लिये इस बात का द्योतक था कि सम्राट को ज्ञान कोष और समस्त

- -

10-Ani-i-Akbari- Vol. I Trans. by H.Blochmann, Second edition P. 165.

11 - N.L. Law : Promotion of learning in India during Mohommedan Rule P.P.139-43.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विषयों की अनुपम सूझ पढ़ने से नहीं प्राप्त हुई बल्कि यह सब उसके लिये ईश्वरदत्त वरदान था जिसके विकास में मानवीय श्रम का कोई स्थान नहीं था।" १२ इसी प्रकार जहांगीर लिखता है कि यद्यपि उसका पिता निरक्षर था तथापि उसे ज्ञान क्षेत्र विभिन्न स्थलों से इतना गूढ़ परिचय प्राप्त था तथा किसी विषय की विवेचना करने में वह इतना प्रवीण था कि किसी भी मनुष्य के लिये उसका निरक्षर आभास होना एक कल्पनातीत बात थी। इन साक्षात असुविधाओं के होते हुए भी वह अज्ञानी न था। According to Sir Wolseley Haig : In spite of his illiteracy he was far from being unlearned nor was his intellect uncultivated, for a he delighted in - listening to the reading of works on history, theology Philosophy and other subjects and of discussing afterwards what had been read and his memory was such that he acquired through the ear a stock of learning as great as that which most of his associates could acquire through the eye." 13.

अत: हम अकबर को अशिक्षित कह सकते हैं लेकिन अज्ञानी नहीं। यहां यह विशेष उल्लेखनीय है कि अशिक्षित होने पर भी अकबर में हीनता की भावना नहीं थी। वह कहा करता था कि -" सभी पैगम्बर अशिक्षित व्यक्ति थे। इस लिये मुसलमानों को अपने पुत्रों में से एक को इस दशा में रखना ही चाहिये।" १४ दैनिक व्यवहार में वह अशिक्षित

12- Ain-i-Akbari Vol. I P. 589

13- The Cambridge History of India Vol. IV P. 154.

14 - Ain-i-Akbari Trans. by H.S. Jarrett Vol.III P.432

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतीत नहीं होता था ।

यद्यपि अकबर न तो पूर्ण रूप से साक्षर था और न विद्वान ही, परन्तु उसमें जीवन का व्यावहारिक ज्ञान अत्यधिक था । औपचारिक - निरक्षरता से उसे जरा भी कठिनाई न हुई । वह कुशाग्र बुद्धि वाला सम्राट था । उसकी स्मरण शक्ति इतनी विलक्षण व अलौकिक थी, जिससे उसे पढ़ कर सुनायी गयी पुस्तकों की अंतर्वस्तु, विभागीय मामलों के विवरण यहां तक कि सैकड़ों व्यक्तियों, चिड़ियों, घोड़ों व हाथियों के नाम स्मरण रहते थे । वह जो कुछ सुनता था या जो कुछ उसे विभिन्न ग्रन्थों से पढ़ कर सुनाया जाता था सभी उसे याद हो जाता था । Smith says, Akbar was intimately acquainted with the works of many Muhammadan historians and theologians, as well as with a considerable amount of general Asiatic literature, especially the writings of Sufi or mysticpoets. अत: अकबर दर्शन शास्त्र, धर्मशास्त्र और अध्यात्मवाद के विभिन्न गूढ़ - रहस्यों पर अच्छी तरह वार्तालाप और वाद विवाद कर सकता था । तर्क करने में वह बड़े विद्वानों को भी परास्त कर देता था । विज्ञ समी- तियों में वह जिस वाक् पटुता का परिचय देता था उसे सुन कर कोई यह अनुमान भी न लगा सकता था कि वह व्यक्ति निरक्षर होगा । किसी भी विषय पर वह अपना मत कुशलता, स्पष्टता और सरलता से व्यक्त करता था । ज्ञान, प्रतिभा और मानसिक शक्तियों में वह श्रेष्ठ था तथा उसमें उच्च कोटि की प्रयोगात्मक बुद्धि थी । अपने उच्च आदर्शों को वह कार्य रूप में परिणत करता था और अपने आदर्शों की उपयोगिता का परिचय देता था ।

15- Smith : Akbar the great Mogul P. 338.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकबर गुणग्राही सम्राट था । वह विद्यानुरागी और साहित्य प्रेमी बादशाह था । पुस्तकों के प्रति उसे असीम प्रेम था । उसने एक विशाल सुसज्जित पुस्तकालय बनवाया जिसमें विद्वानों व्दारा लिखे गये चौबीस हजार हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रहित किये । विद्वान लोग इस पुस्तकालय की श्रेष्ठ पुस्तकों को पढ़ कर अकबर को सुनाते थे । इससे अकबर ने अपनी तीव्र स्मरण शक्ति के कारण साहित्य, दर्शन, राजनीति, इतिहास, धर्मशास्त्र आदि का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था । चित्रकला में तो उसे तरुणावस्था से ही रुचि थी । चित्रकला विभाग का वह स्वयं निरीक्षण करता था । साक्षर न होने पर भी उसे सुलेखन कला में रुचि थी । बाल्यावस्था से ही उसे संगीत से प्रेम था । अबुल फजल के अनुसार" वह संगीत की ओर बहुत ध्यान देता था तथा जो व्यक्ति इस सुन्दर कला को - सीखता था अथवा जानता था अकबर उन सब को सहायता प्रदान करता था ।" १६

अकबर एक आज्ञाकारी पुत्र, अनुग्रह शील भाई एवं पिता तथा अनुरागशील पति था । अपने परिवार के सदस्यों और सम्बन्धियों के प्रति वह अत्यन्त उदार, दयालु, तथा स्नेह पूर्ण व्यवहार करता था । वह बहुधा इस बात पर शोक प्रकट करता था कि उसके पिता का इतनी शीघ्र स्वर्गवास हो गया कि वह उनकी कोई सेवा न कर सका । अपने उदार, सरल और स्नेही स्वभाव के कारण वह अपने परिवार वालों का बड़ा लाड़ला था । अपनी माता का वह शान शौकत से स्वागत करता था और सम्मान के लिये राजमहल से कई किलो मीटर आगे बढ़कर भेंट और स्वागत करता था । पर अपनी माता, राजमहल की अन्य बेगमों व गुलबदन के प्रति विशेष प्रेम होने पर भी वह उन्हें प्रशासन और राजनीति में हस्तक्षेप नहीं करने देता था । अकबर ने अपनी धायमाताओं व धाय भाइयों के

16- Ain-i-Akbari, Vol. I, P. 115.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के प्रति खूब सम्मान रखा। माहम अनगा के जनाजे के साथ वह दूर तक चला और जीजी अनगा के जनाजे को कन्धा भी दिया। धाय बन्धु अजीज कोका के प्रति उदारता प्रकट की तो सौतेले भाई मिर्जा हाकिम के विद्रोह करने पर भी उसे परास्त कर क्षमा कर दिया। उसका कहना था कि हाकिम उसके पिता की स्मृति है। अपने पुत्र - पुत्रियों के प्रति भी अकबर बहुत अधिक स्नेह रखता था। सलीम का अनुचित व्यवहार भी अकबर के पितृ स्नेह और कृपा को कम न कर सका। अनेक बार विद्रोह करने पर भी अन्त में उसने सलीम को क्षमा ही कर दिया। संक्षेप में हम कह सकते है कि अपने परिवार के सभी सदस्यों के प्रति उसका बड़ा स्नेह और सद्-व्यवहार था। बच्चों को तो वह बहुत ही प्यार करता था। "Akbar said, children are the young salpings in the garden of life. To love them is to turn our minds to the Bountiful creator " 17.

अकबर अपने पारिवारिक सदस्यों के अलावा अपने मित्रों, साथियों और सहयोगियों के प्रति भी अत्यन्त मैत्री एवं स्नेह पूर्ण सम्बन्ध रखता था बीरबल, टोडरमल, फैजी और अबुल फजल के साथ तो उसका व्यवहार अत्यन्त मैत्री पूर्ण और सहृदयता का था। बीरबल की मृत्यु पर तो उसने दोनों दिन और दो रातों तक कुछ भी खाया - पिया नहीं। उसे इस बात का अत्यन्त दुख था कि युद्ध के बाद भी उसे बीरबल का शव न प्राप्त हो सका। और हिन्दू परम्पराओं के अनुसार वह उसकी दाह क्रिया न कर सका। इसी प्रकार अपने अनन्य मित्र अबुल फजल के देहावसान की शोक वेला में वह फूट फूट कर रोया, उसे इतनी अधिक मार्मिक वेदना हुई कि

---

17 - Ain-i-Akbari Vol. III Trans. by H.S.Jarrett P- 431.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उसने तीन दिन तक कुछ भी न खाया पीया । अपने राजपूत सम्बन्धियों, सहयोगियों और मित्रों के प्रति भी अकबर उदार और स्नेही था ।

अकबर तर्क और विवेक में विश्वास करता था । वह बुद्धिहीन, नकल या अनुकरण को बुरा मानता था । He said : If imitation were commendable the prophets would have followed their predecessors."18

वह बुद्धि और विवेक में अधिक आस्था रखता था और चाहता था कि लोग बुद्धि, विवेक और तर्क के अनुसार ही कार्य करें । वह धार्मिक और लौकिक बातों को अपनी बुद्धि व विवेक के अनुसार उनके गुणों के आधार पर ही अंगीकार करता था । परन्तु अकबर की इस बुद्धिवादिता के साथ उसका अन्ध विश्वास भी जुड़ा हुआ था । अनेक बार वह अन्ध विश्वासी हो जाता था । शुभ और अशुभ दिनों और शकुनों में,ज्योतिष और भविष्य वाणीयों में, चमत्कार और फूंका फांकी में वह विश्वास करता था अनेक युवतियां अपने शिशुओं को निरोग करने के लिये या बच्चा होने के लिये उसकी मनौती मानती थी । और यदि ऐसा हो जाता था तो वह उसके लिये चढ़ावे लाती थी । अबुल फजल लिखता है कि -"" - शाश्वत सुख, प्रामाणिक हृदय, अच्छे आचरण की सलाह, शारीरिक बल सुसंस्कार पुत्र प्राप्ति, मित्रों का पुन: समागम, दीर्घायु, धन सम्पत्ति और उच्च पदवी आदि अन्यान्य अनेक मुरादें लेकर झुन्ड के झुन्ड मनुष्य सम्राट अकबर के पास आते थे । सम्राट श्रेय का जानने वाला था, इस लिये वह हर एक को सन्तोष प्रद उत्तर देता था । और उनकी धार्मिक समस्याओं को हल करने की योजनायें गढ़ता था । ऐसा एक भी दिन नहीं बीतता था जिस दिन लोग अकबर के पास से मंत्रोच्चारण द्वारा पानी के कटोरे पवित्र करवाने के लिये न आते हो ।"" १९ इस प्रकार अकबर में बुद्धिवादिता

- -

18 - Ain-i-Akbari Vol. III Trans. by H.S. Jarrett P.427

19 - Ain-i-Akbari Vol. I Trans. by H.Blochmann P.164.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और अन्ध विश्वास का अनूठा सम्मिश्रण था ।

अकबर अपने युग का अत्यन्त महत्वाकांक्षी सम्राट था । According to Smith : The ruling passion of Akbar was ambition. His whole reign was dedicated to conquest. "20 वह कहा करता था कि प्रत्येक सम्राट को युद्ध के लिये तैयार रहना चाहिये और सेना को निरन्तर युद्ध कला का प्रशिक्षण देना चाहिये । युग की परम्पराओं के अनुरूप वह निरंकुश व स्वेच्छाचारी सम्राट था लेकिन फिर भी वह प्रजावत्सल सम्राट था । वह रात दिन प्रजा - हित के कार्यों में व्यस्त रहता था । यद्यपि वह मुसलमान कुल में जन्मा था तथापि उसके हृदय में दया के भाव अधिक थे । प्रजा के प्रति राजा के क्या कर्तव्य है यह वह भली प्रकार जानता था । पानी की तंगी के कारण फतेहपुर सीकरी में बंधाया हुआ तालाब जिसके चिन्ह अब भी मौजूद है उसकी दयालुता की साक्षी दे रहे हैं । उसने हिन्दू, मुसलमान, जाति और सम्प्रदाय के भेद भाव को मिटा कर सब को समान समझा । यही कारण था कि उसने घृणित तीर्थ यात्रा कर व जजिया कर हटा दिये । उसने प्रजावत्सल सम्राट के रूप में तात्कालीक परिस्थितियों के प्रतिकूल तथा समाज के लिये घातक सिद्धान्तों एवं रीति - रिवाजों को चाहे वे धर्मानुमोदित ही - क्यों न हो, हटा दिया । वह साधारण प्रजाजनों के साथ सहानुभूति रखता था तथा उनकी प्रार्थनाओं एवं शिकायतों को अनुग्रह पूर्वक सुनता था । यहां यह भी उल्लेखनीय है कि वह प्राय:प्रति दिन एक ऐसा अवसर देता था जब प्रजाजन, अमीर या सामान्त उससे भेंट और बातचीत कर सकें । उसका कहना था कि - यह मेरा कर्तव्य है कि सब व्यक्तियों के प्रति अच्छा व्यवहार किया जावे -" २१ इन्हीं बातों से वह अपनी प्रजा में अधिक लोक प्रिय हो गया था । लेकिन कानून, शान्ति और प्रशासकीय

20- Smith - Akbar the Great Mogul. P. 346.

21 - Ain-i-Akbari Trans. by H.S. Jarrett Vol. III P.430

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यवस्था के लिये अपराधी को दण्ड देना आवश्यक समझता था और बिना किसी भेद भाव के दण्ड देता था । सप्ताह में दो दिन वह राज्य के सर्वोच्च न्यायाधीश के रूप में दरबार में बैठकर अपने सामने प्रस्तुत होने वाले या नीचे के न्यायालयों से अपील के लिये आने वाले मुकदमों को सुनता था । अकबर की बुद्धि इतनी तीक्ष्ण थी और मानव प्रकृति का उसे इतना अधिक ज्ञान था कि जब वह स्वयं न्याय करता था तो संक्षिप्त प्रणाली अपनाता था । उसकी निष्पक्ष न्याय प्रियता के बारे में अबुल फजल - लिखता है -" सम्राट अपने न्यायालय में सम्बन्धी और अपरिचित में, अमीरों के प्रमुख और भिखारी में कोई भेद - भाव नहीं रखता है ।" २२

जिस समय अकबर का राज्याभिषेक हुआ था उस समय वह नाम मात्र का बादशाह था उसके पास कोई स्थायी राज्य नहीं था । दिल्ली और आगरा उसके अधिकार से निकल चुके थे और उन पर हेमू का आधिपत्य था । राज्यारोहण के समय वह पंजाब के कुछ भागों का ही बादशाह था और वहां भी उसका प्रतिद्वंदी और दिल्ली के सिंहासन का दावेदार सिकन्दर शाह सूर उसके वंश और राज्य को समूल नष्ट करने को तत्पर था । परन्तु अपनी निरन्तर विजयों से अकबर ने एक शक्तिशाली विशाल और दृढ राज्य स्थापित कर लिया था उसकी मृत्यु से पूर्व इस साम्राज्य में उत्तर में काश्मीर से लेकर दक्षिण भारत में खानदेश और अहमदनगर के प्रदेश और पूर्व में बंगाल से लेकर पश्चिम में गुजरात तक के प्रान्त सम्मिलित थे । उसका कथन था कि" साम्राट को विजय के लिये सदैव तत्पर रहना चाहिये, अन्यथा उसके पड़ोसी उसके विरुद्ध शस्त्र उठा लेंगे । सेना को रण शिक्षा मिलती ही रहनी चाहिये, ताकि प्रशिक्षण के अभाव में वह विलासी न हो जाये ।" २३

22- Akbarnama : Trans. by H.Beveridge Vol.III P. 387

23 - Ain-i-Akbari Vol. III Trans. by H.S.Jarrett.P.451.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उसके व्यक्तित्व का एक महत्व पूर्ण अंग उसकी धार्मिक उदारता थी । मध्य युग की धर्मान्धता, संकीर्णता, कट्टरता, दुराग्रहों अनिष्ट कारी रुढियों और राष्ट्र विरोधी परम्पराओं से वह ऊपर उठ गया था उसने अपने शासन काल के प्रारम्भ में ही यह अनुभव कर लिया था कि उसके स्थायी और दृढ शासन के लिये भारत के सभी सम्प्रदायों, जातियों और वर्गों का तथा मुसलमानों और गैर मुसलमानों का सहयोग, सद्भावना, समर्थन और राज भक्ति प्राप्त करना आवश्यक है । इसी लिये उसने सभी धर्मों, सम्प्रदायों और वर्गों के प्रति उदारता, दया और सहानुभूति व समानता की नीति बरती । उसने गैर मुसलमानों पर होने वाले शासकीय अत्याचारों और घातक नीति के विरुद्ध कदम उठाये तथा शासन व राज्य द्वारा इस्लाम का प्रचार बन्द करवा दिया तथा हिन्दुओं पर लगे धार्मिक नियंत्रण तोड़ दिये । युद्ध बन्दियों को मुसलमान बनाना निषिद्ध कर - दिया । उसने सब धर्मों के प्रति सुलह - ए - कुल अथवा सहन शीलता की नीति अपनाई । सत्य तो यह है कि अकबर के धार्मिक विचार अत्यधिक व्यापक थे और उसका धार्मिक दृष्टि कोण बहुत ही विशाल था । वह सभी धर्मावलम्बियों के प्रति इतना अधिक सहिष्णु, कृपालु, विनय शील, उदार निष्पक्ष और मैत्री पूर्ण था कि प्रत्येक मतावलम्बी उसे अपने ही मत का अनुयायी समझता था । दीन दुखियों की सेवा करना और उनके दुखों को दूर करने का प्रयत्न करना वह अपना कर्तव्य समझता था । अपनी प्रजा को चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान सताना पाप समझता था ।

उपरोक्त गुणों के होते हुए भी अकबर का व्यक्तित्व दोषों से मुक्त न था । अन्य मध्य कालीन सम्राटों के समान ही वह भोग विलासी था । उसने मुसलिम शासको की पुत्रियों और राजपूत कन्यायाओं से विवाह किये थे । वह स्वयम् बहु पत्नित्व में विश्वास करता था । यद्यपि सम्राट मनसा अथवा कर्मणा निपट व्यभिचारी, व्यसनी और भोगासक्त भी नहीं कहा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जा सकता फिर भी अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में स्त्रियों के विषय में उसने अवश्य कुछ स्वतंत्रता से काम लिया और उसके अन्त: पुर में स्त्रियों की संख्या पांच हजार थी। स्त्रि सम्बन्धित और सेविकाओं की संख्या इसमें से घटा देने पर भी उसकी बेगमों की संख्या कुछ कम न रही होगी। मि० ई० वी० हैवेल का कथन है कि उसके बहुत सी स्त्रियां थीं। वह तो यहां तक लिखता है कि " मुगलों की दन्तकथाओं के अनुसार बादशाह यदि किसी भी विवाहित स्त्रि पर मुग्ध हो जाता था तो उसके पति को मजबूरन तलाक देकर अपनी स्त्रि बादशाह के लिये छोड़ देनी पड़ती थी" 24 कहा जाता है कि वह सुन्दर लावण्यमयी ललनाओं की प्राप्ति के लिये राजमहल में प्रति सप्ताह मीना बाजार का आयोजन करता था, जिसमें केवल महिलाएँ ही भाग ले सकती थीं। बीकानेर में पृथवीराज राठौर की पत्नि से सम्बन्धित किंवदंतियां भी हैं, जिसमें उसने अपने सतीत्व और मान रक्षा के लिये कटार निकाली थीं। परन्तु अभी तक ऐसे कोई - लिखित प्रमाण उपलब्ध नहीं हुए हैं जिससे स्त्रियों के प्रति अकबर के दृष्टिकोण और विचारों पर प्रकाश पड़े। अकबर के तीव्र और कटु आलोचक बदायूंनी ने या जेसुइट पादरियों ने अकबर के यौन जीवन या स्त्री - विषयक दुर्बलता का कोई विवरण नहीं दिया है। ऐसा माना जाता है कि मध्य युग में ईरानियों और तुर्कों में प्रचलित अप्राकृतिक मैथुन के दुर्गुण से अकबर केवल मुक्त ही नहीं था अपितु जो लोग इसमें लिप्त होते थे उनसे वह घृणा करता था। वह छल कपट का भी व्यवहार करता था। कभी कभी उसके मनोसंयम का बांध टूट जाता था तथा क्रोध के दुस्साह आवेश

---

24 - ई० वी० हैवेल के अनुसार - मुनिराज विद्याविजयजी द्वारा उद्धृत
हिन्दी अनुवादक कृष्ण लाल वर्मा -
सुरीश्वर और सम्राट अकबर - पृ० ३३८.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में आकर वह अनुचित रूप से दण्ड आदि भी दे दिया करता था । परन्तु इस प्रकार की संयम हीनता यदा कदा और क्षणिक ही होती थी । सत्य तो यह है कि अकबर एक मनुष्य था और उसमें अनेक दुर्गुण भी थे, तथापि उसके कई असाधारण गुणों ने उसके दुर्गुणों को ढक दिया था ।

अन्त में हम अकबर के व्यक्तित्व के इस महत्व पूर्ण अंश पर आते है जो कि उसके जीवन में महत्व पूर्ण स्थान रखता है और वह है ईश्वर के प्रति अगाध श्रद्धा । मानव और ब्रम्ह के मध्य के आध्यात्मिक तत्व सम्बन्धि गवेषणा का विषय उसे बड़ा मोहक लगता था । वह ईश्वर में दृढ़ निष्ठा, आस्था और विश्वास रखने वाला व्यक्ति था । अबुल फजल लिखता है कि अकबर पूरे जीवन भर सत्य की खोज में लगा रहा और अपने कर्तव्य पालन को ईश्वरीय उपासना का एक अंग मानता रहा । अकबर के पुत्र जहांगीर ने अपनी आत्म कथा में लिखा है कि -" अपने साम्राज्य राज कोष, अपार गड़े हुए धन, पुरानी अगणित राशि, असंख्य लड़ाकू हाथी और अरबी घोड़े आदि होते हुए भी वे भगवान के सामने बाल बराबर भी उपहास की चूक नहीं करते थे और उसको कभी नहीं भुलाते थे । वे प्रत्येक सम्प्रदाय, धर्म और जाति के सत्पुरुषों की संगति में रहा - करते थे । और उनकी बुद्धि और स्थिति के अनुसार उनका आदर करते थे । " २५ अकबर की कुछ अधोलिखित सूक्तियों से स्पष्ट हो जाता है कि सर्व शक्ति मान परमेश्वर के प्रति उसकी अगाध श्रद्धा थी ।

" There exists a bond between the creator and the Creature which is not expressible in language."

---

२५ - जहांगीर के अनुसार - एस.आर. शर्मा द्वारा उद्धृत - हिन्दी अनुवादक मथुरालाल शर्मा - भारत में मुगल साम्राज्य - पृष्ठ - २८३.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

" That which is without form can not be seen whether in sleeping or waking, but it is apprehensible by force of inagination. To behold God in vision is In fact, to be understood in this sense."

" Each person according to his condition gives the supreme being a name, but in reality to name the unknowable is vain."

" There is no need to discuss to point that a vacuum in nature is impossible. God is omnipresent."

" The legend of Satan is an old world notion. Who has the power to oppose the will of God." 26.

ऐसी ही अनेक उक्तियां और भी प्रस्तुत की जा सकती है, किन्तु उपर्युक्त उक्तियां ही काफी है क्योंकि इनसे ही हम सहज ही अनुमान लगा सकते है कि अकबर के हृदय में ईश्वर के प्रति अमिट श्रद्धा थीं । वह अपने जीवन का प्रत्येक क्षण आत्म निरीक्षण और ईश्वर की खोज में व्यतीत करता था । वह प्राय: प्रश्न किया करता था कि " क्या धार्मिक और सांसारिक प्रवृत्तियों में समावेश नही हो सकता ? " २७ उसका कहना था कि सांसारिक कार्यों में सलंग्न रहते हुए भी आदमी को भगवान का निरन्तर ध्यान रखना चाहिये । सदा सत्य की खोज में लगे रहने पर भी वह प्राचीन हिन्दू राजा जनक की भांति ही (जिन्हें राजर्षि की - उपाधि प्राप्त थी) इसी सिद्धान्त पर चलता था कि एक सच्चा धार्मिक होने के साथ ही कोई व्यक्ति सांसारिक कर्त्तव्यों को सफलता पूर्वक

- -

26- Ain-i-Akbari Taans. by H.S.Jarrett Vol.III P.424-25-26.

27 - Ain-i-Akbari Vol. I P. 162.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्पन्न करता रह सकता है । मन की यह दशा केवल वांछनीय ही नहीं वरन व्यावहारिक भी है । उसका कहना था कि -" जिस प्रकार हिन्दु स्त्रियां छोटे छोटे कुओं से पानी लेने जाती हैं और सिर पर दो दो, तीन तीन गगरी रखे हंसी करती हुई चली आती है किन्तु पानी की एक बूँद भी छलकने नहीं देती, इसी प्रकार सब कार्य करते हुए मनुष्य यदि चाहे तो अपने मन से ईश्वर के विचार को एक क्षण के लिये भी पृथक नहीं कर सकता ।" २८

अकबर के इन विचारों से पता चलता है कि वह एक विशुद्ध - धार्मिक व्यक्ति था लेकिन ईसाई पादरी बारतोली का कहना है कि उसके विचार जानने का किसी में सामर्थ्य ही नहीं था वह लिखता है कि - " अकबर अपने आंतरिक विचारों को जानने का या वह किस धर्म या किस मत के अनुसार वर्ताव करता है सो समझने का कभी किसी को भी मौका नहीं देता था । उसके हरेक काम में यह खूबी थी कि वह बाहरी भेद और प्रपंच से दूर रहता था, और जितनी कल्पना की जा सकती है उतना - प्रामाणिक और बेलाग रहता था, मगर वास्तव में था वह बड़ा ही गहरा और स्वतंत्र । उसके वचन इस प्रकार के शब्दों में निकलते थे कि, जिसके दो अर्थ हो जाते थे, कई बार तो उसके कार्य वचनों से इतने विरुद्ध होते थे कि बहुत खोज करने पर भी उसके आंतरिक भाव जानने की कुंजी नहीं मिलती थी ।" २९

इससे मालूम होता है कि अकबर की स्थिति धार्मिक विचार में या तो अधकचरी थी अव्यवस्थित थी या उसे कोई जान ही नहीं सका था लेकिन इतना अवश्य है कि उसके हृदय में कुछ धर्म संस्कार की मात्रा

---

28 - Ain-i-Akbari- Vol. III Trans. by H.S.Jarrett, P.424-25.

29 - According to Bartoli quoted from Smith : Akbar the great Mogul. P. 73.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जरूर थी । उसके हृदय में बार बार यह सवाल उठा करता था कि जिसके लिये लोगों में इतना आन्दोलन होता है वह धर्म चीज क्या है ? और उसका वास्तविक तत्व क्या है ? उसके हृदय में यह सवाल उठा, उसके पहले ही, दूसरे शब्दों में कहें तो उसके हृदय में वास्तविक धर्म की तलाश करने की इच्छा पैदा हुई, उसके पहले ही उसके मन में मुसलमानी धर्म पर अरुचि हो गई थी । इसके साथ ही उसके हृदय में हिन्दू - मुसलमानों को एक करने की भावना भी उत्पन्न हुई थी । उस इच्छा को पूर्ण करने के लिये ही उसने दीन इलाही नामक एक नये धर्म की स्थापना की थी और इस नवीन धर्म में हिन्दू - मुसलमानों को सम्मिलित करने का प्रयत्न किया था । इस प्रयत्न में उसको बहुत कुछ सफलता भी मिली थी ।

-0- -0- -0-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्मिक नीति को प्रभावित करने वाले तत्व

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

- धार्मिक नीति को प्रभावित करने वाले तत्व -

चौदहवी और पन्द्रहवीं शताब्दी में धर्म के नाम पर अनेक अमानुषिक अत्याचार हुए । पर अकबर ने पूर्ववर्ती सुलतानों की संकीर्ण कट्टर - धार्मिक नीति का परित्याग करके सुलह - ए - कुल - की नीति अपनाई, अपूर्व धार्मिक सहिष्णुता स्थापित की । सभी धर्मावलिम्बयों को समान माना तथा उनके साथ निष्पक्ष व्यवहार किया । उसने एक संकीर्ण, साम्प्रदायिक, राजसत्ता की विचार धारा को परिष्कृत और परिवर्तित कर दिया । अकबर की धारणा थी कि इस्लाम के सिद्धान्त संकीर्ण, एकांगी और पाषाण के समान निर्जीव नहीं, अपितु व्यापक, गतीशील तथा जाग्रत संस्था के रूप में है, जो देश, काल और परिस्थितियों के अनुकूल संशोधित, परिवर्तित और परिष्कृत किये जा सकते हैं । अकबर के इन व्यापक दृष्टि कोण से मुगल राजसत्ता का स्वरूप एकदम परिष्कृत हो गया । उसने धर्म, सम्प्रदाय, नस्ल या अन्य किसी आधार पर मनुष्यों में भेद भाव करना मानवता और नैसर्गिक सत्य धर्म के विरुद्ध समझा उसने इस्लामी विधी विधानों को जो या तो साम्प्रदायिक तथा अन्य असहिष्णुता पूर्ण भेद भावों के आधार थे अथवा हिन्दू मुसलिम मतभेदों को समर्थन देते थे, स्थगित कर दिया और हिन्दुवों को भी शासन के उच्च पदों पर नियुक्त किया । जब टोडरमल की पदोन्नति हुई तब मुसलमान अमीरों और पदाधिकारियों ने ईर्ष्या और द्वेष से इस निर्णय का विरोध किया और अकबर से प्रार्थना की कि टोडर मल को उसके पद से पृथक कर दिया जाये । इस पर अकबर ने रुष्ट होकर कहा कि - "तुम में से प्रत्येक ने अपने निवास गृह में हिन्दुवों को नियुक्त कर रखा है, तो फिर मैंने एक हिन्दु को रखने में क्या गलती की है ।" १

1- Al-Badaoni. Vol. II Trans. by W.H. Lowe - P. 65.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यद्यपि वह प्रारम्भ में इतना उदार और सहिष्णु नहीं था, प्रारम्भ में तो उसे इस्लाम में अत्यधिक आस्था थी और वह इस्लाम का सच्चा अनुयायी था किन्तु विभिन्न परिस्थितियों से और घटनाओं से उसकी - धार्मिक नीति विचार और दृष्टि कोण में परिवर्तन हुआ। अब हम उन परिस्थितियों का वर्णन करेंगे जिन्होंने अकबर की धार्मिक नीति को प्रभावित किया।

१. तत्कालीन अशांति के निवारण के लिये हिन्दुओं के सहयोग की आवश्यकता -

जब अकबर का राज्यारोहण हुआ उस समय सारा देश विभिन्न स्वतंत्र राज्यों में विभक्त था। काबुल का पौत्र उसके सौतेले भाई मिर्जा हकीम के नेतृत्व में लगभग स्वतंत्र हो चुका था। बदख्शां में अकबर का चचेरा भाई सुलेमान मिर्जा स्वतंत्र शासक था उम्र में बड़ा होने के कारण वह अपने आपको तैमूरी राज्य का दावेदार समझता था। कन्धार सामरिक दृष्टि से महत्व का होने से फ़ारस के राजा की दृष्टि उस पर लगी हुई थी। सुलेमान मिर्जा ने काबुल आकर हकीम मिर्जा से मिल कर अकबर के विरुद्ध षडयंत्र किया। हकीम मिर्जा का जो संरक्षक था मुनीम खां, वह अकबर के संरक्षक और प्रधान मंत्रि बैराम खां से वैमनस्य रखता था। अकबर का एक प्रमुख सरदार शाह अबुल माली खुल्लम खुल्ला उसका विरोध कर रहा था। अकबर का प्रसिद्ध अमीर और उच्च पदाधिकारी तारदीबेग भी अकबर के संरक्षक बैराम खां से शत्रुता रखता था। इसप्रकार सभी प्रमुख अमीर और स्वयम् अकबर के सम्बन्धि ही उससे विश्वास घात कर रहे थे।

जिस समय अकबर गद्दी पर बैठा उस समय उसकी आयु केवल तेरह वर्ष की थी। इतनी छोटी अवस्था में उसके लिये सम्पूर्ण शासन भार सम्भाल सकना असम्भव था। इस लिये उसे स्वामिभक्त संरक्षक की अत्याधिक आवश्यकता थी। संरक्षक पद के लिये चार दावेदार थे - मुनीम खां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शाह अबुल माली, बैराम खां, और तारदी बेग । इन चारों में से जब बैराम खां को अकबर का संरक्षक नियुक्त कर दिया तो अन्य तीनों बैराम खां से कटुता और वैमनस्य रखने लगे ।

अकबर के तीन अफगान प्रतिबन्दी थे - सिकन्दर सूर, मुहम्मद - आदिल शाह और इब्राहीम सूर । ये दिल्ली सिंहासन के आकांक्षी थे ।

एक बात और भी थी कि भारत में अभी तक मुगलों को विदेशी समझ कर हीनता तथा घृणा से देखा जाता था । अकबर के पूर्वज तैमूर की लूट मार, विध्वंसकारी कार्य और नृशंस हत्याओं के कारण भारतीयों के दिलों में मुगलों के प्रति स्वाभाविक घृणा पैदा हो गई थी । बाबर और हुमांयू ने भी कोई लोकोपयोगी कार्य नहीं किये जिससे जनता का सौहार्द उन्हें मिलता ।

गौडवाना स्वतंत्र राज्य था । गुजरात में मुसलमान सुलतान मुजफ्फर शाह राज्य कर रहा था और मालवा में शुजात खां का उत्तराधिकारी बाज बहादुर स्वतंत्र शासक था ।

इस प्रकार सारा देश स्वतंत्र राज्यों में विभाजित था । स्मिथ कहता है " जब अकबर कलानौर में तख्त पर बैठा तो यह नहीं कहा जा सकता था कि उसके पास कोई राज्य था । बैराम खां के नेतृत्व में जो छोटी सी सेना थी, उसका कुछ डगमगाता हुआ सा अधिकार पंजाब के कुछ जिलों पर था और वह सेना भी ऐसी नहीं थी जिस पर पूरा विश्वास किया जा सके । अकबर को वास्तव में सम्राट बनने के लिये यह सिद्ध करना था कि वह दूसरे उम्मीदवारों की अपेक्षा अधिक योग्य है और कम से कम उसको अपने पिता का खोया हुआ राज्य तो पुन: प्राप्त करना ही था ।[२]

इस समय भारत की आर्थिक स्थिति तो राजनैतिक स्थिति से भी अधिक खराब थी । अबुल फजल लिखता है कि " अकाल की भयंकरता के

---

२ - स्म. आर. शर्मा हिन्दी अनुवादक मथुरालाल शर्मा - भारत में मुगल साम्राज्य - पृष्ठ १५५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के कारण मनुष्य - मनुष्य का मांस खाने के लिये विवश हो गया था और एकाकी यात्रियों को पकड़ कर खा जाने के लिये लोगों के दल बन गये - थे ।" ३

चतुर्दिक खतरों से घिरा हुआ यह चित्रण था अकबर के राज्यारोहण के समय का । ऐसे समय में अकबर का भारत में टिक सकना कठिन प्रतीत होता था । अत: ऐसी परिस्थितियों में यह आवश्यक था कि वह हिन्दुओं को अपने पक्ष में करने के लिये उनके प्रति समान व्यवहार, सहिष्णुता व उदारता की धार्मिक नीति अपनाये ।

२. साम्राज्य को सुदृढ़ बनाने के लिये हिन्दुओं का सहयोग आवश्यक -

अकबर इस बारीकी को अच्छी तरह समझ गया था कि भारत - हिन्दुओं का घर है । क्योंकि इतिहास ने यह तथ्य प्रमाणित कर दिया था कि सुलतानों में वे ही लोग अधिक सफल हुए जिन्होंने हिन्दुओं का सहयोग, समर्थन और सहायता प्राप्त करने का प्रयास किया । इसके अलावा अकबर का स्वयम् का विचार था कि " मुझे इस देश में ईश्वर ने बादशाह बना कर भेजा है । यदि केवल विजय प्राप्त करना हो, तब तो यह होगा कि देश को तलवार के जोर से अपने अधीन कर लिया और देश वासियों को दबा कर उजाड़ डाला, परन्तु जब मैं इसी घर में रहने लगूं, तब यह सम्भव नहीं है कि सारे लाभ और सुख तो मैं और मेरे अमीर भोगे और इस देश के निवासी दुर्दशा सहें, और फिर भी मैं आराम से रह सकूं । देशवासियों को बिलकुल नष्ट और नाम शेष कर देना और भी अधिक कठिन है ।" ४ अपने विचारों से अकबर इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि इस्लाम देश का राष्ट्रीय धर्म होने के अनुपयुक्त है, क्योंकि मुसलिम राज्य की बहु संख्यक जनता -

---

३ - Akbaranama Vol. II P. 57.

४ अकबरी दरबार - हिन्दी - अनुवाद - रामचन्द्र वर्मा पहला भाग पृ० ११६.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हिन्दू थी । उनका धर्म उत्कृष्ट था अत: उसका विनाश नहीं किया जा सकता था ।

इस प्रकार हिन्दुओं को शत्रु बनाकर न तो उनको नष्ट किया जा सकता था और न ही सुदृढ़ साम्राज्य का निर्माण सम्भव था । वह ऐसा साम्राज्य स्थापित करना चाहता था जो बहु संख्यक हिन्दुओं और मुसलमानों के सहयोग तथा सहायता पर, शासितों की शुभेच्छा व सद्भावना पर आश्रित हो, जिसमें किसी जाति, धर्म व रंग का भेद - भाव न हो, जिसमें हिन्दुओं और मुसलमानों को समान रूप से अधिकार प्राप्त हो, तथा दोनों को ही समान सुरक्षा, न्याय और स्वतंत्रता प्राप्त हो, यही कारण था कि जब उसने देश का शासन अपने हाथ में लिया, तब ऐसा ढंग निकाला जिससे साधारण भारतवासी यह न समझे कि विजातीय तुर्क और विधर्मी मुसलमान कहीं से आकर हमारा शासक बन गया है । इस लिये देश के लाभ और हित पर उसने किसी प्रकार का कोई बंधन नहीं लगाया । हिन्दुओं के सहयोग से उसका साम्राज्य एक ऐसी नदी बन गया जिसका किनारा हर जगह से घाट था ।

इस प्रकार राजनैतिक कारणों से प्रेरित होकर अकबर ने तलवार की नोक पर राज्य स्थापित करने और उसे चलाने तथा इस्लाम को राज्य धर्म बनाने की भावना त्याग दी और हिन्दुओं के प्रति समान व्यवहार तथा धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई ।

३. अकबर के पूर्वजों के उदार धार्मिक विचार -

यद्यपि अकबर भारत में एक विदेशी था । जैसा कि स्मिथ ने भी लिखा है _ Akbar was a foreigner in India. He had not a drop of Indian blood in his veins. " 5

5- Smith : Akbar the great Mogul. P. 9.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किन्तु फिर भी वह धार्मिक मामलों में उदार था, इसका बहुत कुछ श्रेय उसके पूर्वजों की उदार धार्मिक विचार धारा को दिया जा सकता है। *उसके शरीर में तुर्क, मंगोल और ईरानी रक्त था। मातृ पक्ष की ओर* से अकबर चंगेज खां के वंश से सम्बन्धित था। यद्यपि चंगेज खां बौद्ध धर्म को मानता था, परन्तु उसे अपनी प्रजा के विभिन्न धार्मिक कृत्यों में - सम्मिलित होने में कोई संकोच नहीं होता था। चंगेज और उसके पूर्वज परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको बदल लेते थे। पितृ पक्ष की ओर से अकबर तैमूर के वंश से सम्बन्धित था और तैमूर चंगेज खां का भी सम्बन्धि था। तैमूर भी कभी सुन्नी और कभी शिया हो जाता था। अकबर का पिता मह बाबर स्वयं तैमूर वंश का था। बाबर की माता चंगेज वंश के मंगोल शासक युनस की पुत्री थी। बाबर धर्मनिष्ठ और ईश्वर में दृढ़ आस्था, रखने वाला व्यक्ति था, यद्यपि वह सुन्नी था लेकिन वह स्वतंत्र विचारों का पोषक था। बाबर का पुत्र और अकबर का पिता हुमायु भी कट्टर धर्मांध नहीं था। उसने परिस्थिति वश फारस में शिया धर्म ग्रहण कर लिया था। हुमायूं की पत्नि हमीदा बानू बेगम जो कि फारस के शिया शेख अली अकबर जामी की पुत्री थी, हुमायूं के समान वह भी संकीर्ण विचारों वाली नहीं थी। इस तरह अकबर के पूर्वज राजनैतिक आवश्यकताओं के कारण और अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिये धार्मिक मामलों में उदार हो जाते थे। अत: वंश परम्परा से अकबर में धार्मिक कट्टरता आने के लिये कोई स्थान नहीं रह गया था।

४. <u>अकबर के संरक्षक तथा शिक्षकों का उदार दृष्टि कोण</u> -

अकबर का संरक्षक और प्रधान परामर्श दाता बैराम खां विद्वता - और काव्य के गुणों से विभूषित था। लेखकों व विद्वानों का वह आश्रय दाता था। वह शियामत को मानने वाला था। बदायूंनी लिखता है है कि -"" बुद्धिमत्ता, उदारता, निष्कपटता, स्वभाव की अच्छाई,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अधीनता और नम्रता में वह सब से आगे था । वह दरवेशों का मित्र था, और स्वयम् बहुत धार्मिक और नेक इरादों का मनुष्य था ।"[6] बुल्जले हैग का भी कहना है कि बुद्धिमत्ता, उदारता, निष्कपटता, सद् प्रवृत्ति, आज्ञा कारिता एवं विनम्रता में वह सर्वोपरि था । अकबर पर अपने संरक्षक के उदार विचारों का बहुत प्रभाव पड़ा । बैराम खां ने ही अकबर की शिक्षा के लिये सुयोग्य, उदार विचार वाले व सुसंस्कृत विद्वान अब्दुल - लतीफ को नियुक्त किया । अब्दुल लतीफ अपने धार्मिक मामलों में इतना उदार था कि अपनी जन्म भूमि फारस में लोग उसे सुन्नी कहते थे और उत्तरी भारत में यहां अधिक सुन्नी उसे शिया समझते थे । इतना महान होते हुए भी यद्यपि वह अकबर को पढ़ाने में असमर्थ रहा किन्तु उसने अकबर को जो सुलह - ए - कुल का पाठ पढ़ाया उसे अकबर आजीवन नहीं भूला । सुलह - ए - कुल अर्थात सर्वजनित शान्ति के पाठ से अकबर ने समझ लिया था कि यदि साम्राज्य में शान्ति बनाये रखनी है तो धार्मिक विचारों को उदार बनाना होगा, धार्मिक भेद - भावों को मिटाना होगा और - हिन्दुओं को भी मुसलमानों के समान साम्राज्य के उच्च पदों पर नियुक्त करना होगा ।

५. राजपूत कन्याओं से विवाह और अकबर पर उनका प्रभाव -

राजपूतों के प्रति अकबर का व्यवहार किसी अविचारशील भावना का परिणाम नहीं था और न ही राजपूतों की धीरता, वीरता, स्वदेश भक्ति और उदारता के प्रति सम्मान का ही परिणाम था । उसका तो यह व्यवहार एक सुनिर्धारित नीति का परिणाम था और यह नीति - स्वलाभ, योग्यता की स्वीकृति तथा न्याय नीति के सिद्धान्तों पर आधारित थी । आरम्भ में ही अकबर ने यह अनुभव कर लिया था कि उसके -

6- Al-Badaoni- Vol. III P. 190. (265)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुसलमान अनुयायी तथा कर्मचारी जो विदेशी भाड़े के टट्टू होने के कारण अपनी स्वार्थ सिद्धी से ही मुख्यत: प्रेरित होते थे, उन पर पूरी तरह - भरोसा नहीं किया जा सकता था । उसे यह बात स्पष्ट हो गयी थी कि यदि उसे भारत वर्ष में अपने राज्याधिकार को सुरक्षित रखना है तो उसे यहीं के प्रमुख - प्रमुख राजनैतिक तत्वों का सहयोग व समर्थन प्राप्त करना आवश्यक है । इस तरह अपनी दूरदर्शिता से अकबर ने उस तथ्य को हृदयंगम कर लिया जिसे समझने में उसके पिता और पिता मह ने भूल की थी । इसी नीति का अनुसरण करते हुए उसने राजपूत राजकन्याओं से विवाह किये । जनवरी १५६२ में अकबर फतेहपुर सीकरी से अजमेर के ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की मजार की यात्रा के लिये गया । यात्रा के बाद जब वह लौटा तो सांभर में रुका और यहां ६ फरवरी १५६२ को भारमल की राजकन्या हरकू बाई का विवाह अकबर से कर दिया गया ।"" ७ आमेर के राजा की देखा - देखी बीकानेर, जैसलमेर, मारवाड़, तथा डूंगर- पुर के राज पूत राज्यों ने भी अकबर से विवाह सम्बन्ध करके अपनी - अपनी राजकन्याओं की डोलियां मुगल रनवास में भेजी ।

अकबर ने अपनी इन राजपूत रानियों को हिन्दू धर्म त्याग कर - इस्लाम ग्रहण करने के लिये बाध्य नहीं किया । उसने राजमहल में हिन्दू रानियों और उनकी सहचरियों को उनके हिन्दू धर्म के अनुसार पूजा - पाठ करने, मनन चिन्तन करने और धार्मिक संस्कारों को मानने की पूरी स्वतंत्रता दे रखी थी । अकबर की प्रमुख हिन्दू रानी, आमेर के भारमल की पुत्री हरकू बाई के लिये मुगल हरम में तुलसी का पौधा लगाया गया था । इन रानियों के प्रभाव से अकबर सूर्य की उपासना करता था और कभी - कभी तिलक भी लगाता था । इस प्रकार राजपूत कन्याओं से विवाह करने से एक ओर तो अकबर को साम्राज्य में हिन्दुओं का सहयोग मिला तथा दूसरी

- -

7- Akbarnama Vol. II P. P. 154-58.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और इन राजकन्याओं ने अकबर के धार्मिक विचारों को प्रभावित किया ।

६. अकबर का स्वयम् का उदार दृष्टिकोण तथा आध्यात्मिक अनुभव -

अकबर को अपने पूर्वजों तथा शिक्षकों से तो उदार विचार मिले ही थे । इसके अलावा उसका स्वयम् का दृष्टिकोण भी उदार था । " उसके हृदय में यह भाव अंकुरित हो गया था कि सभी वर्गों के धर्मों के लोगों की नि: स्वार्थ सेवा से बढ़ कर ईश्वर को प्रसन्न करने का कोई अन्य मार्ग नहीं है । " ८ उसकी दृढ़ धारणा थी कि सच्चा धर्म वही है जिसमें वर्ग, जाति, सम्प्रदाय और रंग रूप का भेद - भाव नहीं हो उसका विश्वास था कि ईमानदारी और सच्चाई से अपने धर्म के सिद्धान्तों पर चलने वाला व्यक्ति किसी भी धर्म का मानने वाला क्यों न हो, मुक्ति प्राप्त करता है । अकबर ने अपने सैनिक अभियानों और युद्धों के दौरान भी अन्य मुसलिम आक्रमणकारियों के समान मंदिरों और मूर्तियों को तोड़ा - फोड़ा नहीं । परास्त नरेशों के साथ भी अभूत पूर्व उदारता का व्यवहार किया । इसी बीच अकबर को दो तीन आध्यात्मिक अनुभव भी हुए जिन्होंने उसे और भी अधिक उदार बना दिया । " मार्च १५७८ में एक रात्रि को - लाहौर के पास आखेट यात्रा से ध्यान मग्न अवस्था में अपने पड़ाव की ओर भूमि पर गिर पड़ा । इसको " ईश्वर संदेश " मानकर वह स्वयम् भक्ति में साष्टांग पड़ गया । " ९ इस महत्व पूर्ण आध्यात्मिक जागृति से अकबर धर्म में सहिष्णु और असाम्प्रदायिक हो गया । एक अन्य स्थान पर अबुल फजल लिखता है कि एक दैवी आनंद अकबर के शरीर में व्याप्त हो गया और परमात्मा के साक्षात्कार की अनुभूति से किरण फूटी । अकबर का ईश्वर से प्रत्यक्ष सम्पर्क हो गया और उसे एक नवीन आध्यात्मिक अनुभव हुआ । " १० जहां यह घटना घटी थी, वहां पर अकबर

8- Ain-i-Akbari Vol. III P.P. 449-50.
9- Akbarnama Vol. III P. 234-35,37.
10 - Akbarnama Vol. III. P. 241-45.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ने एक विशाल और विस्तृत उद्यान निर्मित करवाया और फतेहपुर सीकरी में गरीबों और फकीरों को एक करोड़ रुपये का सोना, चांदी, व सिक्के दान में वितरित किये गये।" ११

इस प्रकार इन आध्यात्मिक अनुभवों ने अकबर को और भी अधिक दान शील, धार्मिक व उदार बना दिया।

७. भक्ति आन्दोलन और सूफी विचार धाराओं का अकबर पर प्रभाव -

अकबर के विचारों और धर्म पर तत्कालीन भक्ति आन्दोलन, - विभिन्न सन्तों, साधुओं, फकीरों और सूफियों की विचार धाराओं का प्रभाव पड़ा। हिन्दू सन्तों, भक्तों, साधुओं और सूफी फकीरों तथा शेखों ने धर्म के बाहरी आडम्बर को व्यर्थ बतलाया। उन्होंने धार्मिक प्रथाओं और कर्म कान्ड का खन्डन किया। जीवन और चरित्र की पवित्रता तथा एक ईश्वर की सत्ता पर बल दिया। अकबर की राजसभा में भी सूफी विद्वान थे जब अकबर सूफी शेख मुबारक और उसके दो प्रतिभाशाली पुत्र फैजी और अबुल फजल के सम्पर्क में आया तब कट्टरता और धर्मान्धता से मुक्त संसार उसके सामने आया। वह अपने धार्मिक विचारों में तो - अत्यन्त उदार था ही, साथ ही साथ अन्य धर्मों के धार्मिक विचारों, विश्वासों और रीति - रिवाजों के प्रति भी सहानुभूति रखता था। फैजी स्वतंत्र विचारों वाला प्रतिभा शाली विद्वान था। इस लिये मुगल दरबार में वह धर्मांध कट्टर मुल्लाओं का विरोधी था। अबुल फजल भी मध्य युग की धर्मांधता, संकीर्णता और साम्प्रदायिकता से ऊंचा उठा हुआ था। जब अकबर की उपस्थिति में इबादत खाने में भिन्न - भिन्न धर्मों की गोष्ठियां और वाद विवाद होते थे तो अबुल फजल इनमें सक्रिय भाग लेता था। फैजी और अबुल फजल इस्लामी शास्त्रों के अपने गहन ज्ञान का लाभ उठा कर धार्मिक शास्त्रों के अपने उद्धरणों और तर्कों से धर्मान्ध -

11 - Muntkhabut - Tawarikh. P. 265.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुल्लाओं के तथ्यों और कथनों को काट देते थे और बादशाह को पृथवी पर खुदा का नायब बता कर मुल्लाओं के हथियारों को कुंठित कर देते थे। अबुल फजल ने अपनी आलोचना, तर्क और ओजस्वी भाषणों से अनुदार साम्प्रदायिक तत्वों का विरोध किया। इससे रुढिवादी सुन्नी नेता शाही का उत्साह भंग हो गया। सूफी सिद्धान्तों ने अकबर के मस्तिष्क को उदार विचारों से भर दिया, वे अकबर को इस्लाम धर्म की संकीर्णता से दूर ले गये और उसको विवश कर दिया कि वह पवित्र वास्तविकता की खोज करें।

८. अकबर की सत्यान्वेषण की प्रवृत्ति -

अकबर धर्मनिष्ठ और चिन्तन शील व्यक्ति था। वह सत्य को - खोजने और पाने का इच्छुक था। Badaoni says : From a feeling of thankfulness for his past successes, he would sit many a morning alone in prayer and meditation, on a large flat stone of an Old building which lay near the place in a lonely spot, with his head bent over his chest and gathering the bliss of early hours of dawn.12 उसने धर्म के क्षेत्र में बहुरुपता का अनुभव किया और विभिन्न धर्मों में सत्य को पहचानने का प्रयत्न किया। जब कभी वह समय पाता वेश बदल कर भाग जाता और योगियों, सन्तों व सन्यासियों के पास बैठा रहता तथा सभी धर्मों के सत्यों को जानने का प्रयास करता, उसके हृदय में बार बार यह सवाल उठा करता था कि जिसके लिये लोगों में इतना आन्दोलन हो रहा है वह धर्म क्या चीज है ? और उसका वास्तविक तत्व क्या है ?

12 - Al-badaoni Trans. by W.H. Lowe Vol. II P. 203, Ain-i-Akbari Vol. I Trans. by H.Blochmann second edition P. 179.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वह जीवन और मृत्यु के गूढ़ रहस्यों को भी जानने का प्रयास करता था। यौवन के आरम्भ से ही अकबर जानना चाहता था कि ईश्वर और मनुष्य का क्या सम्बन्ध है ? और इस विषय के समस्त प्रश्न क्या क्या है ? वह कहता था " दर्शन शास्त्री का मुझ पर जादू का सा असर होता है कि अन्य सब बातों को छोड़ कर मैं इस विचार की ओर झुक जाता हूं चाहे मुझे आवश्यक कार्मों की अपेक्षा करनी पड़े। " १३ अकबर का - विचार शील मन कभी भी यह स्वीकार करने को तैयार नहीं था कि - केवल इस्लाम धर्म ही सच्चा धर्म है। उसकी इस जिज्ञासु और सत्यान्वेषण की वृत्ति, उसके गहन आध्यात्मिक चिन्तन और मनन तथा उसकी नवीन विचार धाराओं ने उसे इस निष्कर्ष पर ला दियाकि प्रेम,उदारता दया व सहिष्णुता के सिद्धान्त ही सत्य धर्म के तत्व है, अबुल फजल लिखता है कि जीवन भर उसकी खोज बीन का यह परिणाम हुआ कि अकबर विश्वास करने लगा था कि सभी धर्मों में समझ दार लोग होते हैं और वे स्वतंत्र विचारक भी होते है ------ सत्य सभी धर्मों में है तो यह समझना भूल है कि सच्चाई सिर्फ इस्लाम धर्म तक है जब कि इस्लाम धर्म अपेक्षा कृत नवीन है जिसकी आयु केवल हजार वर्ष की ही होगी १४ अकबर को विश्वास हो गया था कि विविध धर्मों तथा सम्प्रदायों से भरे हुए उसके विशाल साम्राज्य में प्रेम, उदारता, व सहिष्णुता के सिद्धान्त ही शान्ति ला सकते है।

६. अकबर का हिन्दू अधिकारियों से सम्पर्क और उनका प्रभाव -

अकबर की राजसभा और प्रशासन में व सेना में अनेक हिन्दू अधिकारी और सेनानायक थे। राजपूतों का तो यह समझो कि उसके साम्राज्य के

13- Ain-i-Akbari Vol. III Trans. by H.S. Jarrett. P.433

14- Ain-i-Akbari Vol. I P. 179.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्तम्भ थे। भगवन्त दास, मानसिंह, टोडरमल, बीरबल, जगन्नाथ कछवाह, माधोसिंह आदि इनमें प्रमुख थे। मानसिंह अकबर के सेनापतियों में प्रमुख था तथा अकबर के दरबार के नवरत्नों में से एक। वृन्दावन में उसने जो गोविन्द देव का मंदिर बनवाया वह उसकी धर्मनिष्ठा का ज्वलन्त उदाहरण है। प्रशासन में उसने अकबर को उदार नीति अपनाने का परामर्श दिया। ऐसा माना जाता है कि जजिया तथा अन्य अवांछनीय करों की समाप्ति करवाने में मानसिंह का हाथ था। इसी तरह टोडरमल भी बड़ा ही प्रतिभावान और धर्मनिष्ठ व्यक्ति था। वह हिन्दू धर्म का कट्टर अनुयायी था। मध्य युग के मुसलिम शासन में ऊँचे पद पर रहते हुए और दरबार में महत्त्व शाली कार्य करते हुए भी टोडर मल ने अपने हिन्दू धर्म को अपनाये रखा, अपने पूजा - पाठ, भजन चिन्तन, धार्मिक आचार - विचार आदि को बनाये रखा। बीरबल अकबर का अनन्य मित्र, अत्यधिक कृपापात्र, परामर्श दाता और साथी था। बदायूंनी व मौलाना मुहम्मद हुसैन आदि इतिहास कार मानते हैं कि अकबर बीरबल के प्रभाव से ही सूर्य के प्रति श्रद्धा और सम्मान प्रकट करने लगा था। इसी प्रकार जगन्नाथ - कछवाहा तथा भगवन्त दास आदि हिन्दुओं ने भी अकबर के विचारों को प्रभावित किया। इन हिन्दुओं ने न तो अपना धर्म छोड़ा और न ही रीति - रिवाज, बल्कि अकबर को अपने धर्म से प्रभावित किया। अकबर पर तो हिन्दुओं के धार्मिक विचारों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था, क्योंकि हिन्दू तो उसके चारों ओर इस प्रकार थे जैसे कि श्वास - वायु।

१० अकबर की राजनैतिक महत्त्वाकांक्षाएं -

जिस समय अकबर गद्दी पर बैठा उस समय सारा राज्य असंगठित व अव्यवस्थित था। उसके पास कोई स्थाई सेना भी नहीं थी। अकबर की महत्त्वाकांक्षा एक सुसंगठित, सुव्यवस्थित व स्थाई राज्य स्थापित करने की थी। अबुल फजल के अनुसार अकबर की विजय नीति का उद्देश्य स्थानीय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शासकों के निरंकुश शासन से पीड़ित प्रजा को सुख, शान्ति और सुरक्षा प्रदान करना था । प्राचीन हिन्दू आदर्शों से प्रेरित होकर अकबर भी - सम्पूर्ण देश को राजनैतिक दृष्टि से एक सूत्र में बांधने और प्रजाजन को सुख - शांतितथा सुरक्षा प्रदान करने की ओर प्रयत्न शील हुआ । इसके लिये उसने अनुभव कर लिया था कि जब तक विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों और वर्गों के लोगों को एक सूत्र में नहीं बांधा जायेगा, तब तक उसका राज्य दृढ़ और स्थायी नही हो सकेगा । उसे राजपूतों व अन्य हिन्दुओं के सहयोग की आवश्यकता थी । इस लिये उसने राजपूतों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये । "सेना और शासन विभाग के बड़े बड़े पद तुर्कों के समान ही - हिन्दुओं को भी मिलने लगे । दरबार में हिन्दू - मुसलमान सब बराबर - बराबर दिखाई देने लगे ।" १५ अतएव अकबर को राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिये ऐसी उदारता पूर्ण, गुण ग्राहक सहिष्णुनीति अपनाने के लिये बाध्य होना पड़ा जिससे किसी धर्म या सम्प्रदाय को चोट न पहुंचे ।

११. इबादत खाने में इस्लाम धर्म केकट्टर नेताओं और उल्माओं के पतित चरित्र का नग्न प्रदर्शन और अकबर पर उनका प्रभाव -

१५७५ ई० में अकबर ने फतेहपुर सीकरी में एक बहुत बढ़ियां इमारत बनवाई और उसका नाम इबादत खाना अथवा पूजा घर रखा गया । मोहम्मद हुसैन लिखते है कि "यह वास्तव में वही कोठरी थी, जिसमें शेख सलीम - चिश्ती के पुराने शिष्य और भक्त शेख अब्दुल्ला नियाजी सरहिन्दी किसी समय एकान्तवास किया करते थे । उसके चारों और बड़ी - बड़ी इमारते बनाकर उसे बढ़ाया ।" १६ प्रत्यैक जुमा शुक्रवार की नमाज के उपरान्त शेख सलीम चिश्ती की खानकाह से आकार इसी नई खानकाह में दरबार खास होता था । बदायूंनी लिखता है कि -" उसने ((अकबर) सन् १५७५ ई० में फतेहपुर सीकरी में निर्मित इबादत खाने में इस्लाम के प्रसिद्ध विद्वानों,

१५ - अकबरी दरबार हिन्दी अनुवादक - रामचन्द्र वर्मा पहला भाग पृ०१२०

१६ - अकबरी दरबार हिन्दी अनुवादक, रामचन्द्र वर्मा पहला भाग पृ० ७०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शेखों, मौलवियों, मुफ्तियों आदि को धार्मिक विचार विमर्श और वाद विवाद के लिये आमंत्रित किया, जिससे वह इस्लाम धर्म का अधिक ठीक ज्ञान प्राप्त कर सकें।" १७ बहुत बड़े बड़े विद्वान मौलवी आदि तथा कुछ थोड़े से चुने हुए मुसाहब वहां रहते थे। इनमें मखदूम - उल - मुल्क, अब्दुन्नबी, काजी याकूब, मुल्ला, बदायूंनी काजी इब्राहीम, शेख मुबारक, अबुल फजल, काजी जलालुद्दीन आदि प्रमुख थे। इस इबादत खाने में ईश्वर और धर्म - सम्बन्धी बाते होती थी। परन्तु विद्वानों की मण्डली भी कुछ विलक्षण हुआ करती है। वहां धार्मिक वाद विवाद तो पीछे होगे, पहले बैठने के सम्बन्ध में ही झगड़े होने लगे कि अमुक मुझ से ऊपर क्यों बैठा है और मैं उससे नीचे क्यों बैठाया गया ? इस लिये इस सम्बन्ध में यह नियम बना की अमीर लोग पूर्व की ओर, सैयद लोग पश्चिम की ओर, विद्वान आदि दक्षिण की ओर तथा त्यागी व फकीर आदि उत्तर की ओर बैठे। 17 B प्रत्येक शुक्रवार की रात को बादशाह इस सभा में स्वयम् जाता था। वह वहां के सभा सदों से वार्तालाप करता था और नई - नई बातों से अपना ज्ञान भण्डार बढ़ाता था। पर बड़े दुख की बात है कि जब मसजिदों के मुल्लों को बढ़िया बढ़िया भोजन मिलने लगे और उनके हौसले बढ़कर उनकी इज्जत होने लगी तब उनकी आंखों पर चर्बी छा गई। सब आपस में झगड़ने लगे। पहले तो केवल कोलाहल होता था, फिर उपद्रव भी होने लगे। अकबर के दरबार में रहने वाला कट्टर मुसलमान बदायूंनी धर्म सभा में बैठने वाले मौलवियों में जो झगड़ा होता था उसके लिये लिखता है कि -" बादशाह अपना बहुत ज्यादा वक्त इबादत खाने में शेखों और विद्वानों की संगति में रह कर गुजारता था। खास तौर पर शुक्रवार की रात में - जिसमें वह रात भर जागता रहता था - किसी मुख्य तत्व की या किसी अवान्तर विषय की चर्चा करने में निमग्न रहता था। उस समय विद्वान और शेख, पारस्परिक विरुद्धोक्ति और मुकाबिला करने की रण - भूमि

---

17 A Al-Badao i Trans. by W.H.Lowe Vol. II P. 200

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में अपनी जीभ रूपी तलवार का उपयोग करते थे। पक्ष समर्थन कार्यों में इतना वितंडावाद खड़ा हो जाता था कि, एक पक्ष वाला दूसरे पक्ष वाले को बेवकूफ और ढोंगी बताने लग जाता था।"[१८] इन वाद - विवाद और धार्मिक चर्चाओं के दौरान इन विद्वानों की संकीर्णता, असभ्यता तथा अहंकार का नग्न नृत्य प्रारम्भ हुआ। एक विद्वान किसी बात को हलाल कहता था तो दूसरा उसी को हराम प्रमाणित कर देता था। वे स्वयम् अकबर की उपस्थिति में ही आपे से बाहर हो जाते थे। और परस्पर एक दूसरे को काफिर बतलाते थे। अबुल - फजल और फैजी भी आ गये थे। तथा दरबार में उनके पक्षपाती भी उत्पन्न हो गये थे। ये लोग एक दूसरे के कार्यों की पोल खोलते थे, बेईमानियों के अनेक किस्से सुनाते थे, जैसे दीन - दुखियों और विद्वानों को दान में दी गयी रकम के विषय में मखदूम - उल - मुल्क की बेईमानी, अब्दुन्नबी पर हत्या करने का आरोप आदि। प्रत्येक विद्वान की यही इच्छा थी कि जो कुछ मैं कहूं उसी को सब ब्रह्म वाक्य माने। जो जरा भी चीं-चपड़ करता था उसके लिये काफिर होने का फतवा रखा हुआ था। कुरान की आयतें और कहावतें सब के तर्क का आधार थीं। पुराने विद्वानों के दिये हुए जो फतवे अपने मतलब के होते थे, उन्हें भी वे कुरान की आयतों के समान ही प्रमाणिक बतलाते थे।" विद्वानों की यह दशा थी कि जबानों की तलवारें खींच कर पिल पड़ते थे, कट मरते थे और आपस में तर्क वितर्क तथा वाद - विवाद करके एक दूसरे को पूरी तरह से दबाने का ही प्रयत्न करते थे। शेख सदर और मखदूम - उल - मुल्क की तो यह दशा थी कि आपस में गुत्थम गुत्था तक कर बैठते थे।"[१९] बदायूनी

---

१८ - AL-badaoni Trans. by W.H.Lowe Vol. II P. 262.

१९ अकबरी दरबार हिन्दी अनुवाद रामचन्द्र वर्मा पहला भाग पृ०७५-७६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भी लिखता है कि वाद विवाद के समय " एक रात उस समय उल्मार्ओं की गर्दनों की नसें फूल गयीं और एक भयानक शोर गुल और कोलाहल मच गया सम्राट अकबर इनके अशिष्ट व्यवहार पर बड़ा ही क्रोधित हुआ । " २०
इन नेताओं के ऐसे संकीर्ण, कट्टर पन, स्वार्थ और पतित चरित्र से अकबर को अत्यधिक क्षोभ हुआ उसने समझ लिया कि सत्य की खोज उनके बस की बात नहीं । धर्म की ही नींव खोदने वाले ऐसे मुल्लाओं से उसे स्वभावत: चिढ़ होने लगी और वह शिया - सुन्नी, हनफी - शफी के झगड़ों से मुक्त धर्म को स्थापित करने को आतुर हो उठा ।

१२ विभिन्न धर्माचार्यों से अकबर का सम्पर्क और उनका प्रभाव -

इबादत खाने में इस्लाम धर्म के कट्टर नेताओं और उल्मार्ओं के पतित चरित्र से कट्टर इस्लाम में अकबर का विश्वास हिल गया था । क्यामत के इस्लामी सिद्धान्तों को उसने मानने से इन्कार कर दिया और इस्लाम की बात तो उसने एक ओर ही रख दी । उसे यह विश्वास ही नहीं होता था कि कोई स्वर्ग कैसे जाता है ? यहां से लम्बी बातचीत करके इतनी जल्दी वापिस आ जावे कि उसका बिस्तर गरम का गरम मिले । अब उसने इबादत-खाने के द्वार दूसरे धर्म - सम्प्रदायों जैसे हिन्दू, जैन, पारसी, ईसाई, के लिये भी खोल दिये । यद्यपि इबादत खाने में धार्मिक विचार - विमर्श होते ही रहे किन्तु अकबर ने अन्य मतों और सम्प्रदायों के विद्वानों को बुला कर नीजि बैठकें आयोजित करनी आरम्भ कर दीं । इससे विद्वान लोग बड़ी ही गम्भीरता और शान्ति से धर्म चर्चा करते थे । उससे अकबर को बहुत आनन्द होता था । Abulfazal Says :"The Shahanshah's Court became the home of inquirers of the seven claims, and the

---

20 - AL-Badaoni Trans. by W.H. Lowe Vol. II P. 205.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

assemblage of the wise of every religion and sect."21.

हिन्दू, जैन, ईसाई, सिख आदि धर्माचार्यों और सन्तों ने अकबर के सामने अपने अपने धर्म के श्रेष्ठ सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। हिन्दू धर्म ने अकबर को अत्यधिक प्रभावीत किया। हिन्दू विद्वानों में पुरुषोत्तम और देवी प्रमुख थे। रात्रि के समय ये लोग बादशाह के शयन कक्ष के - झरोखों के समीप उपस्थित होते थे और यहां हिन्दू धर्म सिद्धान्तों की विशद व्याख्या करते थे। देवी ने कर्म तथा पुर्नजन्म का रहस्य बताया। इनके प्रभाव से अकबर आत्मा के आवागमन में विश्वास रखने लगा था। हिन्दुओं के देवी - देवताओं और अवतारों के प्रति वह विश्वास करने लगा था। बदायूंनी लिखता है कि -" सात नक्षत्र सप्ताह के प्रत्येक दिन से सम्बन्धित होते हैं। इन नक्षत्रों में से प्रत्येक के रंग के अनुसार अकबर ने उस दिन के पहिनने के लिये अपनी वेश - भूषा बनवाई थी"२२

जैनाचार्य हीरविजय सूरि, विजय सेन सूरि, भानुचन्द्र उपाध्याय तथा जिन चन्द्र सूरि ने अकबर को जैन धर्म के सिद्धान्तों की ओर आकृर्षित किया। इनके प्रभाव से अकबर ने पिंजड़े में बन्द पक्षियों को मुक्त कर - दिया। कुछ समय के लिये पशुओं का वध और आखेट बन्द कर दिया तथा मांस खाना भी त्याग दिया। Smith says : He cared little for flesh frood, and gave up the use of it almost entirely in the later years of his life, when he came under Jain influence."23

अकबर ने जब अपने बर्ताव में इतना परिवर्तन कर दिया था तब इससे यह परिणाम निकालना क्या बुरा है कि उसके दया सम्बन्धि विचार बहुत ही उंच्च कोटि पर पहुंच गये थे। अकबर का कहना था कि -

- -

21- Akbarnama Trans. by H.Beveridge Vol. III P. 366.

22- AL-Badaoni Trans. by W.H.Lowe Vol. II P. 268.

23- Smith : Akbar the great Mogul. P. 335.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

The world of existence is amenable only to kindness. No living creature deserves rejection." 25.

पारसी धर्माचार्य मेहरजीराणा ने सूर्य और अग्नि की उपासना को श्रेष्ठ बतलाया । इससे प्रभावित होकर अकबर ने सूर्य व अग्नि की पूजा प्रारम्भ कर दी ।

इसाइयों के प्रभाव से अकबर ईसाई गिरजाघर में जाकर घुटने टेक कर व हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता था । पादरियों द्वारा सम्पादित ईसाई धार्मिक विधियों और समारोहों में सम्मिलित होता था । ईसाई पादरियों के प्रति वह इतना अधिक उदार हो गया था कि वह उन्हें आर्थिक सहायता भी देता था ।

सिक्ख गुरुओं के प्रभाव से अकबर ने सिखों के आदि ग्रन्थ की बहुत प्रशंसा की और पंजाब में कृषकों का लगान माफ कर दिया ।

इस प्रकार इन विभिन्न धर्माचार्यों ने अकबर के धार्मिक विचारों को उदार बनाने में सहयोग दिया । विभिन्न धर्माचार्यों का अकबर पर जो प्रभाव पड़ा उसका विस्तृत वर्णन आगे के लिये छोड़ कर यहां उपरोक्त वर्णन के आधार पर इतना ही कहेंगे कि इन विभिन्न धर्मों के आचार्यों और विद्वानों के द्वारा अकबर इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि सभी धर्मों में अच्छी और सत्य बातें हैं । इससे अकबर की धार्मिक नीति में एक नवीन अध्याय प्रारम्भ हुआ । उसने तत्कालीन धर्मों के दोषों को दूर कर एक व्यापक समन्वयवादी धर्म स्थापित करने का निश्चय किया ।

-0- -0- -0-

24- Ain-i-Akbari Trans. by H.S.Jarrett.Vol. III.P. 429.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्मिक नीति

का

विकास

(खुतबा पढ़ने से पूर्व सन् १५७६ तक)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धार्मिक नीति का विकास (खुतबा पढ़ने से पूर्व सन् १५७६ तक)

अकबर के प्रारम्भिक धार्मिक विचार -

अकबर १५५६ में सिंहासन पर बैठा । १५५६ से १५६२ तक वह सच्चे मुसलमान शासक के समान था । मौलाना मुहम्मद हुसैन लिखते है कि - " अठारह बीस बरस तक को उसकी यह दशा थी कि वह मुसलमानी धर्म की आज्ञाओं को उसी प्रकार श्रद्धा पूर्वक सुनता था जिस प्रकार कोई सीधा साधा धर्म निष्ठ मुसलमान सुना करता है और उन सब धार्मिक आज्ञाओं का वह सच्चे दिल से पालन करता था । " १ सिंहासनारोहण के प्रारम्भिक काल में तो वह सब के साथ मिल कर नमाज पढ़ता था स्वयम् अजान देता था, मसजिद में अपने हाथ से झाड़ू लगाता था, बड़े - बड़े मुल्लाओं और मौलवियों का बहुत आदर करता था, उनके घर जाता था, उनमें से कुछ के सामने कभी - कभी उनकी जूतियां तक सीधी करके रख देता था । वह - साम्राज्य के मुकदमों का निर्णय शरअ और मुल्लाओं के फतवे के अनुसार किया करता था, फकीरों और शेखों के साथ बहुत ही निष्ठा पूर्वक - व्यवहार किया करता था और उनकी कृपा तथा आशीर्वाद से लाभ उठाया करता था ।

मुहम्मद हुसैन लिखते है कि - " अजमेर में, जहां ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है, अकबर प्रति वर्ष जाया करता था । यदि कोई युद्ध अथवा और कोई आकांक्षा होती या संयोग वश उस मार्ग से जाना होता, तो वर्ष के बीच में भी वहां जाता था । एक पड़ाव पहले से ही पैदल चलने लगता था । कुछ मन्नतें ऐसी भी हुई जिनमें फतहपुर या आगरे

---

१ - अकबरी - दरबार हिन्दी अनुवादक रामचन्द्र वर्मा - पहला भाग पृष्ठ ६७.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से ही अजमेर तक पैदल गया । वहां जाकर दरगाह में परिक्रमा करता था और हजारों लाखों रुपयों के चढ़ावे और भेंटे चढ़ाता था । पहरों सच्चे दिल से ध्यान किया करता था और दिल की मुरादें मांगता था । - फकीरों आदि के पास बैठता था, निष्ठा पूर्वक उनके उपदेश सुनता था। ईश्वर के भजन और चर्चा में समय बिताता था । धर्म संम्बन्धि बातें सुनता था और धार्मिक विषयों की छानबीन करता था । विद्वानों, गरीबों फकीरों आदि को धन - सामग्री और जागीरें आदि दिया करता था । जिस समय कव्वाल लोग धार्मिक गजलें गाते थे, उस समय वहां रुपयों और अशर्फियों आदि की वर्षा होती थी ।" या हादी "" या मुईन" का पाठ वहीं से सीखा था । हर दम इसका जप किया करता था और सब को आज्ञा थी कि इसी का जप करते रहें ।" २ तत्कालीन इतिहास लेखक बदायूंनी के अनुसार भी हमें पता चलता है कि अकबर दिन में न केवल पांच बार नमाज ही पढ़ता था बल्कि वह राज्य, धन - दौलत और मान - प्रतिष्ठा प्रदान करने की भगवान की अपार अनुकम्पा के प्रति - कृतज्ञताप्रकट करने के निमित्त प्रतिदिन प्रातः काल ईश्वर का चिन्तन - करता था और" या - हू या - हादी " का ठीक मुसलमानी ढंग से उच्चारण करता था ।" ३ वह मुसलमान धार्मिक पुरुषों का सत्संग लाभ करता था और प्रत्येक वर्ष अजमेर में ख्वाजा मुइनद्दीन चिश्ती की दरगाह की भक्ति - भाव से यात्रा करता था । वह इस्लाम का पक्का अनुयायी था और इस्लाम की बुराई या निन्दा करने वालों को कठोर दण्ड भी देता था । मक्का मदीना की तीर्थ यात्रा में विश्वास करता था और अपने परिवार के सदस्यों तथा सम्बन्धियों को राजकीय व्यय से हज के लिये भेजता था ।

- -

२ अकबरी-दरबार हिन्दी अनुवादक -रामचन्द्र वर्मा पहला भाग पृ० ६८

3 - Al-Badaoni Trans. by W.H. Lowe Vol. II P. 203.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकबर ने मसजिदों का निर्माण करवाया और हिन्दुओं से जजिया तथा यात्रा कर भी वसूल किये । यद्यपि इस अवधि में अकबर मध्य युग के सच्चे मुसलमान सम्राट का प्रतिरूप था, किन्तु वह कटटर और धर्मान्ध नहीं था और न ही उसने हिन्दुओं पर धार्मिक अत्याचार किये क्योंकि धार्मिक कटटरता के लिये तो वह स्वभावत: प्रतिकूल था । १५६१ तक उसने कोई धार्मिक सुधार नहीं किये क्योंकि शासन प्रबन्ध पूर्ण रूप से बैराम खां के अधीन था । इस लिये वह धार्मिक कार्य करने और नीति अपनाने के लिये स्वतंत्र नहीं था । जैसे जैसे उसके साम्राज्य का विस्तार होता गया उसका धार्मिक विश्वास भी दिन पर दिन बढ़ता गया । शेख सलीम चिश्ती के कारण वह प्राय: फतहपुर में रहता था । महलों से अलग पास ही एक पुरानी सी कोठरी थी उसके पास पत्थर की एक सिल पड़ी थी, वहां तारों की छांव में अकेला जा बैठता था । प्रभात का समय ईश्वराराधन में लगाता था, बहुत ही नम्रता और दीनता से जप करता था तथा ईश्वर से दुआयें मागता था । लोगों के साथ भी प्राय: धार्मिकता और आस्तिकता की ही बातें करता था । यहीं से उसकी धार्मिक नीति का विकास प्रारम्भ होता है ।

धार्मिक नीति के विकास का क्रमिक वर्णन -

अकबर सत्य धर्म को जानने का इच्छुक था और हिन्दू - मुसलिम भेद - भाव मिटाना चाहता था इसके लिये उसने जो उदार धार्मिक नीति अपनाई उसका क्रमिक विकास इस प्रकार से है -

१राजपूत राजकन्याओं से विवाह :-

सन् १५६२ ईस्वी के जनवरी महिने में अकबर ख्वाजा मुइनुद्दीन - चिश्ती की यात्रा के लिये अजमेर गया । रास्ते में दौसा गांव में "अम्बे" (जयपुर की पुरानी राजधानी) के राजा बिहारीमल ने अपनी बड़ी लड़की हरकू बाई को अकबर के साथ ब्याह देना स्वीकार कर लिया ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकबर अजमेर से सीधा आगरा गया और यहां से वापिस आकर सांभर में उसने ६ फरवरी १५६२ को हरकू बाई से विवाह कर लिया । हिन्दू - लड़की के साथ यह उसका पहिला ही ब्याह हुआ था । इसके बाद अन्य राजपूत राजकन्याओं से भी उसके विवाह हुए । इन विवाहों से अकबर के शासन और धार्मिक नीति में परिवर्तन हुआ । धर्म - जाति और वंश के भेद - भाव को मिटा कर हिन्दू - मुसलिम कटुता को दूर करने की नीति यहीं से प्रारम्भ होती है । राजपूतों और मुगलों के पारस्परिक संघर्ष का तो अन्त होने ही लगा था पर अकबर भी हिन्दू रानियों के प्रभाव से हिन्दू धर्म की ओर आकृष्ट हुआ । उसने अपनी रानियों को धार्मिक संस्कारों, विधियों और पूजा पाठ करने की स्वतंत्रता दे दी ।

२ - आध्यात्मिक चेतना का उदय -

सन् १५६२ ई० में ही यानि जब अकबर बीस वर्ष का हुआ तब प्रजा की असली हालत जानने के लिये उसने फकीरों और साधु - सन्तों का सहवास करना शुरु किया । यह ठीक भी है कि निष्पक्ष, त्यागी फकीरों और साधुओं के जरिये प्रजा की असली हालत अच्छी तरह से मालुम हो सकती है । साधुओं से मिल कर जैसे वह प्रजा की असली हालत जानने की कोशिश करता था वैसे ही वह आत्मा की उन्नति के - साधनों का भी अन्वेषण करता था । अकबर ने कहा है कि -" On the Completion of my twentieth year, I experienced an internal bitterness & from the lack of spiritual provision for my last journey, my soul was seized with exceeding sorrow" 4 इस तरह बीस वर्ष की आयु पूरी करने पर, यह सोच कर कि परलोक यात्रा के लिये धार्मिक जीवन नहीं बिताया उसे अत्यधिक दुःख हुआ । इसी समय उसे एक और आध्यात्मिक अनुभव हुआ । वह कहता है कि -

---

4- Ain-i-Akbari Trans. by H.S. Jarrett Vol. III P. 433.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

One night my heart was weary of the burden of life, when suddenly between sleeping and waking a strange vision appeared to me, & my spirit was some what comforted."5

इन विचारों से उसके हृदय में यह भाव अंकुरित हो गया कि जाति-धर्म रहन - सहन के भेद - भाव का विचार किये बिना सभी वर्गों के लोगों की निःस्वार्थ सेवा से बढ़कर ईश्वर को प्रसन्न करने का अन्य कोई मार्ग नहीं है ।

२ - युद्ध बन्दियों को मुसलमान बनाने का निषेध :-

अकबर की इस नवीन भावना का प्रथम ठोस परिणाम यह हुआ है कि उसने अपने बीसवे जन्म दिन (१० अप्रैल १५६२ ई०) को एक - नवीन आज्ञा प्रसारित की, जिसके अनुसार युद्ध बन्दियों को गुलाम बनाने तथा उन्हें बल पूर्वक इस्लाम स्वीकार कराने की मनाही कर दी गयी । 6 इससे पहले विजीत सेनाएँ लोगों के स्त्री - बच्चों को दास बना लिया - करती थी । बन्दी हिन्दू सैनिकों की पत्नियां, बच्चों और सम्बवन्धियों का उपयोग करने के लिये इन्हें मुसलिम अधिकारियों को सौंप दिया जाता था । यह प्रथा इसलाम धर्मानुमोदित मानी जाती थी । बादशाह ने ईश्वर - भक्ति से और दूरदर्शिता तथा सद् विचार से प्रेरित होकर आदेश दिया कि उसके साम्राज्य से विजयी सेना का कोई सैनिक ऐसा काम नही करेगा । सैनिक चाहे छोटा हो या बड़ा उसको किसी को कभी दास बनाने का अधिकार नहीं था । अबुल फजल लिखता है कि बादशाह ने समझा कि स्त्रियों और निरपराध बच्चों को दण्ड देना अन्याय है । यदि पुरुष धृष्टता का मार्ग ग्रहण करते हैं तो इसमें उनकी पत्नियों का क्या दोष है । यदि पिता बादशाह का विरोध करते है तो उनके बच्चों

- -

5- Ain-i-Akbari Trans. by H.S. Jarrett. Vol. III P.435

6- Akbarnama Vol. II. P.P. 159-60.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ने क्या अपराध किया है । इसके अतिरिक्त सैनिक लोग लोभ वश गांवों को आक्रमण करके लूट लिया करते थे । जब इस विषय में आदेश दिया गया तो यह प्रथा बन्द हुई ।" ७ इस प्रकार युद्ध बन्दियों को स्वतंत्रता पूर्वक अपने घर और परिवार वालों के पास जाने की अनुमति दे दी गयी।

४ तीर्थ - यात्रा कर का निषेध -

भारत वर्ष में शासक लोग उन हिन्दुओं से कर लिया करते थे, जो पवित्र स्थानों की यात्रा करने के लिये आते थे । यह कर यात्रियों के धन और पद के अनुसार लिया जाता था और कर्मी कहलाता था । अबुल फजल के अनुसार इससे करोड़ों रुपयों की आमदनी होती थी । सन् १५६३ में अकबर चीतों के शिकार के लिये मथुरा गया । जब वह अपने केम्प में था तो उसे बताया गया कि जो हिन्दू यात्री यहां आते हैं उनसे यात्रा कर लिया जाता है और यह तीर्थ यात्रा कर अथवा कर्मी हिन्दुओं के सभी पवित्र स्थानों पर तीर्थ यात्रियों से लिया जाता है । यह अनुचित और अन्याय युक्त था । अकबर ने अनुभव किया कि हिन्दुओं की आराधना - करने के ढंग पर उनसे धन मांगना या उनकी आराधना में रुकावट डालना अनुचित है । बादशाह ने अपनी बुद्धिमत्ता और उदारता से प्रेरित होकर यह कर बन्द कर दिया । उसने समझा कि इस प्रकार धन संग्रह करना - पाप है । अकबर ने कहा" जो लोग अपने पूजनकर्ता ईश्वर की पूजा के लिये तीर्थ स्थानों पर एकत्रित होते हैं, उनसे कर वसूल करना ईश्वर की इच्छा के सर्वथा विरुद्ध है, चाहे उनकी पूजा की विधी पृथक ही क्यों न हो । फल स्वरूप अकबर ने अपने सम्पूर्ण साम्राज्य में तीर्थ - यात्रा कर वसूल न करने के आदेश प्रसारित कर दिये ।" ८ पिछले समय में लोभ या

---

७ अकबर नामा - हिन्दी अनुवादक - मथुरालाल शर्मा पृष्ठ २२१

८ - Akbarnama. Vol. II P. 190.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

या कटटरता के कारण शासक लोग ईश्वर के भक्तों से ऐसा कर लेते थे। अबुल फजल लिखता है कि "बादशाह प्राय: कहा करता था कि चाहे कोई गलत धर्म के मार्ग पर चलता हो परन्तु यह कौन जानता है कि - उसका मार्ग गलत ही है। ऐसे व्यक्ति के मार्ग में बाधा उत्पन्न करना उचित नहीं है।" ६

तीर्थ - यात्रा कर की समाप्ति अकबर की धार्मिक उदारता और सहिष्णुता का ज्वलन्त उदाहरण है। करोड़ों रुपयों की आय होने पर भी उसने केवल अपनी धार्मिक सहिष्णुता के कारण इसे समाप्त कर दिया।

५ जजिया कर का उन्मूलन -

जजिया की उत्पत्ति भारत में कब से हुई ? इसका यद्यपि निश्चित समय निर्धारित नहीं किया जा सकता है तथापि कुछ विद्वानों का कहना है कि आठवीं शताब्दी में मुसलमान बादशाह कासिम ने भारतीय प्रजा पर यह कर लगाया था। पहिले तो उसने आर्य प्रजा को इस्लाम ग्रहण करने के लिये विवश किया। आर्य प्रजा ने अटूट धन - दौलत देकर - अपने आर्य धर्म की रक्षा की। फिर हर साल ही वह प्रजा से रुपया वसूल करने लगा, प्रति वर्ष जो द्रव्य वसूल किया जाता था, उसका नाम जजिया था। कुछ काल पश्चात् यहां तक हुक्म जारी हो गये थे कि आर्य प्रजा के पास खाने पीने के बाद जो शेष धन माल बचे वह सभी जजिया के रूप से खजाने में दाखिल करवा दिया जाये। फरिश्ता के शब्दों में कहें तो "मृत्यु तुल्य दण्ड देना ही जजिया का उद्देश्य था। ऐसा दण्ड देकर भी आर्य प्रजा ने अपने धर्म की रक्षा की थी। स्मिथ ने इस कर के बारे में लिखा है कि - "The Tex had been originally

---

६ अकबरनामा - हिन्दी अनुवादक मथुरालाल शर्मा पृष्ठ २४२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

institutied by the Khalif Omar, who fixed it in three grades of 48, 24 and 12 dirhams respectively." 10

इसवी सन् की चौदहवी और पन्द्रहवी शताब्दी में भी फिरोज शाह - तुगलक ने कानून बनाया था कि गृहस्थों के घरों में जितने बालिग मनुष्य हो उनसे प्रति व्यक्ति धनियों से ४० सामान्य स्थिति वालों से २० और गरीबों से १० टांक जजिया प्रति वर्ष लिया जाय । आगे भी यानि जिस सोलहवी शताब्दी की हम बात कहना चाहते है उसमें भी यह जजिया - मौजूद था । यह कर हिन्दू धर्म पर इस्लाम की श्रेष्ठता को प्रदर्शित करता था जो हिन्दुओं के लिये लज्जा जनक था ।

सिंहासन पर बैठते ही पहले वर्ष अकबर के मन में जजिया माफ कर देने का विचार उठा था । पर उस समय उसकी युवावस्था थी । कुछ तो लापरवाही और कुछ अधिकार के अभाव के के कारण उस समय कर समाप्त न हो सका ।

१५६२ में अकबर के हाथ में सर्व सत्ता आ गयी थी । अत: अकबर ने सर्वस्वीकृत इस्लामी रिवाजों की उपेक्षा करके मुसलमान मंत्रियों और पदाधिकारियों तथा कट्टर मुसलिम नेताओं व उलमाओं के कड़े विरोध के बावजूद १५ मार्च १५६४ को जजिया कर की समाप्ति के आदेश प्रसारित कर दिये और सम्पूर्ण साम्राज्य में जजिया कर बन्द कर दिया गया । ११ बड़े बड़े मुल्लाओं और मौलवियों को इससे बड़ी आपत्ति हुई लेकिन अकबर ने कहा कि " प्राचीन काल में इस सम्बन्ध में जो निश्चय हुआ था, उसका कारण यह था कि उन लोगों ने अपने विरोधियों की हत्या करना और उन्हें लूटना ही अधिक उपयुक्त समझा था । --- इसी लिये उन्होंने एक कर बांध दिया और उसका नाम जजिया रख दिया । अब हमारे प्रजा - पालक और उदारता आदि के कारण दूसरे धर्मों के अनुयायी भी हमारे

10 - Smith : Akbar the great Mogul. P. 66.

11 - Akbarnama. Vol. II P.P. 203-4.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सह धार्मियों की ही भांति हमारे साथ मिल कर हमारे लिये जान देते हैं, वे सब प्रकार से हमारा भला चाहते हैं और सदा हमारे लिये जान देने को तैयार रहते हैं। ऐसी दशा में यह कैसे हो सकता है कि हम उन्हें अपना - विरोधी समझ कर अप्रतिष्ठित करें और उनका नाश करें। --- जजिया लेने का प्रमुख कारण था कि पहले के साम्राज्यों का प्रबन्ध करने वालों के पास धन और सांसारिक पदार्थों की कमी रहती थी और वे ऐसे उपायों से अपनी आय की वृद्धि करते थे। अब राजकोष में हजारों लाखों रुपये पड़े है, बल्कि साम्राज्य का एक - एक सेवक आर्थिक दृष्टि से आवश्यकता से अधिक सुखी है। फिर विचार शील और न्यायी मनुष्य कौड़ी कौड़ी चुनने के लिये अपनी नियत क्यों बिगाड़े। एक कल्पित लाभ के लिये प्रत्यक्ष हानि करना ठीक नहीं आदि - आदि बाते कह कर जजिया रोका - गया।" १२

इसकी समाप्ति का समाचार जब घर घर पहुंचा तो सब लोग अकबर को धन्यवाद देने लगे। जरा सी बात ने लोगों के दिलों और जानों को मोल ले लिया। यदि हजारों आदमियों का रक्त बहाया जाता और - लाखों आदमियों को गुलाम बनाया जाता तो भी यह बात नहीं हो सकती थी। अबुल फजल लिखता है कि" जजिया बंदरगाह का महसूल, यात्री कर अनेक प्रकार के व्यवसायों पर कर, दरोगा की फीस, तहसीलदार की फीस, बाजार का महसूल, विदेश - यात्रा कर, मकान के क्रय विक्रय का कर, शोरा पर कर --- सारांश यह है कि ऐसे तमाम कर जिनको हिन्दुस्तानी लोग सैर जिहात कहते हैं, बन्द कर दिये गये।" १३

---

१२ - अकबरी दरबार हिन्दी अनुवादक- रामचन्द्र वर्मा पहला भाग पृष्ठ १४४-४५

१३ - Ain-i-Akbari Vol. II. P. 62.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६ - गैर मुसलमानों को धार्मिक स्थान निर्मित करवाने की स्वतंत्रता -

विभिन्न अनुचित करों की समाप्ति के पश्चात् उसने पवित्र धार्मिक स्थानों पर लगे सब प्रतिबन्धों को निरस्त कर दिया । फलत: हिन्दू - सामान्तों और राजपूत सरदारों ने अपने मंदिर, देवालय तथा ईश्वर के विभिन्न अवतारों के पवित्र देव स्थान बनवाने प्रारम्भ कर दिये । राजा मानसिंह ने अत्यन्त सुन्दर और भव्य भवन निर्मित करवाये - एक तो वृन्दा -वन में गोविन्द दास का लाल पत्थर का विशाल पांच मंजिला मंदिर - और दूसरा वाराणसी में । उसने सिक्खों के गुरु रामदास को एक भूमि खण्ड जीवन निर्वाह के लिये दिया । इसी भूमि खण्ड में गुरु रामदास ने जल का छोटा तालाब खुदवाया और तब से यह स्थान अमृतसर (अमृत का तालाब) कहा जाता है । अमृत सर में सिक्खों ने एक गुरुद्वारा भी बनवाया । मुनि हीरविजय के प्रभाव और मुनि भानुचन्द्र के प्रयत्नों से अकबर ने हीरविजय के नाम दो फरमान प्रथम १६ नवम्बर १५६० को और दूसरा १५६२ में प्रसारित किये । इनके द्वारा जैन समाज को शासन की ओर से कुछ विशेष सुविधाएं दी गयी । सन् १५६० के फरमान में गुजरात के सूबेदार को यह आदेश दिया गया कि उस राज्य में किसी को भी जैन मंदिरों में हस्तक्षेप न करने दिया जाय, उनके जीर्णोद्धार में कोई बाधा न डाले तथा अजैन उनमें निवास नहीं करे । सन् १५६२ के फरमान के अनुसार - मालवा गुजरात, लाहौर, मुलतान, बंगाल तथा कुछ अन्य प्रान्तों के - सूबेदारों को यह आदेश दिया गया कि सिद्धाचल, गिरनार, तारंगा, केशरियानाथ, आबू, गिरनार और राजगिरि के जैन तीर्थ स्थानों और मंदिरों की पहाड़ियों को तथा बिहार और बंगाल में जैनियों के तीर्थ स्थानों व इन पहाड़ियों की तलहटी के सभी निवास स्थानों को जैनियों को सोप दिया जाय ।"[14] जैनियों ने उज्जैन में एक जैन मंदिर निर्मित

---

१४ कमिसारियट : हिस्ट्री ऑफ गुजरात खण्ड २ पृ० २३३,३५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किया । अकबर ने ईसाइयों को खम्भात, लाहौर, हुगली और आगरा में गिरजाघर निर्मित करने की अनुमति दे दी । इन स्थानों पर धीरे धीरे राजकीय व्यय से गिरजा घर बनवाये गये । सन् १५९९ में अकबर की अनुमति से आगरा में गिरजा घर बनवाया गया ।

७ - गैर मुसलमानों की साम्राज्य के उच्च पदों पर नियुक्ति -

अकबर ने इस आधार भूत सिद्धान्त को समझ लिया था कि सभी मतों और धर्मों का जनक ईश्वर है और इस लिये सारा मानव समाज ईश्वर के पुत्र के समान होने से जन्म से ही मनुष्य समान अधिकार रखते है इन विचारों के कारण अकबर का शासन और राजत्व का सिद्धान्त - अत्यन्त उदार, सहिष्णु और व्यापक बन गया ।

शासन सत्ता अपने हाथ में लेते ही अर्थात १५६२ के प्रारम्भिक - महीनों में ही टोडरमल, मानसिंह, भगवन्त दास, बेनीचन्द्र, बीरबल, जयमल कछवाहा आदि को अकबर ने अपने राज्य की सेवा में उच्च पदों पर नियुक्त कर लिया था । राजस्व विभाग में उसने [illegible] के टोडरमल के अतिरिक्त अनेक हिन्दू कर्मचारी और अधिकारी नियुक्ति किये । इससे दोनों के भेद - भाव की खाई पटने लगी । अकबर की यह नीति बहुत कुछ अबुल फजल के विचारों से भी प्रभावित हुई । अबुल फजल लिखता है कि - "राजपद ईश्वर का एक उपहार है, और यह तब तक प्रदान नहीं किया जा सकता जब तक कि एक व्यक्ति में हजारों महान गुणों और विशेषताओं का समन्वय न हो जाये । इस महान पद के लिये जाति, धन - सम्पत्ति तथा लोगों की भीड़ भाड़ ही काफी नहीं है । वह इस महान पद के लिये तब तक योग्य नहीं है, जब कि वह सर्वजनिक शांति और - सहिष्णुता पैदा न करें । यदि वह मानवता की सभी जातियों और धर्म सम्प्रदायों को एक आंख से नहीं देखता, और कुछ लोगों के साथ माता का सा और कुछ के साथ विमाता का सा व्यवहार करता है, तो वह इतने

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महान पद के लिये योग्य नहीं हो सकता ।" १५ उसका स्वयम् का भी विश्वास था कि राजा को प्रत्येक धर्म और जाति के प्रति पूर्ण सहिष्णु होना चाहिये । इन्ही विचारों से प्रेरित होकर उसने शासन में उच्च पदों पर नियुक्ति करने में हिन्दू - मुसलमानों के विभेद को समाप्त कर दिया । यहां तक कि मनसबदारों में भी हिन्दू नियुक्त किये गये । एक सहस्त्र - सैनिकों के १३७ मनसबदारों ने १४ मनसबदार हिन्दू थे, २०० अश्वारोहियों के ४१५ मन सबदारों में ५१ मनसबदार हिन्दू थे । साम्राज्य के विभिन्न प्रदेशों के १२ दीवानों में ८ दीवान हिन्दू थे । राजा मानसिंह स्वयम् सात हजार सैनिकों का मनसबदार था । बदायूंनी लिखता है कि - "हिन्दुओं के मुकदमें फैसले करने के लिये उसने (अकबर ने) हिन्दू न्यायाधीश की नियुक्ति की ।" १६, उसका विचार था कि राजा को न्याय प्रिय और निष्पक्ष होना चाहिये । इस लिये उसने बिना किसी भेद भाव के सभी वर्गों और सम्प्रदायों के व्यक्तियों के साथ समान न्याय और निष्पक्ष व्यवहार के सिद्धान्त को अपना लिया । हिन्दुओं पर कुरान के नियमों और इस्लाम के कानूनों के अनुसार शासन करने की नीति त्याग दी गयी ।

८ - हिन्दू मुसलमानों की संस्कृति व कला के आदान प्रदान के प्रयास -

अकबर ने मिले जुले विद्यालय और उच्च शिक्षा की ऐसी संस्थाओं को प्रोत्साहित किया जहां हिन्दू और मुसलिम दोनों वर्गों के विद्यार्थी शिक्षा पा सकते थे । उसने बालकों की शिक्षा के लिये मसजिदों के साथ मकतबों को (प्राथमिक शालाएें) स्थापित किया । मकतबों के साथ - साथ हिन्दू पाठशालाओं और संस्कृत के विद्यालयों का निर्माण करवाया । इसी समय से हिन्दू फारसी का विशेष अध्ययन करने लगे । हिन्दुओं

15- Akbernama Vol. II. P. 421

16 - Al-Badaoni Vol. II P. 376

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के धार्मिक ग्रन्थों और प्रथम श्रेणी के संस्कृत ग्रन्थों का फारसी में अनुवाद करने के लिये अनुवाद विभाग खोला गया । विद्या विजयजी लिखते है - "अकबर साहित्य का पूरा शौकीन था । साहित्य में धर्मशास्त्रों और ज्योतिष, वैद्यक आदि समस्त विद्याओं का समावेश हो जाता है । अकबर सब में रुचि रखता था, इसी लिये अथर्ववेदक, महाभारत, रामायण, हरिवंश पुराण तथा भास्कराचार्य की लीलावती और इसी तरह के दूसरे खगोल तथा गणित विद्या के ग्रन्थों का फारसी में अनुवाद करवाया था । संगीत विद्या के सुनिपुण विद्वानों का भी उसने अपने दरबार में अच्छा सत्कार किया था । --- उसके दरबार में ५६ कवि थे । फैजी उन सब में श्रेष्ठ समझा जाता था । १४२ पंडित और चिकित्सक थे । उनमें ३५ हिन्दू थे । संगीत विशारद सुप्रसिद्ध गायक तानसेन और बाबा रामदास भी - अकबर की ही सभा के चमकते हुए हीरे थे ।" १७

उसके समय में मुसलमान कवियों ने हिन्दी साहित्य में कविताऐं की । कुछ मुसलमानी कवियों ने तो हिन्दू संस्कृति का ऐसा सफल वर्णन किया है कि अगर उनके नाम उनके ग्रन्थों से हटा लिये जाये तथा उन ग्रन्थों को अन्य हिन्दू लेखकों की कृतियों में मिला दिया जाये तो पहचानना सम्भव हो जायेगा । इस क्षेत्र में अब्दुल रहीम खान खाना तथा रसखान का नाम सर्वोच्च है ।

अकबर ने स्थापत्य कला के क्षेत्र में हिन्दू और मुसलमान दोनों कला - शैलियों का सुन्दर समन्वय किया । स्थापत्य कला में अकबर की यह नीति उसके द्वारा निर्मित फतेहपुर सीकरी के भवनों दीवान - ए - खास, मरियम का महल, तुर्की सुलतान का महल, जोधा बाई का महल, पंच महल, आगरे के किले में जहांगीरी महल, लाहौर और इलाहाबाद के किले आदि भवनों में अभिव्यक्त हुई है । चित्रकला तथा संगीत कला के क्षेत्र में भी अकबर ने हिन्दू मुसलिम समन्वय करवाया । उसके दरबार में हिन्दू मुसलिम दोनो ही संगीतज्ञ थे ।

१७ - सूरीश्वर और सम्राट अकबर हिन्दी अनुवाद कृष्णलाल वर्मा पृ० २४३-४४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस तरह अकबर ने शासन के प्रत्येक क्षेत्र में हिन्दू मुसलिम सामन्जस्य स्थापित करने का प्रयास किया ।

६. इस्लाम के सिद्धान्तों का प्रमाणिक ज्ञान प्राप्त करने के प्रयास -

एक ओर तो अकबर ने हिन्दुओं पर लगे अनेक अनुचित प्रतिबन्ध - हटाये और हिन्दू मुसलिम एकता स्थापित करने का यथा शक्ति प्रयास - किया किन्तु साथ ही साथ दूसरी ओर वह सत्य धर्म की खोज में लगा ही रहा । वह इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों का प्रमाणिक ज्ञान प्राप्त करना चाहता था । इसके लिये उसने शेख अब्दुलन्नबी और मखदूम - उल - मुल्क अब्दुल्ला सुलतानपुरी जैसे विद्वान मुल्लाओं की शर्गिर्दी की । सन् १५७४ तक वह इनके प्रभाव में रहा । इस वर्ष तक वह इस्लाम के नियमों का पालन दृढ़ता से करता रहा । बदायूंनी का भी मत है कि सन् १५७५ तक सम्राट अकबर नियमित रूप से नमाज पढ़ता रहा और सलीम चिश्ती जैसे प्रसिद्ध मुसलिम पीरों के मकबरों के दर्शन करने भी कई बार गया । वह अपने युग के प्रसिद्ध मौलवियों का भी उचित सम्मान करता रहा । अकबर ने शेख अहमद के पुत्र शेख अब्दुन्नबी को मुख्य सद्र (धर्म व दान मंत्रि) नियुक्त किया और वह सन् १५७८ तक इसी पद पर रहा । सद्र को धर्माचार दान तथा न्याय विभागों का अध्यक्ष रखा गया । अकबर अब्दुलनबी के घर - हदीस (मुहम्मद साहब के कथन) पर बातें सुनने जाया करता था । कई बार तो सम्मान और श्रद्धा प्रकट करने के उद्देश्य से अकबर ने अब्दुलनबी के जूते भी स्वयम् उठा कर उसके सामने रखे थे । " १८ - पर रूढ़िवादी सुन्नी धर्म उसे पूर्ण सन्तोष नहीं दे सका था अत: वह शिया धर्म की ओर उन्मुख हुआ । उसने शिया धर्म के प्रमुख मुल्ला याजदी को अपना मित्र बनाया । याजदी ने उसे शिया धर्म के सिद्धान्त समझाये

- -

(१८) Al-Badaoni - Vol. II Trans. by W.H.Lowe P. 207.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और उसे शिया बनाने का भरसक प्रयत्न किया, पर वह भी उसके उदार हृदय को आकर्षित नहीं कर सका । इसके बाद वह सूफी मत की ओर झुका । सूफी विद्वान शेख मुबारक तथा उनके दोनों पुत्र फैजी व अबुल फजल तथा अन्य सूफी विद्वान मिर्जा सुलेमान ने उसे सूफी मत से अवगत करा कर सूफी सम्प्रदाय की ओर आकर्षित किया ।

१०. इबादत खाने की स्थापना और इस्लाम धर्म पर वाद विवाद -

उन समस्त सम्प्रदायों का गहन ज्ञान प्राप्त करने के लिये अकबर ने फरवरी मार्च १५७५ में फतेहपुर सीकरी में इबादत खाना अथवा प्रार्थना गृह बनवाया । अकबर अपने मुसलमान दरबारियों तथा उल्माओं के साथ यहाँ आकर सभा करता था । इस प्रकार सत्य का विकास होने लगा । धार्मिक सभाएँ रात - रात भर और कभी - कभी दूसरे दिन प्रात: काल और दोपहर तक चलती थी जिससे पता चलता था कि किसमें तर्क है ? कल्पना है ? और बुद्धि है ? इन सभाओं में दर्शन, धर्म, कानून और सांसारिक सभी प्रकार के विषयों और समस्याओं पर चर्चाएँ होती थी ।

मखदूम - उल - मुल्क की उपाधि से विभूषित शेख अब्दुल्ला सुल्तानपुरी, काजी याकूब, मुल्ला बदायूंनी, हाजी इब्राहीम, शेख मुबारक अबुल - फजल आदि प्रमुख विद्वान इनमें भाग लेते थे । इन विचार - गोष्ठियों में विशेष गुण, बुद्धि व प्रतिभा प्रदर्शित करने वालों को अकबर सोने चांदी के सिक्के देकर पुरस्कृत करता था ।" १६ किन्तु धीरे धीरे इन धार्मिक और दार्शनिक चर्चाओं के समय, शेखों, सैयदों और उल्माओं की असहनशीलता, अनुशासनहीनता, सामान्य बुद्धि का अभाव अनुदार, साम्प्रदायिकता, धर्मान्धता, अभद्रता, तथा अहंकार का खुला प्रदर्शन होने लगा । इस्लाम के नियमों के तर्क सम्मत और वास्तविक अर्थ दे सकने का उनमें जो अभाव था, वह प्रदर्शित हो गया । मखदूम - उल - मुल्क और

१६ - Akbarnama - Vol. III. P.P. 112-13.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अब्दुन्नबी इस्लामी धर्म शास्त्र सम्बन्धित सैद्धान्तिक प्रश्नों पर परस्पर लड़ बैठे ।

मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूंनी ने वे सब पुस्तकें पढ़ी थी जिन्हें पढकर लोग विद्वान हो जाते है । जो कुछ गुरुओं ने बतला दिया था, वह सब उन्हें अक्षरश: याद था पर फिर भी धार्मिक आचार्य होना और बात है । आचार्य का काम यह है कि जहां कोई आयत या मंत्र न हो, या कहीं किसी प्रकार का संदेह हो या किसी अर्थ के सम्बन्ध में मतभेद हो वहां वह बुद्धि से काम लेकर निर्णय करें लेकिन मुल्ला बदायूंनी में ये सब बाते नहीं थी । इसी तरह शेख अबुल फजल की कसौटी में तर्कों की क्या कमी थी । और उनकी ईश्वर दत्त प्रतिभा के सामने किसी की क्या सामर्थ्य । जिस तर्क को चाहा चुटकी में उड़ा दिया । विद्वानों में विरोध का मार्ग तो खुल ही गया था । थोड़े ही दिनों में यह नौबत हो गई कि धार्मिक सिद्धान्त तो दूर रहें जिन सिद्धान्तों का सम्बन्ध केवल विश्वास से था, उन पर भी आक्षेप होने लगे और हर बात में तुर्रा यह है कि - साथ में कोई तर्क और प्रमाण भी हो । यदि तुम अमुक बात को मानते हो तो इसका कारण क्या है ? इस तरह अविश्वास बढ़ते बढते इबादत खाने में तीन विरोधी दल हो गये । एक मखदूम उल - मुल्क की उपाधि से विभूषित शेख अब्दुल्ला सुलतानपुरी के निर्देशन में और दूसरा अब्दुन्नबी के नेतृत्व में । ये कट्टर सुन्नी मुसलमानों के दल थे उल्माओं के ये दोनों नेता आपस में एक दूसरे को बुरा भला कह कर झगड़ते थे । मखदूम - उल - मुल्क ने अब्दुन्नबी पर खिज्र खां सरवानी और मीर हब्श को उनके धार्मिक विश्वासों के लिये अन्याय से मरवा डालने का आरोप लगाया । तीसरा दल इब्राहीम शेख मुबारक और उसके पुत्र फैजी व अबुल फजल तथा नवीन लोगों का था । ये तीनों भी परस्पर कुफ्र और बेइज्जती की बाते करते थे । धर्मान्ध सुन्नियों ने शेख मुबारक पर धर्म भ्रष्ट होने और नवीन - धार्मिक पद्धति चलाने का दोषारोपण कर उसे मृत्यु दण्ड दे दिया पर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वह बच कर भाग गया । इस पर अबुल फजल ने इन सुन्नियों के गुट की भ्रांतिया, उनकी कथन - करनी में भेद आदि को उदाहरणों से स्पष्ट किया और अब्दुन्नबी की पोल खोलना शुरू किया । उसने बताया कि अब्दुन्नबी ने हाजियों को दिया जाने वाला धन स्वयम् ले लिया और यह फतवा दिया कि हज करने से पुण्य के स्थान पर पाप होगा, क्योंकि मक्का जाने के दोनों मार्ग संकट ग्रस्त है । इन सभाओं में एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिये विलक्षण प्रश्न किये जाते थे । मौलाना मुहम्मद हुसैन लिखते हैं कि " हाजी इब्राहीम सरहिन्दी बड़े झगडालू और चकमा देने वाले व्यक्ति थे उन्होंने एक दिन सभा में मिरजा मुफिलिस से पूछा कि " मूसा " शब्द सीगा २० (क्रिया का वचन, पुरुष आदि) क्या है और उसकी व्युत्पत्ति क्या है ? मिरजा यद्यपि विद्या और बुद्धि की सम्पत्ति से बहुत संपन्न थे, पर इस प्रश्न के उत्तर में मुफलिस ही निकले बस फिर क्या था । सारे शहर में धूम मच गई कि हाजी ने मिरजा से ऐसा प्रश्न किया जिसका वे कोई उत्तर ही न दे सके और हाजी ही - बहुत बड़े विद्वान हैं । उसी अवसर पर एक दिन अकबर ने काजी जादा लश्कर से कहा कि तुम रात को सभा में नहीं आते । उसने निवेदन किया कि हुजूर आऊं तो सही पर यदि वहां हाजी जी मुझ से पूछ बैठे कि - " ईसा " का सीगा क्या है तो मैं क्या जबाब दूंगा ? यह दिल्लगी बादशाह को बहुत पसन्द आई थी । २१ तात्पर्य यह है कि इस प्रकार के विरोध झगड़े और आत्माभिमान आदि की कृपा से बहुत से तमाशे देखने में आये । इसी प्रकार की एक अन्य घटना बदायूंनी लिखता है कि -

---

(२०) इसमें असम्बद्धता यह है कि सीगा केवल क्रिया में होता है संज्ञा में नहीं होता, और " मूसा " संज्ञा है ।

(२१) अकबरी - दरबार - हिन्दी अनुवादक रामचन्द्र वर्मा पहला भाग पृष्ठ क्र० ७२-७३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

"यह सुनने पर कि हाजी इब्राहीम ने पीली और लाल रंग की पोशाकें पहनने को न्याय संगत घोषित करते हुए फतवा दिया है, मीर आदिल सैयद मुहम्मद की उपस्थिति में उसे धूर्त और मक्कार कहा और उसे मारने के लिये अपना डन्डा भी उठा लिया। २२ इस प्रकार के झगड़ों से कट्टर इस्लाम में अकबर का विश्वास हिल गया।

इस्लाम धर्म के प्रति अकबर का दृष्टिकोण -

इबादतखाने में इस्लामी व सूफी विद्वानों के इस प्रकार के उत्तर दायित्व शून्य व्यवहार, इस्लाम की तात्विक दृष्टि से विवेचना करने की असमर्थता तथा इन लोगों के व्यक्तिगत स्वार्थों को देख कर अकबर खीझ उठा। उसने मुल्ला बदायूंनी को गाली देने वाले या हाथापाई करने वाले व्यक्तियों की रिपोर्ट करने का भार दिया और घोषणा की कि भविष्य में जिन लोगों में ऐसे दोष होंगे और जो उद्दण्डता - करेंगे, उनको इबादत खाने से निकाल दिया जायेगा। इबादतखाने में ऐसे अशिष्ट, संकीर्ण, धर्मान्ध, उद्दण्ड और उत्तर दायित्वहीन व्यवहार तथा अनवरत झगड़ों से अकबर बहुत ही खिन्न हो गया था। १५७८-७९ के बाद अकबर के मन में इन विद्वान उलमाओं के चरित्र और धर्म के प्रति किंचित भी श्रद्धा नहीं रही थी। उसने अनुभव कर लिया था कि इन उलमाओं में जिन पर कि बुद्धि का सिर्फ क्लेवरा ही है, सत्य को खोजने और जानने की पिपासा नहीं है। उसने इस्लाम के विद्वानों में ही भेद भाव, संकीर्णता और कटुता पाई। अत: धीरे - धीरे इस्लाम पर से उसका विश्वास उठने लगा। विद्या विजयजी लिखते है कि --- जब मुसलमानी धर्म पर से उसकी श्रद्धा हट गई और जब उस पर वह नाराज हुआ था तब साफ - साफ लफजों में वह कहने लगा था कि -" जिस मुहम्मद ने दस बरस की छोकरी आयेशा के साथ ब्याह किया था

---

२२ - AL-Badaoni. Trans. by W.H.Lowe Vol. II P. 214.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और जिसने खास अपने दत्तक पुत्र की स्त्री जैनाब के साथ - जिसको उसके पति ने तलाक दे दी थी - ब्याह कर लिया था । वही - ऐसा अनाचार करने वाला मुहम्मद कैसे पैगम्बर - परमेश्वर का दूत हो सकता है । २३

अब अकबर की धार्मिक नीति के विकास का नया दौर प्रारम्भ हुआ । अभी तक तो इबादत खाना केवल मुसलमान विद्वानों और उल्माओं के लिये ही खुला हुआ था । वे ही वहां वाद विवाद करते थे किन्तु इबादत खाने में हुए इस वाद विवाद का परिणाम यह निकला कि जब उल्मा, शेख, सैयद और अन्य विद्वान इस्लाम के सिद्धान्तों को स्पष्ट करने में असमर्थ रहे तब अकबर ने १५७८ से इबादतखाने में हिन्दुओं, पारसियों, जैनियों, ईसाइयों के धार्मिक आचार्यों और विद्वानों को धार्मिक गोष्ठियों, वाद विवाद और विचार विमर्श के लिये आमंत्रित करने का संकल्प किया ।

-0- -0- -0- -0-

- -

(२३) सूरीश्वर और सम्राट अकबर - हिन्दी अनुवादक कृष्ण लाल वर्मा - पृष्ठ - ७७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विभिन्न धर्माचार्यों से सम्पर्क, खुतबा व महजर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकबर का विभिन्न धर्माचार्यों से सम्पर्क, खुतबा व महजर -

शिया और सुन्नियों के पारस्परिक गरमागरम वाद - विवाद, हीन आरोप - प्रत्यारोप तथा द्वेष पूर्ण संघर्ष के कारण मुसलमानी धर्म पर से अकबर की रुचि हट गई। पर फिर भी वह यही चाहता था कि किसी प्रकार उसे धार्मिक तत्व की बाते मालूम हों। फलत: उसने ३ अक्टूबर १५७८ को हिन्दू, जैन, ईसाई, यहूदी, सूफी, पारसी विद्वानों एवं सन्तों के लिये इबादतखाने का द्वार खोल दिया। इस समय धार्मिक वाद - विवाद व गोष्ठियों में भाग लेने वाले विद्वानों में अबुल फजल के अनुसार सूफी दार्शनिक वक्ता, विधि ज्ञाता, सुन्नी, शिया, ब्राह्मण, जति, सिवड़ा, चारवाक, ईसाई, यहूदी, साबी (ईसाईयों का एक सम्प्रदाय) पारसी और अन्य लोग सम्मिलित हुए। (१) अब हम यह देखेंगे कि अकबर की धार्मिक नीति के विकास में इन विभिन्न धर्मों ने क्या सहयोग दिया :-

अकबर और हिन्दू धर्म -

अकबर की प्रकृति हिन्दुओं के उदार आदर्श वाद से बच नहीं सकती थी। राजपूतों के प्रति जो हिन्दुओं का एक लड़ाकू वर्ग था, उसकी नीति के विषय में इससे पूर्व ही लिखा जा चुका है। हिन्दी के प्रसिद्ध कृष्ण भक्त और सन्त सूरदास से अकबर ने बहुत लम्बे समय तक धार्मिक, चर्चाएँ की और उनके संगीत से प्रभावित हुआ। अकबर को सब बातें - जानने का शौक था। इस लिये उसने इनकी ओर प्रवृत्त होने का और अधिक प्रयास किया। मोहम्मद हुसैन लिखते है कि - सत्य का अन्वेषक

---

(१) अकबर नामा - हिन्दी अनुवादक मथुरालाल शर्मा पृष्ठ ४७२.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बादशाह गौतम नामक एक ब्राह्मण पंडित को, जिससे आरम्भ में सिंहासन बत्तीसी का अनुवाद कराया गया था, प्राय: बुलवा कर बहुत सी बाते पूछा और जाना करता था । महल के ऊपरी भाग में एक कमरा था, जो ख्वाबगाह (शयनागार) कहलाता था । अकबर उसकी खिड़की में बैठता था और एकान्त के समय देवी नामक ब्राह्मण को जो महाभारत का अनुवाद कराया करता था, एक चारपाई पर बैठा कर रस्सियों से ऊपर खिंचवा लिया करता था । इस प्रकार वह ब्राह्मण अधर में लटकता रहता था, न जमीन पर रहता था । और न आसमान पर । अकबर उससे अग्नि सूर्य, गृह, प्रत्येक देवी और देवता, ब्रह्मा, विष्णु, महेश और कृष्ण व राम आदि की पूजाओं के प्रकार और मंत्र आदि सीखा करता था और हिन्दुओं की धार्मिक सिद्धान्त तथा पौराणिक कथाएँ आदि बहुत ही - ध्यान और शौक से सुना करता था और चाहता था कि हिन्दुओं के सभी धार्मिक ग्रन्थों के अनुवाद हो जाये ।" २

बीरबल ने अकबर को सूर्य और नक्षत्रों की पूजा करने का परामर्श दिया और कहा कि मनुष्य के काम में आने वाले फल - फूल, घास पात आदि सब पदार्थ सूर्य ही के प्रताप से उत्पन्न होते है । अंधकार को दूर कर जगत में प्रकाश फैलाने वाला भी सूर्य ही है । अत: सूर्य की उपासना करनी चाहिए । उसे यह परामर्श दिया गया कि वह अपने सिंहासनारोहण का दिवस इसी नौरोज के दिन मनाये । १५७७ में वह वृन्दावन में विट्ठलेश्वर से भेंट करने गया । वहां पर उनकी पवित्रता, अलौकिक - व्यक्तित्व, अनुपम भक्ति और ज्ञान से अत्याधिक प्रभावित हुआ ।

हिन्दू धर्माचार्यों का अकबर पर प्रभाव :-

हिन्दू धर्माचार्यों के प्रवचनों से अकबर को हिन्दुओं के देवी देवताओं और अवतारों के प्रति श्रद्धा हो गयी थी और हिन्दुओं के प्रमुख त्योहारों

- -

२ अकबरी दरबार - पहला भाग हिन्दी अनुवादक रामचन्द्र वर्मा पृ०१३४-३५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रक्षा बन्धन, दशहरा, दीवाली व बसन्त आदि को वह बड़े उत्साह से मनाने लगा था। कभी - कभी वह अपने मस्तक पर हिन्दुओं की भांति तिलक भी लगाया करता था। हिन्दू राजाओं के विधान के अनुसार - उसने भी प्रति दिन प्रातः काल अपनी प्रजा को करोखों द्वारा दर्शन देना आरम्भ कर दिया था। अपनी माता हमीदा बानू बेगम की मृत्यु पर हिन्दुओं की भांति ही सिर मुडवा कर शोक मनाया।

बदायूंनी लिखता है कि अकबर ने अपने पुत्र सलीम का विवाह हिन्दू प्रथा के अनुसार ही किया। विवाह के अवसर पर वह स्वयम् दुल्हे सलीम की बारात लेकर, जिसमें अमीर व दरबारी शामिल थे, दुल्हन के पिता राजा भगवन्त दास के निवास स्थान पर गया। वहां सभी अमीरों व सरदारों के सामने हिन्दू प्रथा के अनुसार अग्नि प्रज्वलित करके उसके चतुर्दिक फेरे लगा कर प्राणि ग्रहण की रस्म पूरी की गयी थी और दुल्हन के विदा होने के समय उसके निवास स्थान से लेकर राजमहल तक उसकी पालकी वारों और पूरे मार्ग में सोने की मुहरें अशर्फियां हर्ष और उल्लास में बिखेरी गयी थी। (3) फतेहपुर सीकरी में दीवान - ए - खास में विष्णु स्तम्भ पर अकबर अपना सिंहासन रख कर बैठता था। यह उस वैष्णव परम्परा का प्रभाव है, जिसके अन्तर्गत राजा को पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता है।

अकबर ने स्वयम् ब्राह्मणों से पूजा - पाठ की विधियांऔर मंत्र - सीखे। वह रात्रि के समय सूर्य के एक सहस्त्र नाम माला पर जपा करता था। बीरबल के अनुरोध पर बादशाह सूर्य की पूजा करने लगा था। - बदायूंनी लिखता है कि - " A second order was given that the Sun should be worshipped four times a day, in the

---

3 - Al-Badaoni Trans. by W.H. Lode Vol. II. P. 341

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

morning & evening, at noon and midnight. His majesty had also one thousand & one Sanskrit names for the sun collected, & read them daily devoutly turning towards the Sun.4

मुगल हरम में हिन्दू रानियाँ और परिचारिकाओं के रहने से - अकबर ने मुगल राज महलों में अनेक हिन्दू प्रथाएँ अपनाली थी । धार्मिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिये ब्राह्मणों को आमंत्रित किया जाता था । मुहम्मद हुसैन लिखते है कि नौरोज (नव वर्षारम्भ) के समय आनन्दोत्सव करना जो ईरान और तूरान की प्राचीन प्रथा है ही, पर उसने उसे भी हिन्दुओं की प्रथा का रंग देकर हिन्दू बना डाला । सौर और चान्द्र दोनों गणनाओं के अनुसार जब जब उसकी बरस गांठ पड़ती थी, तब तब उत्सव होता था । उस समय तुलादान भी होता था । --- पान के बीड़ों ने सब के मुंह लाल कर दिये । गोमांस, लहसुन, प्याज आदि अनेक पदार्थ हराम हो गये और बहुत से दूसरे पदार्थ हलाल हो गये । ५

हिन्दुओं के जीव हिंसा न करने के सिद्धान्त को अकबर ने अपना कर उसे कार्यान्वित किया । २६ मई १५८३ को उसने एक फरमान द्वारा - मथुरा, साहर, मंगोटा आदि हिन्दुओं के पवित्र तीर्थ स्थानों में मोर - मारने और सभी प्रकार के आखेट करने की मनाही कर दी । गौमांस का निषेध कर दिया गया और कहा गया कि जो कोई उसे खायेगा वह मारा जायेगा क्योंकि हिन्दू पंडितों ने यह कहा था कि गाय के मांस से अनेक प्रकार के रोग होते हैं, वह रद्दी और गरिष्ठ होता है इत्यादि-इत्यादि।

अकबर और पारसी धर्म :

जरदोस्त द्वारा प्रचलित धर्म पारसी लोगों ने अपनाया, जो कि जोरास्ट्रियन धर्म कहलाता है । उन दिनों नवसारी भारत में पारसी धर्म का प्रमुख केन्द्र स्थल था । नवसारी और सूरत में रहने वाले सभी पारसी

---

४ - Al-Badaoni- Trans. by W.H. Lowe Vol. II. P.332.

५ - अकबरी दरबार - पहला भाग हिन्दी अनुवादक रामचन्द्र वर्मा पृ० १२१-२२

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुरोहितों में मेहरजी राणा का प्रमुख स्थान था । मेहर जी ने इबादतखाने में होने वाली गोष्ठियों, प्रवचनों और वाद - विवाद में भाग लिया । व्यक्तिगभत भेटों के समय अकबर ने मेहर जी से पारसी धर्म के विभिन्न पहुलुवों पर चर्चा की । मेहर जी ने अकबर को पारसी धर्म के गुप्त आचरणों से परिचित कराया तथा उसके विशेष शब्दों, रीति, रिवाजों उत्सवों और सिद्धान्तों से अवगत कराया । उसने अकबर को पारसी धर्म के प्रवर्तक, जौरास्टर के किन्हाग्य चमत्कारों के विषय में, सूर्य, चन्द्र, अग्नि के प्रति श्रद्धा व भक्ति एक ईश्वर की पूजा, पवित्र, सत्य, सुद्रेह, का पहनना कुश्तीं, नौरोज - ए - खास तथा नौरोज - ए - आम के विषय में समझाया । अकबर मेहर जी राणा के पारसी धर्म के सिद्धान्तों के प्रति पादन, उसके विचारों और जीवन की पवित्रता से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि उसने मेहर जी को नवसारी के समीप परचोल में रखी गांव में २०० बीघा जमीन माफी में जीवन निर्वाह के लिये दे दी । सन्१५६१ में दस्तूरजी राणा के निधन के बाद उनका पुत्र कैकुबाद १५६५ में अकबर के दरबार में गया । वहां उसनेसम्राट से भेंट की अकबर ने इससे प्रसन्न होकर १५६६ में उसे सौ बीघा भूमि और पुरुस्कार में दी कैकुबाद को यह भूमि सूरत जिले में तळरली परगने के तवरी गांव में प्राप्त हुई ।

पारसी धर्म का अकबर पर प्रभाव :

दस्तूर मेहर जी राणा के सत्संग और उनके प्रवचनों, विचारों तथा पारसी धर्म के सिद्धान्तों से अकबर इतना अधिक प्रभावित हुआ कि उसने पारसी धर्म के कुछ सिद्धान्तों, रीति - रिवाजों व परम्पराओं को अपना लिया था । पारसी विधान के अनुसार राजमहल में पवित्र अग्नि प्रज्वलित की गयी । बदायूँनी लिखता है कि -"" महल के पास ही एक अग्नि मंदिर बनवाया गया था । अबुल फजल की देख रेख में

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उसमें बराबर अग्नि जलती रहती थी । उसे आज्ञा दी गई थी कि उसमें की अग्नि कभी बुझने न पावे, क्योंकि यह ईश्वर की सब से बड़ी देन और उसके प्रकाशों में से एक मुख्य प्रकाश है । ६ पारसियों के समान - अकबर अग्नि में चन्दन डाल कर उसके सामने प्रार्थना भी करता था । और उसके प्रति बड़ी श्रद्धा रखता था । मुहम्मद हुसैन लिखते हैं कि सन् २२ - जलूसी में अकबर ने निस्संकोच भाव से अग्नि को प्रणाम किया । ७ - अग्नि पंथ या पारसी धर्म में अकबर की निष्ठा एक घटना से स्पष्ट हो जाती है । यह घटना सन् १६०३ में घटित हुई । अकबर मध्यान्ह के बाद अपने शयन कक्ष में विश्राम करने का अभ्यस्त था । एक सन्ध्या को वह अपने शयन कक्ष में विश्राम करने का समय से आज्ञा से पूर्व ही बाहर निकल आया । पहले उसे वहां कोई नौकर दिखाई नहीं दिया । पर जब वह सिंहासन और कोच के समीप आया तब उसने शासकीय मशालची को कुंडली मारे शाही कुर्सी के समीप मौत की सी नींद सोये हुए देखा । इस दृश्य से क्रोधित होकर अकबर ने उसे मीनार से नीचे फेंक देने की आज्ञा दी । इससे उसके कई टुकड़े होकर उसका प्राणांत हो गया । ८ सन् १५८० से उसने सूर्य के सामने साष्टांग दण्डवत करना प्रारम्भ कर दिया था । पारसी धर्म की एक अन्य प्रथा के अनुसार जब शाम को दीपक जलाये जाते थे तो अकबर स्वयम् और उसके दरबारी प्रकाश के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिये - खड़े हो जाते थे क्योंकि अकबर का कहना था कि - " To light a Candle is to Commemorate the (rising of the) Sun. To whomsoever the Sun sets, what other remedy hath he but this. 9

---

६ Al-Badaoni Trans. by W.H. Lowe Vol. II. PP 268-69

७ अकबरी दरबार पहला भाग हिन्दी अनुवादक रामचन्द्र वर्मा पृ० १२६

८ Smith : Akbar the great mogul. P. 164.

६ Ain-i-Akbari Trans. by H.S. Jerrett. Vol. III 443.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकबर ने पारसियों की पवित्र सुद्रेह या सदरी और कुश्ती भी धारण कर ली थी। सदरी और कुश्तरी पहन कर वह अपने दरबारियों में राजसिंहासन पर बैठता था। पादरियों के त्योहारों और पवित्र - दिनों को भी अकबर ने मनाना प्रारम्भ कर दिया था। १५८२ से उसने पारसियों के नव - वर्ष व चौदह त्योहारों को अपनाना प्रारम्भ कर दिया था। इन चौदह त्योहारों का विवरण हमें आइन - ए - अकबरी में मिलता है। पारसियों के ये चौदह त्योहार इस प्रकार से हैं : 1.19th of Earvardin, 2. 3rd of Ardibehesht 3.6thof Khurdan 4. 13th of Tir. 5. 7th of Amardad 6. 4th of Shehrivar 7.6th of Meher 8. 10th of Avan. 9. 9th of Adar.10.8th of Deh 11. 15th of Deh. 12.23rd of Deh. 13.2nd of Behman.14.5th of Aspanndarmad.10"

लेकिन इससे यह नहीं समझ लेना चाहिये कि अकबर पूर्ण रूपेण उनके धर्म में दीक्षित हो गया था। वह तो प्रत्येक धर्म की सत्यता जानना चाहता था। इस लिये उसने पारसी धर्माचार्यों से उनके धर्म के सिद्धान्तों और परम्पराओं का ज्ञान प्राप्त किया।

अकबर और जैन धर्म : अबुल फजल ने आइन - ए - अकबरी में दरबार में रहने वाले विद्वानों का वर्गीकरण किया है। प्रथम वर्ग में वे लोग थे जो कि दोनों लोको का रहस्य जानते थे। दूसरे वर्ग में मन और हृदय के ज्ञाता थे, तीसरे वर्ग में धर्म और दर्शन शास्त्र के ज्ञाता, चौथे वर्ग में दार्शनिक तथा पांचवे वर्ग में वे लोग थे जो कि परीक्षणों तथा पर्यालोचनों पर आश्रित विज्ञान के जानने वाले थे। इन सम्पूर्ण वर्गों में अबुल फजल ने तीन जैन विद्वानों के नाम गिनाये है। इनमें आचार्य श्री हीरविजयसूरि तो प्रथम वर्ग में थे और विजयसेन सूरि तथा भानुचन्द्र उपाध्याय पांचवे वर्ग

10- Ain-i-Akbari Vol. I Trans. by Blochman 276.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में थे ।" १७

हीरविजय जी ने अकबर को धर्म का सच्चा स्वरूप समझाया कि संसार में अज्ञानी मनुष्य जिस धर्म का नाम लेकर लड़ते है वास्तव में वह धर्म नही है । धर्म वह है जिससे अन्त: करण की शुद्धि होती है । इसी तरह उन्होने अकबर को जैन धर्म के सिद्धान्तों परम्पराओं, नैतिक आचरण के नियमों तथा उत्सवों का ज्ञान कराया ।

यद्यपि अकबर ने गददी पर बैठने के नौ वर्ष बाद अपने राज्य में से "जजिया" उठा दिया था, जिसका उल्लेख हम कर आये हैं तथापि गुजरात से यह जजिया नही हटा था क्योंकि उस समय गुजरात अकबर के - अधिकार में नहीं आया था । इस लिये सूरिजी ने अकबर से अनुरोध किया कि आप अपने राज्य से "जजिया" उठा दीजिये और तीर्थों में यात्रियों से जो कर लिया जाता था उसे बन्द करने के लिये भी अनुरोध किया - क्योंकि इन दोनों करों से जन साधारण को बहुत ज्यादा कष्ट उठाना पडता था । सूरि जी के अनुरोध से अकबर ने उसी समय दोनो करों को उठा देने के फर्मान लिख दिये । हीरविजय सूरि की तरह शान्तिचन्द्र जी को भी बादशाह बहुत मानता था । इस लिये उनके आग्रह से बादशाह ने एक ऐसा फरमान निकाला जिसकी रूह से बादशाह का जन्म जिस महीने में हुआ था उस सारे महीने में, रवीवार के दिनों में, संक्रान्ति के दिनों में, और नवरोज के दिनों में कोई भी व्यक्ति जीव हिंसा ना करे । करे ।" १८ शान्ति चन्द्र जी के प्रभाव से ही अकबर ने अपने तीन लड़कों सलीम, मुराद और दानियाल का जन्म जिन महीनों में हुआ था, उन - महीनों में भी जीवहिंसा निषेध का फर्मान निकाला ।

- -

१७ - Aim-i-Akbari Trans. by H.Blochmann- Vol.I. P.607- 617

१८ - सूरीश्वर और सम्राट अकबर - हिन्दी अनुवादक - कृष्णलाल वर्मा पृष्ठ १४५.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उस समय सिद्धाचल की यात्रा करने के लिये जाने वालों से कर लिया जाता था। भानुचन्द्र जी के अनुरोध से अकबर ने वह कर बन्द कर दिया और इसका फर्मान लिख कर हीरविजय सूरी जी के पास भेज दिया। भानुचन्द्र जी की विद्वता और गहन अध्ययन के कारण अकबर ने उन्हें उपाध्याय की पदवी से विभूषित किया।" १३

जिनचन्द्र सूरी ने भी बादशाह पर अच्छा प्रभाव डाला था। उनके उपदेश से बादशाह ने आषाढ़ सुदी ६ से १५ तक सात दिन तक कोई जीव हिंसा न करें इस बात का फर्मान निकाला और उसकी एक एक नकल अपने ग्यारह प्रान्तों में भेज दी।

विजय सेन सूरी ने भी बादशाह को हीरविजय सूरी की भांति ही आकर्षित किया था। उन्होंने बादशाह को उपदेश देकर अनेक कार्य करवाये। बादशाह ने विजय सेन सूरी की इच्छानुसार सिन्धु नदी में - और कच्छ के जलाशयों में जिनमें मछलियां मारी जाती थी, चार महीने तक जाल डालना बन्द करके वहां की मछलियों के प्राण बचाये। गायों, बैलों व भैसों का मारना बन्द किया, (युद्ध) में किसी को कैद नहीं करना स्थिर किया और मृतक मनुष्य का कर लेना रोक दिया।" १४

जैन धर्माचार्यों तथा मुनीयों का अकबर पर प्रभाव :

अब तक जो बातें लिखी गई है उनसे यह स्पष्ट हो चुका है कि जैन मुनियों ने अकबर पर प्रभाव डाल कर जनहित, धर्म रक्षा तथा जीव दया के अनेक कार्य करवाये थे। जैनियों के कर्मवाद, सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों से अकबर स्थायी रूप से प्रभावित हुआ। मनुष्य या पशु की हिंसा न करने के जैन सिद्धान्त में अकबर की गहरी आस्था हो गयी थी। अकबर ने समस्त मुगल राज्य में यह ढिंढोरा पिटवाया कि कोई

---

१३ - सुरीश्वर और सम्राट अकबर - हिन्दी अनुवादक कृष्णलाल वर्मा पृ० १५४
१४ - ,, ,, ,, ,, ,, पृ०१६५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भी व्यक्ति एक वर्ष में ६ महीने और ६ दिन तक जीव हिंसा न करें। उन दिनों में स्वयं बादशाह भी मांसाहार नहीं करता था। इस बात को अन्यान्य जैनेतर लेखकों ने भी माना है। अकबर का सर्वस्व गिना जाने वाला शेख अबुल फजल लिखता है कि" वह (अकबर) आयु की लागणियों का कुछ अंशों में पालन करता हुआ भी शनैः शनैः मांसाहार - छोड़ने का इरादा रखता है। वह बहुत दिन तक प्रत्येक शुक्रवार और पश्चात् रविवार के दिन मांसाहार का परहेज करता रहा था। अब प्रत्येक सौर महीने की प्रतिपाद को, रविवार को, सूर्य और चन्द्र ग्रहण के दिनों में सौर मास के प्रत्येक त्यौहार में, फरवरदीन के महीने में, दो उपवासों के बीच के दिनों में, रजब महीने के सोमवारों में और बादशाह जन्मा था उस सारे महीने में यानी सारे अबान महीने में मांसाहार नहीं करता है।" १५

अकबर ने स्वयम् कहा है कि -" Men should annualy refrain from eating meat on the anniversary of the month of May accession as a thanksgiving to the almightly in order that the year may pass in prosperity." 16

जैन धर्म के प्रभाव से अकबर ने निश्चित रूप से साम्राज्य में जीव हिंसा का अन्त नहीं तो उसे कम करने का, उसकी तीव्रता और बर्बरता को कम करने का प्रयास अवश्य किया था। पांच पांच सौ चिड़ियों की जीभें जो नित्य प्रति खाता था, मृगादि पशुओं का जो नित्य शिकार करता था, वही मुसलमान बादशाह जैन साधुओं के उपदेश से इतना दयालु हो गया था। जैन साधुओं के इस महत्व को बदायूंनी भी स्वीकार करता है। वह लिखता है कि -" सम्राट अन्य सम्प्रदायों की अपेक्षा श्रमणों

15- Ain-I-Akbari Trans. by H.Blochmann Vol. I PP. 61-62.

16- -do- Trans. by H.S.Jarrett. Vol.III P. 446.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(जैन साधुओं) और ब्राह्मणों से एकान्त में विशेष रूप से मिलता था उनके सहवास में विशेष समय बिताता था । वे नैतिक, शारीरिक, धार्मिक और आध्यात्मिक शस्त्रों में धर्मोन्नति की प्रगति में और मनुष्य जीवन को सम्पूर्णतया प्राप्त करने में दूसरे समस्त (सम्प्रदायों) - विद्वानों और पंडित पुरुषों की अपेक्षा हर तरह से उन्नत थे । वे अपने मत की सत्यता और हमारे (मुसलमान) धर्म के दोष बताने के लिये बुद्धि पूर्वक परम्परागत प्रमाण देते हैं । वे ऐसी दृढ़ता और युक्ति से अपने मत का समर्थन करते थे कि उनका कल्पना तुल्य मत स्वतः सिद्ध प्रतीत होता है । उसकी सत्यता के विरुद्ध नास्तिक भी कई शंका नहीं उठा सकता था ।" १७

अकबर पर जैनधर्म का इतना अधिक प्रभाव देख कर कुछ लोग तो उसे जैनी समझने लगे थे लेकिन जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि वह तो प्रत्येक धर्म की सत्यता जानना चाहता था । इस लिये इबादतखाने में होने वाली विचार गोष्ठियों में उसने जैन धर्माचार्यों को आमंत्रित - किया । वाद विवाद में उसे जैन धर्म में जो अच्छाइयां दिखाई दी उन्हें उसने अपना लिया । इसके साथ साथ यह भी अविस्मरणीय है कि जन-कल्याण के कार्य, पवित्र तीर्थ स्थानों की सुरक्षा आदि जैन और हिन्दू दोनो धर्मों के सामूहिक प्रभाव का सुफल था ।

अकबर और ईसाई धर्म :

ईसाई धर्म के गूढ़ रहस्यों को समझने के लिये व अकबर ने गोवा से ईसाई पादरियों को आमंत्रित करने का निश्चय किया ।

गोवा से प्रथम जेसुइट मिशन :

पुर्तगाली ईसाई पादरियों का जो प्रथम शिष्ट मण्डल १५८० में -

17- AL-Badaoni Trans. by W.H. Lowe Vol. II. P. 264.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फतेहपुर सीकरी आया उसके तीन सदस्य थे - रुडोल्फ एक्वाविवा, एण्टनी मांसरेट, और फ्रांसिस हेनरीक्वेज । ३ मार्च १५८० को अकबर ने दीवान - ए - खास में इनका सम्मान किया । इस समय पर पादरियों ने अकबर को बाइबिल की एक प्रति सात जिल्दों वाली भेंट की । स्मिथ लिखता है कि अकबर ने बड़ी श्रद्धा से इस बाइबिल को ग्रहण किया । उसने इस बाइबिल की प्रत्येक जिल्द को अपनी पगड़ी उतार कर सिर पर रख कर उसका सम्मान किया और हाथों में लेकर निष्ठा पूर्वक उनको चूमा भी[18] पादरियों ने ईसामसीह को ईश्वर का पुत्र बताया और ईसाइयों को अवतार वाद तथा त्रियेकता की व्याख्या की । उन्होंने पुनरुत्थान, अन्तिम न्याय, पवित्र आत्मा, पवित्र भोज, अनुग्रह और विश्वास, ईसा के देवत्व की बाह्य साक्षी आदि अन्य विषयों पर विशुद्ध विवेचन किया और इन पर अकबर की शंकाओं का निराकरण किया ।

प्रथम ईसाई मिशन के पादरियों की धारणा थी कि उनके प्रभाव से अकबर ईसाई मत स्वीकार कर लेगा । परन्तु उनके सतत प्रयत्नों के बाद भी वे ईसाई धर्म के प्रचार में निराश हो गये और अकबर को ईसाई बनाने में असफल रहे । अतः अपने प्रयत्नों में असफल होने पर वे निराश होकर गोआ लौट गये ।

गोवा से द्वितीय जेसुइट मिशन :

एडवर्ड लियोटन और क्रिस्टोफर डी वेगा नामक दो पुर्तगाली पादरी १५९१ में लाहौर पहुंचे । इन पादरियों ने सम्राट से भेंट के समय ईसाई धर्म के सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला । इन्होंने लाहौर में एक पाठशाला स्थापित की जिसमें अकबर के पुत्र(मुराद और दानियाल) एक पौत्र खुसरो तथा अन्य अमीरों और सामन्तों के लड़के पुर्तगाली भाषा पढ़ते थे । कुछ समय बाद इन पादरियों ने अनुभव किया कि अकबर को वास्तव

18- Smith : Akbar the Great Mogul. P. 175.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में ईसाई धर्म के विषय में सुनने का एक कौतुहल था, श्रद्धा नहीं । अत: निराश होकर पहले के समान दूसरा शिष्ट मण्डल भी वापिस लौट गया ।

गोवा से तृतीय जेसुइट मिशन :

सन् १५९४ में अकबर ने तीसरी बार गोवा के पुर्तगाली वायसराय को विद्वान ईसाइयों का एक शिष्ट मण्डल भेजने के लिये एक आर्मिनियन ईसाई को पत्र देकर भेजा । एस० आर० शर्मा लिखते है कि" इस काम के लिये सेन्ट फ्रांसीस जेवियर के भाई का पोता पादरी जेरोम जेवियट - पादरी इमेनुअल पिनहेरो और ब्रदर बेनेडिक्ट डी गोज को चुना गया । ये तीनों ही अपने अपने क्षेत्र में बड़े योग्य थे ।" १९

यह मिशन ५ मई १५९५ में लाहोर पहुचां । ये लाहोर और उसके आस पास के क्षेत्र में ईसाई धर्म का प्रचार करते थे तथा हिन्दुओं और मुसलमानों को ईसाई बनाते थे । एस. आर. शर्मा के अनुसार - जब अकबर मई में काश्मीर गया तो वह अपने साथ पादरी जेवियट और ब्रदर गोज को भी ले गया । ये लोग वहां नवम्बर सन् १५९७ तक ठहरे । जब ये लोग वहां थे तो काश्मीर की घाटी में एक बड़ा दुर्भिक्ष पड़ा और पादरी ने बहुत से अनाथ बच्चों को, जिन्हें गलियों में मरने के लिये छोड़ दिया गया था, ईसाई धर्म में दीक्षित किया ।" २०

ईसाई धर्म का अकबर पर प्रभाव :

अकबर सभी धर्मों के प्राचार्यों, सन्तों, विद्वानों और नेताओं के प्रति अत्यन्त उदार एवं सहिष्णु था । ईसाइयों के शिष्ट मण्डलों के प्रति भी वह शिष्ट, विनय शील, उदार और सहिष्णु था । ईसाई धर्म के सिद्धान्तों से पूर्ण परिचय प्राप्त करने का उत्कृष्ट अभिलाषी होने के

19- एस. आर. शर्मा - हिन्दी अनुवाद मथुरालाल शर्मा (भारत मेंमुगल साम्राज्य) पृ० २३६

20 - ,, ,, ,, ,, पृ० २३७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कारण अकबर ने इन पादरियों के प्रति न केवल श्रद्धा और शिष्य भाव का ही प्रदर्शन किया अपितु ईसाइयों के ईसामसीह और मेरी आदि की मूर्तियों के प्रति भी यथेष्ट श्रद्धा प्रकट की । इन पादरियों के गिरजाओं में भी अकबर प्राय: आया जाया करता था । पादरियों की प्रार्थना के समय कुछ दरबारियों के साथ गिरजा घर में जाकर मेरी तथा ईसामसीह के चित्रों को साष्टांग प्रणाम करता था । अकबर ने पादरियों को एक अस्पताल स्थापित करने की अनुमति दे दी थी । उन्हें अपने धार्मिक और सांस्कृतिक संस्कार व समारोह मनाने की भी स्वतंत्रता थी । किसी ईसाई के देहावसान के बाद उसके शव को ईसाई धर्म की परम्परानुसार क्रासों और मोमबत्तियों सहित, जुलूस में नगर में से ले जाने की अनुमति दे दी थी । जेसुइट पादरियों ने मुगल दरबार में अपना एक कालेज अथवा मठ भी स्थापित कर लिया था । इन ईसाई पादरियों को उच्च श्रेणी के अतिथी मानते हुए अकबर ने इन्हें प्रत्येक प्रकार की सुख सुविधाएँ ही प्रदान नही की बल्कि इनके आने जाने तथा अन्य प्रकार के सारे खर्चों को भी स्वयम् उठाया ।

अकबर के ऐसे आतिथ्यपूर्ण व्यवहार तथा ईसाई धर्म के प्रति - इतनी जिज्ञासा देख कर ईसाई मिशनरी यह समझने लगे कि वह ईसाई धर्म स्वीकार करने की ओर अग्रसर हो रहा है और इसी धारणा के आधार पर इन लोगों ने गोआ और लिसबन में अपने उच्च अधिकारियों को अतिरंजित समाचार भेजने शुरु कर दिये । जैसे-सम्राट ने सारे साम्राज्य में से इस्लाम धर्म की समाप्ति कर दी है और मसजिदों को अस्तबलों में परिवर्तित कर दिया है । जब कि वास्तविकता यह थी कि तर्क प्रिय होने के कारण अकबर किसी ऐसे धर्म में विश्वास ही नही कर सकता था, जो कि इलहाम तथा सत्ता पर आधारित था ।

-0-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खुतबा व महजर

इबादतखाने में मुस्लिम उलमाओं के वाद विवाद से और ईर्ष्या द्वेष तथा आरोप प्रत्यारोप से अकबर इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि सत्य का इन धार्मिक झगड़ों से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस लिये उसने एक ओर तो इबादत खाने के द्वार हिन्दू, जैन, पारसी व ईसाई सन्तों के लिये खोले तो दूसरी ओर अपने आपको कट्टर धर्मांध मुल्लाओं के हानि कारक प्रभाव से स्वतंत्र करने का निश्चय किया। इस हेतु उसने दो दृढ़ कदम उठाये - एक तो खुतबा पढ़ना और दूसरा अभ्रान्त आज्ञा पत्र अथवा महजर प्रसारित करना।

खुतबा पढ़ना :

मुख्य इमाम के पद को ग्रहण करने के लिये तथा उलमाओं के प्रभाव और महत्व को कम करने के लिये शुक्रवार, २२ जून १५७९ को फतेहपुर सीकरी की प्रमुख मसजिद की वेदी पर चढ़कर अकबर ने कवि फैजी द्वारा कविता में रचित निम्न लिखित खुतबा पढ़ा :

" उस अल्लाह के नाम पर जिसने हमें साम्राज्य प्रदान किया है,
जिसने हमें विवेकशील मस्तिष्क तथा शक्तिशाली भुजाएँ दी है,
जिसने हमें धर्म और न्याय की ओर प्रेरित किया है,
जिसने हमारे हृदय से धर्म और बुद्धि के अतिरिक्त सब कुछ
निकाल दिया है,
जिसके गुण मानवी समझ से परे हैं,
उसकी शान बढ़े - अल्ला - हु - अकबर।" २१

अकबर ने खुतबे के अन्त में जो "अल्ला - हु - अकबर शब्द पढ़े उसके दो अर्थ निकलते है। एक तो यह कि अल्लाह सब से बड़ा है और दूसरा

21- AL-Badaoni. Trans. by W.H. Lowe Vol. II P. 277.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकबर ही अल्लाह है । अकबर के जो विरोधी थे उन्होंने दूसरे अर्थ को सही माना और कट्टर धर्मांध मुसलमानों को अकबर के विरुद्ध भड़काना प्रारम्भ कर दिया । २२ लेकिन अकबर ने कहा कि वह " इमाम - ए - आदिल " है । इस्लामी विधान के अनुसार तो खलीफा और इमाम का पद एक ही व्यक्ति में सम्मिलित होना चाहिये, पर सुल्तानों की योग्यता व निर्बलता के कारण इमाम का पद उन्हें छोड़ना पड़ा । भारत के बाहर इस्लामी देशों में राज्य करने वाले सुल्तान व्दारा खुतबा पढ़ा जाना कोई नवीन बात नहीं थी, किन्तु भारत में अकबर व्दारा " खुतबा " पढ़ने और इमाम ए आदिल की उपाधि धारण करने से मुसलमानों के कट्टर, अनुदार व धार्मिक वर्ग में खलबली मच गई । कट्टर पंथी मुसलमान समझने लगे कि अकबर अतुलनीय दैवी सत्ता का पैगम्बर बनने का प्रयत्न कर रहा है । पर अकबर ने इस विरोध और आरोप की परवाह न की ।

महजर अथवा अभ्रान्त आज्ञा - पत्र :

सितम्बर १५७९ में फैजी और अबुल फजल के पिता शेख मुबारक ने बादशाह के कहने से महजर पेश किया जिसके व्दारा सारे देश में इस्लाम सम्बन्धि विवादों में अकबर को पंच फैसले का अधिकार दिया गया । इस प्रपत्र को मखदूम - उल - मुल्क, मुख्य सद्र अब्दुन्नवी, काजी जलालुद्दीन मुलतानी, गाजी खाँ बदख्शी, साम्राज्य के मुफती और प्रधान काजी शेख मुबारक तथा अन्य प्रसिद्ध प्रमुख धार्मिक नेताओं ने स्वीकार करते हुए उस पर अपने हस्ताक्षर किये । इस प्रपत्र का मूल रूप अधोलिखित है -

" क्योंकि हिन्दुस्तान अब शांति और सुरक्षा का केन्द्र तथा न्याय नीति का स्थान बन गया है, जिससे उच्च और निम्न वर्ग के लोगों और मुख्यत: अध्यात्म विद्या विशारद विद्वान लोग और वे लोग जो ज्ञान -

---

22- Akbarnama Vol. III P.P. 277-78.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विज्ञान का प्रचार विस्तार करते हैं तथा मुक्ति के मार्ग दर्शक बने हुए हैं, अरब और फारस से यहां आकर बस गये हैं । अब हम प्रमुख उलेमा, जो केवल कानून के विभिन्न अंगों के ही विशेषज्ञ और ज्ञाता नहीं, तर्क और प्रमाण पर आधारित नियमों से ही परिचित नहीं है, बल्कि अपनी सच्चाई और सदाशयता के लिये भी प्रसिद्ध है । प्रथम तो हमने कुरान की आयत " ईश्वर की और पैगम्बर की और उनकी जुम में, जिन्हें सत्ता प्राप्त है आज्ञा पालन करो । " दूसरे सच्ची परम्परा जो आदमी क्यामत के दिन खुदा का प्यारा होता है, वही असली नेता होता है, जो अमीर की आज्ञा का पालन करता है, वह मेरी आज्ञा का पालन करता है, और जो उसके प्रति विद्रोह करता है, वह मेरे प्रति विद्रोह करता है, सिद्धान्त का और तीसरे तर्क और प्रमाणों पर आधारित अन्य अनेक सबूतों का अच्छी तरह से मर्म समझ लिया है । और हम इस निश्चय पर पहुचे है कि न्याय प्रिय राजा का स्थान इश्वरीय दृष्टि में मुगज हिन्द (धार्मिक नेता) से कहीं ऊंचा होता है । "

" आगे हम यह घोषित करते है कि इस्लाम शाह का राजा, मानवता का आश्रय स्थल, स्वामिभक्तों का सेनापति, संसार में ईश्वर का स्वरूप, अबुल फजह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर, बादशाहे गाजी, सब से अधिक न्याय प्रिय और बुद्धि मान राजा है और उसे ईश्वर का ज्ञान प्राप्त है । "

इस लिये यदि भविष्य में ऐसे धार्मिक प्रश्न खड़े हो जिन पर मुजत हिन्दों की राये भिन्न भिन्न हो तो सम्राट अपनी सूक्ष्म दृष्टि और बुद्धिमत्ता के अनुसार सुव्यवस्था की दृष्टि से देश की भलाई के लिये इन विरोधी मतों में से किसी एक को स्वीकार करने की कृपा करेंगे, और यह मत ही उसकी सारी प्रजा पर लागू समझा जायेगा । "

यदि सम्राट कुरान के अनुसार तथा देश के हित में कोई नयी -

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आज्ञा जारी करना उचित समझेंगे तो सभी लोग उसे मानने के लिये बाध्य समझे जायेंगे। और इसका विरोध करने से इस लोक में धार्मिक अधिकार तथा धन सम्पदा से वंचित होना पड़ेगा तथा दूसरे लोक में कष्ट मिलेगा।

यह प्रपत्र विशुद्ध भावनाओं के साथ ईश्वर की कीर्ति और इस्लाम के प्रचार के लिये लिखा गया है और हम धर्म प्रमुख उल्माओं और प्रमुख धर्म शास्त्रियों ने ९८७ हिजरी के रजब महीने में इस पर हस्ताक्षर किये हैं।२३

उपर्युक्त प्रपत्रसे अकबर को यह अधिकार प्राप्त हो गया कि वह मुसलिम धर्मशास्त्रियों के विरोधी मतों में से किसी एक को स्वीकार करें तथा मतभेद विहीन मामलों पर किसी भी नीति को निर्धारित करें, बशर्तें कि वह कुरान विहीत न हो। इस प्रकार अब अकबर ने स्वयं वह अधिकार प्राप्त कर लिये जो अब तक उलेमाओं के और विशेष रूप से प्रमुख सदर के अधिकार माने जाते थे। अब से वह मुसलमान प्रजाजनों के लिये धार्मिक सत्ताधिपति भी बन गया।

अकबर के खुतबा पढ़ने से घोषणा पत्र प्रसारित करने से तथा सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता की नीति अपनाने से अनुदार मुसलमानों और उल्माओं ने अपना तीव्र असन्तोष प्रगट किया और यह दोष लगाया कि वह स्वयं में देवत्व का दावा करता है, अपने लिये ईश्वर के पैगम्बर का पद प्राप्त करना चाहता है।

पर ये आरोप निराधार हैं, क्योंकि अकबर ने कहा कि वह अपने में देवत्व का, ईश्वरीय अंश होने का दावा करने की कल्पना भी नहीं कर सकता। वह इस्लाम का अनादर भी नहीं करता था, अपितु उसके सत्य सिद्धान्तों के प्रति गहरी आस्था रखता था। सन् १५७५ से १५८० तक की इसी अवधि में अकबर ने प्रति वर्ष भारत से मक्का मदीना की तीर्थ यात्रा पर जाने वाले मुसलमान यात्रियों के कारवां की व्यवस्था -

---

२३ - Al-Badaoni. Trans. by W.H.Lowe Vol. II P.P.279-280

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजकोष से की । प्रति वर्ष वह एक प्रमुख अधिकारी को हज के यात्रियों की सम्भाल करने की व्यवस्था के लिये उनके साथ आने जाने के लिये - नियुक्त करता था । और उसे मीर हज या हाजी कहा जाता था । २४ महजर की घोषणा के बाद भी अकबर १४ अक्टूबर १५७६ को तीर्थ यात्रा के लिये और सन्त की मजार से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये अजमेर में ख्वाजा की दरगाह पर गया था । वापसी यात्रा में उसने नमाज के लिये एक विशेष डेरे या खेमे की व्यवस्था की । इसमें वह नमाज पढ़ता था, जैसा कि एक धर्म निष्ठ मुसलमान करता है । अजमेर के मजार की वह जियारत करता रहा । ३० जुलाई १५८० को अजमेर के ख्वाजा की बरसी होने से अकबर ने इस समय अपने पुत्र दानियाल को अपने प्रतिनिधि के रूप में अजमेर भेजा । वहां उसने बहुत सा धन गरीबों व फकीरों में बांटा२५

इन उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि अनुदार उल्माओं ने अकबर पर जो दोष लगाये थे, वे निराधार हैं ।

-0- -0-

24- AL-Badaoni Trans. by W.H.Lowe. Vol. III P.313.

25- AL-Badaoni Trans. By W.H.Lowe Vol. II P.P. 280-81.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकबर

और

दीन-ए-इलाही

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकबर और दीन - ए - इलाही

अकबर के धार्मिक विचारों की परिणति दीनइलाही में हुई। उसकी धार्मिक नीति के विकास और विस्तार का यह अन्तिम रूप था। अबुल फज्ललिखता है कि "जब सौभाग्य से ऐसा समय आता है कि - किसी राष्ट्र में सत्योपासना का भाव जाग्रत हो तो लोग अपने शासक की ओर देखेंगे क्योंकि अपने सर्वोच्च पद के कारण शासक ही उनका नेता हो सकता है। --- एक बादशाह इस लिए विभिन्न मतों में सामन्जस्य का तत्व देख सकता है और इसके विपरीत कभी - कभी साफ तौर से उसको एकत्व में विभिन्नता भी दिखाई दे सकती है। उसका पद बहुत विशिष्ट है। इस लिए वह हर्ष और शोक से परे है। अब समय यही बात वर्तमान युग के शासक (अकबर) पर लागू है। ---- वह राष्ट्र का धार्मिक नेता है और समझता है कि ऐसे कर्तव्य का पालन करना - ईश्वर को प्रसन्न करना है।" १

धार्मिक रूढियों और सत्ता से असन्तुष्ट होकर अकबर ने तर्क को ही धर्म का मूलाधार बताया और अपने साम्राज्य में प्रत्येक मत सम्प्र-दाय को धार्मिक स्वतन्त्रता और सहिष्णुता प्रदान की। धर्मांध व्यक्तियों द्वारा एक दूसरे के प्रति घृणा के भाव फैलाते देख अकबर को अत्यन्त क्लेश पहुंचता था। इसी धार्मिक विद्वेष को दूर करने के विचार से उसने सभी मतों का समन्वय करने का प्रयास किया और उसका नाम - "तवाहिदे इलाही" (दीन इलाही) अर्थात देवी एकेश्वर वाद रखा। यह एक सामाजिक - धार्मिक - भ्रातृ - सम्प्रदाय था, जिसका संगठन -

- -

१ - Ain-i-Akbari Vol. I P.P. 163-64.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विभिन्न जातियों को एक दूसरे के अधिक निकट लाने के विचार से किया गया था । इसकी रचना सर्वजनित सहिष्णुता के सिद्धान्त पर की गई थी और स्वयम् सम्राट ने सभी धर्मों में से अच्छी बाते संगृहीत करके इसमें रखी थी ।

दीनइलाही के अभ्युदय के कारण :

दीनइलाही का अभ्युदय निम्नलिखित कारणों और परिस्थितियों से हुआ -

(१) उदार विचार धारायें अकबर को विरासत में प्राप्त हुईं । जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि वंश परम्परा, पैतृक सहिष्णुता, माता, पिता, संरक्षक और शिक्षक की उदारता, धार्मिक भावना और विश्वासों का प्रभाव अकबर पर पड़ा । इन्होंने अकबर की धार्मिक नीति व निष्ठा को उदार पंथी बनाने में बड़ा योगदान दिया । शिक्षक अब्दुल लतीफ द्वारा पढाये गये सुलह - ए - कुल अर्थात सर्वजनित शान्ति के सिद्धान्तों को वह जीवन भर न भूला । हिन्दु राजकुमारियों के साथ हुए विवाहों तथा राजपूत व हिन्दू अधिकारियों के सान्निध्य व सम्पर्क से अकबर हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों से अधिकाधिक परिचित होने के साथ साथ विभिन्न धर्मों के प्रति और भी अधिक सहिष्णु और उदार हो गया । इस उदार भावना की परिणति दीन इलाही के रूप में प्रस्फुटित हुई ।

(२) अकबर के शासन के प्रारम्भ होने के पूर्व व्यापक धार्मिक आन्दोलन नवीन धार्मिक जागृति और चेतना तथा हिन्दू और सूफी सन्तों के असाधारण अध्यात्मवाद ने उदारता, सहिष्णुता, प्रेम और सद्भावना का वातावरण निर्मित कर दिया था । इस वातावरण ने ईश्वर की - एकता और वर्ण विनाश पर जोर दिया । तथा विभिन्न धर्मों के समन्वय को प्रोत्साहन दिया । हिन्दू मुसलिम सन्तों ने एकेश्वर वाद और बंधुत्व पर धार्मिक बाह्याडम्बर और साम्प्रदायिक भेद भाव के उन्मूलन पर, धार्मिक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सहिष्णुता, हिन्दू मुस्लिम एकता और समन्वय पर व्यक्ति और आत्मा की अभिव्यक्ति पर अधिक बल दिया । इससे अकबर के उदार धार्मिक विचारों और नवीन प्रयोगों के लिये मार्ग प्रशस्त हो गया । धीरे धीरे इस नवीन वातावरण के प्रभाव से उसका हृदय सभी वर्गों और धर्मों के प्रति उदार और सहिष्णु होता गया जो उस युग की प्रमुख मांग थी । अकबर ने इस मांग की पूर्ति करने के लिये और सभी धर्मों का समन्वय करने के लिये दीन इलाही की स्थापना की ।

(३) - अकबर से पूर्व इस्लाम राज्य धर्म के श्रेष्ठ पद पर प्रतिष्ठित था । जिसके परिणाम स्वरूप राज्य की प्रजा मुसलमानों और गैर मुसलमानों में विभक्त हो गयी थी । गैर - मुसलमानों अथवा हिन्दुओं के लिये - साम्राज्य के सभी उच्च पदों के व्दार बन्द थे । किन्तु उदार चेता, विवेक शील, दूरदर्शी, राजनीतिज्ञ, अकबर इस अनीतिपूर्ण व्यवस्था का अन्त कर देना चाहता था । इस लिये उसने ऐसे धर्म और नीति को अपनाना चाहा जिससे उसकी प्रजा के एक बहुत बड़े वर्ग हिन्दुओं के साथ सद् व्यवहार हो सके, उनके धर्म को हानि न हो, ऐसी धार्मिक नीति और प्रशासकीय कार्य हो जिससे उसकी आध्यात्मिक पिपासा तो शान्त हो ही, पर उसकी - समस्त प्रजा सार्वजनिक रूप से प्रभावित हो सके और सब को पद व धर्म की समानता प्राप्त हो सके । इस लिये अकबर ने प्रशासन और सेना में - विभिन्न धर्मावलम्बियों को ऊंचे ऊंचे पदों पर बिना किसी - भेद -भाव के नियुक्त किया । राज्यपाल या प्रान्तीय सूबेदार, मनसबदार, वजीर आदि ऊंचे ऊंचे पदों पर राजपूतों व अन्य हिन्दुओं को नियुक्त किया गया । इस कार्य से राज्य की दृढ़ता और स्थायित्व के लिये वह सभी जातियों, धर्मों और वर्गों के लोगों का सहयोग और सद्भावना चाहता था । अकबर ने बलात धर्म परिवर्तन कर इस्लाम के प्रसार का निषेध - किया और तीर्थ यात्रा कर, जजिया कर एवं अनेक अनुचित करों को -

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाप्त कर सबको पवित्र धार्मिक स्थान, देवालय व मंदिर निर्मित करने की स्वतंत्रता दे दी । अकबर ने अपने पूर्ववर्ती सुलतानों की धार्मिक संकीर्णता, कटुता और इस्लामी राज्य की नीति त्याग दी । उसने अपने कार्यों से धर्म निरपेक्ष राज्य स्थापित किया । इस धर्म निरपेक्ष राज्य में वह - विभिन्न धर्मावलम्बियों को एक ही मंच पर लाने को उत्सुक और प्रयत्न शील था । इस प्रयास का परिणाम दीन इलाही हुआ ।

(४) - अकबर धर्म निष्ठ और चिन्तशील व्यक्ति था, उसे विश्व और मानव जीवन - के गूढतम रहस्यों को जानने तथा निरन्तर समझने की अतृप्त - पिपासा थी, अध्यात्म ज्ञान प्राप्ति की अनूठी जिज्ञासा थी तथा निरन्तर सत्यान्वेषण करने की अलौकिक प्रवृत्ति भी थी । इसी से बदायूंनी ने भी लिखा है कि - बहुधा अकबर उषाकाल में फतेहपुर के राज भवन के समीप एक प्राचीन भवन के निर्जन भाग में पड़े एक प्रस्तर खण्ड पर घण्टों अकेला बैठा दार्शनिक तथ्यों और जीवन के निगूढ़ रहस्यों पर विचार किया करता था ।" २ विभिन्न धर्मों के सभी सिद्धान्तों और तत्वों को जानने की उसमें अपूर्व उत्कंठा थी । अकबर की धार्मिक नीति और विचार उसके इस जन्मजात आत्मीय अंकुर व अध्यात्म ज्ञान प्राप्ति की जिज्ञासा का - प्रस्फुटन था । इसी से वह कर्मठ राजकीय जीवन में सत्यान्वेषण के सतत प्रयोग करता था, जिसका परिणाम दीन इलाही के रूप में उदय हुआ ।

(५) इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों की विशद जानकारी के लिये अकबर ने १५७५ में इबादत खाना निर्मित किया और वहां शेखों, सैयदों और आलिमों के धार्मिक वाद विवाद और गोष्ठियां सुनी । इबादत खाने की स्थापना की तो उसने इस्लाम के सच्चे सिद्धान्तों को समझने के लिये थी लेकिन इसका परिणाम उल्टा ही निकला क्योंकि इस्लाम के सिद्धान्तों को समझने की

2- AL-Badaoni Trans. by W.H. Lowe Vol. II P. 203.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बात तो एक ओर रही, यहां तो धार्मिक वाद - विवादों में शियाओं और सुन्नियों के पारस्परिक झगड़े, विद्वेष, कटुता, आरोप प्रत्यारोप का बाहुल्य हो गया । अकबर को इससे बड़ी निराशा हुई और वह इस्लाम को सन्देह की दृष्टि से देखने लगा । जब इस्लाम के प्रति उसकी निष्ठा कम हो गई तो उसने इबादत खाने में विभिन्न धर्मावलिम्बियों को अपने धर्म के सत्य सिद्धान्तों के प्रवचनों के लिये आमंत्रित किया । उनके धार्मिक विवेचनों और प्रवचनों में उसने सत्य की खोज करना चाही । अकबर ने - हिन्दू, जैन, पारसी, ईसाई व इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों का बड़ी साव-धानी व लगन से अध्ययन किया । उनके उपदेशों, रीति - रिवाजों और उत्सवों के विभिन्न अंगों का मनन किया । मानव जीवन और विचारों पर उनके प्रभाव को लक्षित किया । अकबर यह कार्य इबादत खाने में अपने दरबार में और व्यक्तिगत भेटों में निरन्तर सात वर्षों तक करता रहा ।

अन्त में अकबर अपने दीर्घ अनुभव, अध्यवसाय, धर्म चर्चाओं और अध्ययन के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि यद्यपि हर धर्म में सत्य का अंश है, परन्तु प्रत्येक में महत्व पूर्ण कमी है । सभी धर्मों में कुछ ऐसे - विभिन्न उत्सव व रस्में है, जो परस्पर विरोधी और कटुता उत्पन्न करती है । अतएव न तो केवल इस्लाम ही और न अन्य धर्मों में से कोई एक धर्म ही सब को एक राष्ट्रीय एकता में बांध सकता है । इस लिये अकबर इस समस्या के हल के लिये एक ऐसा धर्म चाहता था जिसमें प्रचलित धर्मों की अच्छाइयां व सच्चाई हो, पर किसी धर्म की बुराई न हो । वह ऐसा धर्म चाहता था जिसमें साम्प्रदायिक भेद - भावों को विस्मरण कर सब लोग शाश्वत धर्म के सार्वभौम व सर्व मान्य आचरण से युक्त सिद्धान्तों के अनुयायी हो सकें । धार्मिक व सांस्कृतिक पुर्नजागरण की पृष्ठ भूमि में धार्मिक - संकीर्णता और भेद - भावों से ऊपर उठ कर अकबर अपनी प्रजा में समान धर्म फैलाना चाहता था । अकबर ने कहा कि " एक शासक के अधीन - साम्राज्य में यदि जनता परस्पर विभक्त है और एक इधर जाता है और

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दूसरा उधर जाता है तो यह बड़ा दोष है । --- अत: हमको चाहिये कि हम सब को एक करदें, परन्तु इस प्रकार कि वे एकता के साथ एक और सम्पूर्ण हो ताकि किसी धर्म के गुण से वे वंचित न रह जाये - एक धर्म के गुण के साथ - साथ उन्हें दूसरे धर्म की अच्छाई का भी लाभ मिल जाय, इस प्रकार ईश्वर का सम्मान होगा, लोगों को शान्ति प्राप्त होगी और साम्राज्य की रक्षा होगी ।" 3 अत: अकबर ने विभिन्न धर्मों के सत्य तथा महत्व पूर्ण सिद्धान्त अपने मस्तिष्क में संकलित कर लिये और फिर उन्हें लिपिबद्ध करा लिया । इनमें सब धर्मों का समन्वय था, जो कि दीन इलाही के नाम से विख्यात हुआ ।

दीन इलाही का स्वरूप :

मुसलिम इतिहासकार तथा कट्टर धर्मान्ध मुल्ला बदायूंनी ने दीन इलाही को एक नया धर्म माना है । स्मिथ ने भी इसे एक नया धर्म माना है । He says-Akbar's long-Cherished project of establishing throught his empire one universal religion, formulated & Controlled by himself, was avowed publicly for the first time in 1582." 4

एस० आर० शर्मा का मत है कि " उसने अपनी प्रजा के दोनों मुख्य वर्गों (हिन्दू, और मुसलमान) के पारस्परिक मतभेदों को मिटाने का यत्न किया । उसने दोनों जातियों में परस्पर विवाह की प्रथा का उदाहरण उपस्थित किया । ऊंचे पद और उपाधियाँ देने में उसने सबको बराबर समझा और सब से बड़ा काम उसने यह किया कि एक नया धर्म चलाया जिससे एक नये संसार की सृष्टि होगी ।" 5

- -

3- According to Bartoli quoted from Smith: Akbar the great Mogul P.211-12

4- Smith : Akbar the great Mogul P.209.

5- एस.आर शर्मा हिन्दी अनुवादक मथुरालाल शर्मा भारत में मुगल साम्राज्य पृ० २६८

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परन्तु दीन इलाही कोई नवीन धर्म या सम्प्रदाय नहीं था इसमें तो सब धर्मों के सत्य सिद्धान्तों का समन्वय था । अकबर की स्वयम् की इच्छा भी किसी नवीन धर्म को स्थापित करने की नही थी । इसके अलावा नवीन धर्म के लिये यह आवश्यक है कि उसका कोई एक लिखित धर्म ग्रन्थ हो, निश्चित प्रार्थना हो, कोई मंदिर या निश्चित उपासना गृह हो, कोई साम्प्रदायिक धार्मिक चिन्ह अथवा पुरोहित वर्ग हो । लेकिन दीन-इलाही में ऐसा कुछ न था । इस लिये हम दीन इलाही को एक नवीन धर्म सम्प्रदाय अथवा मत नही कह सकते है और न ही अकबर को उसका प्रवर्तक अथवा पैगम्बर । दीन इलाही तो एक सामाजिक और धार्मिक संस्था थी जिसका आशय देश के विभिन्न धर्मावलम्बियों को परस्पर मिलाना था । इसकी नीव प्रेम, सच्चाई, सदाचरण, संयम और सहिष्णुता पर आधारित थी तथा इसमें सुलह - ए - कुल ह के सिद्धान्त थे । इसमें हिन्दुओं, जैनियों, पारसियों के सिद्धान्तों का सार था और ईश्वरी एकता का सिद्धान्त था ।

दीन इलाही का प्रारम्भ :

मार्च १५८२ में काबुल अभियान से लौट आने के बाद अकबर ने अपने प्रमुख अधिकारियों और दरबारियों का एक सम्मेलन बुलाया और उनके - सम्मुख दीन इलाही का स्वरूप प्रस्तुत किया । उपस्थित सदस्यों ने दीन इलाही के स्वरूप से सहमति प्रगट की और कहा कि बादशाह ईश्वर के बहुत समीप है । उसका पद बहुत ऊंचा और उसकी बुद्धि बड़ी प्रबल है । इस लिये वह सारे साम्राज्य के लिये एक पूर्ण और सार्वजनिक धर्म केनिर्माण के लिये आवश्यक देवता, उत्सव, बलिदान, नियम, रीति रस्म आदि जो भी आवश्यक हो, निश्चित करें । इस सभा के बाद अकबर ने एक श्रेष्ठ वृद्ध शेख को सब ओर यह घोषित करने भेजा कि अल्पकाल में ही सम्पूर्ण मुगल साम्राज्य में दरबार से प्रचारित धर्म माना जायेगा और सभी लोग इसे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रेष्ठ धर्म मानकर अपनाने को तैयार रहैं ।" ६

बदायूंनी जो कि शायद उस समय वहां उपस्थित था लिखता है कि इस नये धर्म के प्रस्ताव का विरोध सभा में ही आमेर के राजा बिहारीमल ने किया । उसने कहा कि "मैं यह स्वेच्छा पूर्वक स्वीकार कर लूंगा कि हिन्दुओं और मुसलमानों में प्रत्येक धर्म खराब है । पर हमें केवल यह बतायें कि नया धर्म क्या है और वह क्या मत रखता है, ताकि मैं विश्वास कर सकूं । उस पर अकबर थोड़ी देर विचार मग्न रहा और फिर उसने राजा भगवन्त दास को नया धर्म स्वीकार करने के लिये आग्रह नहीं किया । ७ अबुल फजल भी इससे सहमत है । इसी प्रकार कुछ वर्षों बाद अकबर ने मानसिंह से पूछा कि क्या वह दीन इलाही के अन्तर्गत अकबर का शिष्यत्व स्वीकार करेगा ? इस पर मानसिंह ने उत्तर दिया कि यदि शिष्यत्व का यही अभिप्राय है कि अपने प्राणों का बलिदान करने को तैयार रहना चाहिये तो मैं अपनी जान को हमेशा हथेली पर रखता हूं और इसे प्रमाणित करने के लिये अधिक प्रमाणों की आवश्यकता नहीं है, किन्तु यदि इसका अर्थ यह है कि अपने धर्म को छोड़ा जाय तो मैं हिन्दू हूं । इसके बाद अकबर ने मानसिंह से बातचीत बन्द कर दी और उसे स्थानान्तरित करके बंगाल भेज दिया ।" ८

दीनइलाही का विधि विधान :

दीनइलाही का पृथक विधि विधान था । इस सम्प्रदाय में सम्मिलित होने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अकबर से दीक्षा लेनी पड़ती थी । जब कोई व्यक्ति इसका सदस्य होना चाहता था तो अबुल फजल के पास, जो इस

6- Smith : Akbar the great Mogul. P. 212.

7- Al-Badaoni Trans. by W.H.Lowe Vol. II. P.323, Ain-i-Akbari Trans. by H.Blochmann Vol. I. P. 198

8- AL-Badaoni Trans. by W.H.Lowe Vol. II P. 375.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्प्रदाय के प्रधान पुरोहित थे जाता और उसे अपने इरादों की पवित्रता और सच्चाई के प्रति सहमत करता था । इसके बाद अबुल फजल इस व्यक्ति को अकबर के पास ले जाकर उसका परिचय कराता और वह - व्यक्ति अपनी पगड़ी अपने हाथ में लेकर, अपना सिर बादशाह के कदमों में रखता था । बादशाह उसे उठाता था, उसे सिर पर पगड़ी रखता और उसे " शिस्त " अथवा " अपना स्वरुप " प्रदान करता था जिस पर ईश्वर का नाम तथा " अल्लाहो अकबर " खुदा होता था । यह अंगूठी स्वस्तिक के आकार की होती थी । इस विधि का यह अभिप्राय था कि सम्राट ने उसे शिष्य बनाना स्वीकार कर लिया है । शिष्य से यह आशा की जाती थी कि वह सम्राट के अनुकरण द्वारा अपना सुधार करेगा । तथा आवश्यकतानुसार सम्राट से मौखिक शिक्षा ग्रहण करेगा । दीन-इलाही के सदस्य अपने गुरु और दीन इलाही के पैगम्बर सम्राट अकबर की सोने की रत्न जड़ित प्रतिमूर्ति को रेशम के टुकड़े में लपेट कर अपनी पगड़ी में रखते थे । दीन इलाही में दीक्षित व्यक्तियों को " पवित्र शस्त और पवित्र दृष्टि कभी भूल नहीं करती । " इस पंक्ति को बार बार दोहराते थे । " ९ यह दीक्षा समारोह रविवार के दिन होता था, क्योंकि रविवार सूर्य का दिन माना जाता था । दीक्षा देकर शिष्य बनाने से अकबर का तात्पर्य उसे अपना अनुचर बनाना नहीं अपितु ईश्वर की सेवा में दीक्षित करना था ।

दीनइलाही के सिद्धान्त :

दीनइलाही के सदस्यों को निम्नलिखित सिद्धान्तों अथवा गुणों का पालन करना पड़ता था ।

(१) जीवन में उदारता और दानशीलता का पालन करना ।

(२) सांसारिक इच्छाओं का परित्याग करना ।

9- Aim-i-Akbari Vol. I Trans. by H.Blochmann P.P.174-75

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३) सब के साथ धीमे स्वर से कोमल वाणी, भली बात और मधुर भाषण से बातचीत करना तथा सद्व्यवहार करना।

(४) अच्छे और उद्भुत कार्य करने की इच्छा रखना।

(५) अपने बन्धुओं से सद्व्यवहार करना और उनकी इच्छाओं को अपनी इच्छा के ऊपर महत्व देना।

(६) दुष्कर्मियों को क्षमा दान देना और क्रोध का नरमी से निराकरण करना।

(७) जीवों से पूर्ण विरक्ति और परमात्मा से लगाव रखना।

(८) अपने कर्मों के फलों और प्रभाव पर विचार करना, मनन करना, तथा भक्ति व ज्ञान की वृद्धि करना।

(९) सांसारिक अस्तित्व के बन्धनों से मुक्त होने तथा परलोक के लिये पुण्य संचित करने हेतु लालसा रखना और कार्य करना।

(१०) एकेश्वर वाद में विश्वास करना, भगवत प्रेम और भगवत भक्ति में आत्मा को लगाना और आत्मा का परमात्मा में संयोग करना।

इस प्रकार व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता और जीवन के कार्यों के प्रति पवित्र दृष्टिकोण पर इन सिद्धान्तों में अधिक बल दिया गया है। ये सिद्धान्त विश्व व्यापी है और लगभग प्रत्येक धर्म में पाये जाते हैं।

दीन इलाही के रीति - रिवाज व नियम :

दीन इलाही के रीति - रिवाज व नियम अधोलिखित थे -

दीन इलाही के अनुयायी जब परस्पर एक दूसरे से मिलते थे तो अभिवादन के लिये एक कहता था। "अल्लाहों अकबर" उसके उत्तर में दूसरा जवाब देता था "जल्ले - जलाले हू"। ऐसा कहने का उद्देश्य मनुष्य को उसके जीवन की उत्पत्ति पर सोचने और ईश्वर की कृतज्ञ स्मृति में ताजा और सजीव रखना था।"[१०] दीन इलाही के सभी सदस्य सम्राट अकबर

10- Ain-i-Akbari Trans. by H.Blochmann Vol.I.P. 175.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को साष्टांग प्रणाम करते थे। जिसे जमीन बोस अथवा सिजदा भी कहा जाता है और जो कि हिन्दू तथा मुसलमान दोनों धर्मों में प्रचलित थी।

स्मिथ लिखता है कि दीन इलाही के प्रत्येक सदस्य को अपने जन्म दिन पर दावत देना और दान पुण्य करना पड़ता था। इस प्रकार मृत्यु के पश्चात् भोज देने की प्रथा के स्थान पर हर सदस्य को अपने जीवन काल में ही सुन्दर श्राद्ध भोज देना पड़ता था, जिससे वह अपनी अन्तिम यात्रा के लिये पुण्य संचय कर सकें।" ११

जहां तक निभ सके, दीनइलाही के सदस्यों को मांस भक्षण की छूट थी। जन्म के माह में तो वे मांस को छू भी नहीं सकते थे। कसाइयों मछेरों और चिड़ीमारों के बर्तन ये लोग काम में नहीं लाते थे। लहसुन, प्याज खाना भी निषिद्ध था।

इस मत के अनुयाइयों को सूर्य और अग्नि की उपासना करनी पड़ती थी। प्रात: सन्ध्या, मध्यान्ह और मध्य रात्रि चार बार पूर्व दिशा की ओर मुंह करके पूजा की जाती थी।

मृतक मनुष्य के दाह संस्कार के सम्बन्ध में स्मिथ का कहना है कि लोगों के सिर पूर्व की ओर तथा पैर दक्षिण की ओर करके दफनाये जाते थे। अकबर ने इसी तरह अपने शिष्यों को भी सोने की आज्ञा दी थी।" १२ अबुल फजल लिखता है कि - " Members should not cohabit with pregnant, Old and barren women : for with girls under the age of puberty " 13.

इस्लाम धर्म में नमाज के समय स्वर्ण और जरी के वस्त्रों को पहनने की मनाही है पर दीन इलाही में सार्वजनिक प्रार्थना के समय और दूसरे समयों में इनका धारण करना आवश्यक था। इस मत के अनुयायियों

11- Smith : Akbar the great Mogul P. 218.

12- Smith : Akbar the great Mogul P. 219

13- Ain-i-akbari Vol. I. P. 166

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के लिये दाढ़ी मुड़ाना आवश्यक था ।

दीनइलाही के अनुयायियों का वर्गीकरण व सदस्य संख्या -

दीन इलाही के अनुयायियों को चार भागों में विभाजित किया गया था । बदायूंनी के अनुसार चार सीढ़ियाँ थी - सम्पत्ति, जीवन, सम्मान और धर्म बादशाह को अर्पण कर देना । जो इन चारों पदार्थों को अर्पण कर देता था, उसे चार सीढ़ियां मिलती थी । जो एक पदार्थ अर्पण कर देता था उसे एक सीढ़ी । सब दरबारियों ने अपने नाम सिंहासन के बहुत शिष्यों की सूची में लिखवा दिये थे । (१४)

लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि बदायूंनी ने यहां पर मजाक ही किया है, क्योंकि वह स्वयम् उन सब दरबारियों में नहीं था जिन्होंने चारों पदार्थ सम्राट को अर्पण कर दिये थे । और तब भी वह अपने जीवन के शेष १५ वर्ष तक अकबर के दरबार में रहा था । उसने स्वयम् दीन-इलाही अपनाने वाले केवल सोलह दरबारियों के नामों का उल्लेख किया है । जब कि अबुल फजल ने दो नाम और लिखे है । अबुल फजल कहता है कि बीरबल के अतिरिक्त वे सब मुसलमान थे लेकिन बदायूंनी के कहने से यह मालुम होता है कि अनुयायियों की संख्या और अधिक होगी । (१५)

दीनइलाही के साधारण सदस्यों की संख्या भी कुछ हजार से अधिक नही थी किन्तु साम्राज्य के अधिकांश विशिष्ट पुरुष इसमें सम्मिलित नहीं हुए तत्कालीन विशिष्ट व्यक्तियों में से केवल अठारह व्यक्ति ही इसके सदस्य थे । मौलाना मुहम्मद हुसैन ने इन अठारह व्यक्तियों के नाम इस प्रकार गिनाये है -

१. अबुल फजल खलीफा २ - फैजी, दरबार का प्रधान कवि, ३ - शेख मुबारक नागौरी, ४ - जाफर बेग आसफ खां, इतिहास लेखक और कवि

- -

(१४) - Aim-i-Akbari Vol. I. P. 191.

(१५) - -do- -do- P. 209.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५ - कासिम काबुली, कवि ६ - अब्दुल समद, दरबार का चित्रकार और कवि । ७- आजम खां कोका, मक्के से लौटने पर ८ - मुल्ला शाह - मुहम्मद शाहाबादी, इतिहास - लेखक ९ सूफी अहमद । १० - सदर जहान, सारे भारत के प्रधान मुफती और (११-१२) इनके दोनों पुत्र १३ - मीर शरीफ अमली, १४ - सुल्तान ख्वाजा सदर, १५ - मिरजा जानी, ठठ्ठे का हाकिम, १६ - नकी शौस्तरी कवि और दो सदी - मन सबदार १७ शेखजादा गोसाला बनारसी १८ बीरबल । १६ भगवं-न्त दास, मानसिंह और टोडरमल जैसे लब्ध प्रतिष्ठित उच्च पदाधिकारी भी इसके सदस्य नहीं थे । प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से केवल बीरबल ने ही इसे स्वीकार किया ।

दीन इलाही की असफलता :

दीनइलाही अकबर की मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गया । यह साधारण लोगों को अपनी ओर आकृर्षित नहीं कर सका और न ही जनता में लोक प्रिय बन सका ।

दीन इलाही के प्रचार और प्रसार के लिये अकबर ने ईसाई - मिशनरियों के समान या यूरोप के ईसाई राजाओं के समान कार्य नहीं किये । इसके राज व्यापी प्रचार के लिये अकबर ने राज्य स्तर पर कोई विभाग या अधिकारी नियुक्त नहीं किये, कोई नियम या उप नियम नहीं बनाये । शासकीय या अशासकीय स्तर पर कोई संगठन या संस्था भी स्थापित नहीं की और न किसी प्रकार का पुरोहित वर्ग ही प्रति-ष्ठित किया ।

दीनइलाही स्वीकार करने के लिये अकबर ने किसी को बाध्य नहीं किया । इस मत का अनुयायी बनने के लिये अकबर ने साम, दाम, दण्ड भेद से किसी को बाध्य नहीं किया । इस सम्प्रदाय में सम्मिलित

१६ - अकबरी दरबार हिन्दी अनुवादक रामचन्द्र वर्मा पहला भाग पृ० १४१-४२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होने के लिये अकबर ने किसी को शासकीय सेवाओं में लेने या राज्य के ऊंचे पदों पर नियुक्त करने अथवा अपार धन देने का प्रलोभन नहीं - दिया। अकबर के सान्निध्य में रहने वाले जिन व्यक्तियों ने दीनइलाही में सम्मिलित होना स्वीकार नहीं किया, उन पर भी अकबर की अनुकम्पा पूर्ववत ही बनी रही। सत्य तो यह है कि अकबर बड़ा उदार और सहन शील था। उसने लोगों को अपनी इच्छानुसार किसी भी धर्म को स्वीकार या अस्वीकार करने तथा अपना व्यक्तिगत धर्म पालने की स्वतंत्रता दे रखी थी। उसकी धार्मिक नीति और दीन इलाही से मतभेद रखने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध भी उसने कोई कदम नहीं उठाये। ऐसी दशा में दीन इलाही के सदस्यों की संख्या में वृद्धि होना असम्भव था। बदायूंनी लिखता है कि अकबर ने दीन इलाही के सदस्य बनाने के लिये शक्ति या दबाव से काम नहीं लिया, यदि वह अधिकारों का प्रयोग करता और इसके प्रसार के लिये थोड़ा भी रुपया व्यय करता तो अनेकानेक सदस्य बना लेता। १७

अकबर के दीनइलाही का आदर्श उसके युग की भावना और धारणाओं से बहुत आगे था। साधारण लोग जो इस्लाम की कट्टरता में विश्वास करते थे, उन्होंने या तो दीनइलाही को अपनाया नहीं या हिचकिचाहट और संशय से इसे स्वीकार किया। वे इसके राजनीतिक, धार्मिक और राष्ट्रीय महत्व को समझ नहीं सके। ऐसा प्रतीत होता है कि अकबर की आध्यात्मवादी व धार्मिक विचार धाराएँ उस युग से बहुत आगे थीं। क्योंकि वह युग विभिन्न धर्मों की पारस्परिक मत - विभिन्नता व संघर्ष का युग था। ऐसे युग में समन्वय और राष्ट्रीय प्रवृति वाले दीन इलाही का प्रसार होना असम्भव था। इस लिये दीन-इलाही अकबर के देहावसान के साथ ही समाप्त हो गया।

- -

17- Al-Badaoni. Trans. by W.H.Lowe Vol. II P. 323.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

According to Smith : The organization can not well have survived the murder of Abul Fazal, its high priest, so to say, and of course, it ceased to exist with the death of Akbar. 18.

यद्यपि जहांगीर ने अकबर की भांति शिष्य दीक्षित करने तथा शस्त्र व अपने चित्र कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को प्रदान करने के प्रयास किये, पर यह केवल औपचारिक कार्य था । इस तरह दीनइलाही के बन्धु समाज का, अकबर कालीन आदर्श वाद का आधार समाप्त हो गया ।

दीन इलाही के विषय में विभिन्न विद्वानों के मत :

दीनइलाही की प्रशंसा और आलोचना में विभिन्न इतिहासकारों और विद्वानों ने अपने अपने मत व्यक्त किये हैं । अकबर के इस आदर्शवाद में बारतोली को चालाकी और धूर्तता ही दिखाई दी थी । स्मिथ भी कहता है कि यह धार्मिक कटटरता का उन्माद था जो मई सन् १५७८ में अकबर को आया । यह उसकी विभिन्न धर्मों में गहन रुचि का लक्षण था । जो सन् १५७८-७९ में प्रकट हुआ था, जिसके बाद ही आगामी वर्ष के सितम्बर में उसने अपनी अचूक व्यवस्था जारी की थी । आगे चलकर - स्मिथ कहता है कि दीन इलाही अकबर की मूर्खता का स्मारक है बुद्धिमत्ता का नहीं ----- यह समस्त योजना हास्यास्पद दम्भ का परिणाम थी, उसकी अनियंत्रित निरंकुशता की उपज थी । १९

According to Laurence Binyon : " The divine faith was, of course, a failure and destined to failure. In religious societies toleration is no virtue, it is the despised offspring of lukewarmness or indifference. A

18- Smith : Akbar the great Mogul P. 222

19 - Smith : Akbar the great mogul P. 163-222

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

creed to simple was obvious to the reproach of vagueness and emptiness the religion which was to have united all, pleased none. Akbar who had revolted so far from the intolerance of his ancestral creed, now impaired his own toleration by invidious ordinances against Muhammadan practices... this descendent of conquerors who had treated all alien creeds with fierce contempt was warped into oppressing of all faith, the faith in which he was bred." 20.

प्रो० एस० आर० शर्मा के मतानुसार अकबर एक उच्च कोटि का राजनीतिज्ञ था और कहा करता था कि एक शासक के अधीन साम्राज्य में यदि जनता परस्पर विभक्त है और एक इधर जाता है और दूसरा उधर जाता है तो यह बड़ा दोष है । ---- अत: हमको चाहिये कि हम सब को एक करदें परन्तु इस प्रकार कि वे एकता के साथ एक और सम्पूर्ण हों, ताकि किसी धर्म के गुण से वे वंचित न रह जाये - एक धर्म के गुण के साथ साथ उन्हें दूसरे धर्म की अच्छाई का भी लाभ मिल जाय इस प्रकार ईश्वर का सम्मान होगा, लोगों को शान्ति प्राप्त होगी और साम्राज्य की रक्षा होगी । २१

डा० ए० एल० श्रीवास्तव का मत है कि " दीन इलाही की स्थापना में अकबर का महान राजनैतिक उद्देश्य यह था कि इसके द्वारा वह हिन्दू और मुसलमान धर्मों को मिला सके और मुगल साम्राज्य में राजनैतिक एकता कायम कर सकें । २२

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

२० - Laurence Binyon - Akbar - Short Biographies No.21 PP 131-32.

२१ - एस. आर. शर्मा हिन्दी अनुवादक एम. एल. शर्मा भारत में मुगलसाम्राज्य पृ०२६८

२२ - ए. एल. श्रीवास्तव - मुगल कालीन भारत पृ० २०१

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दीनइलाही की आलोचना व समीक्षा :

उपरोक्त मतों से स्पष्ट है कि दीनइलाही के विषय में परस्पर विरोधी मत और विचार प्रकट किये गये हैं स्मिथ तथा लैरिन्स विनयान ने दीनइलाही की कटु आलोचना की है उनके मतानुसार अकबर अपनी पूजा कराने वाला खुशामदी व्यक्ति था । अत: उसने इस नवीन धर्म का प्रचार किया । जिससे कि वह ईश्वर का दूत कहलाया जा सके । इसके अलावा राजसत्ता, अधिकार, धन सम्पन्नता और ऐश्वर्य ने अकबर का सिर फेर दिया था, इस लिये उसने एक नवीन सम्प्रदाय की स्थापना की और अपने को उसका गुरु अथवा पैगम्बर कहा । उसने धर्म और राजनीति दोनों को मिला दिया । इस लिये वह असफल रहा और दीन इलाही का अन्त निराशाजनक हुआ ।

इन मतों का खण्डहन आधुनिक भारतीय इतिहासकारों ने किया है जिनमें एस.आर. शर्मा तथा ए.एल. श्रीवास्तव प्रमुख हैं । उनके मतानुसार अकबर बहुत ही विनीत तथा निराभिमानी पुरुष था और दीन इलाही की स्थापना उसने अपने आडम्बर की संतुष्टि के लिये नहीं की थी । दीन इलाही की स्थापना के पीछे अकबर का उद्देश्य लोगों को अपने अधीन किसी सम्प्रदाय के चंगुल में फंसाने का नहीं था । वह साम्राज्य सत्ता प्राप्ति के साथ साथ, पोप, खलीफा अथवा पैगम्बर बनने की कोई महत्वाकांक्षा भी नहीं रखता था । वह दीनइलाही के द्वारा मिथ्या अंहकार की संतुष्टि भी नहीं करना चाहता था । और न ही वह अपनी अनुपम प्रशंसा या देवतुल्य पूजा का इच्छुक था । एक नवीन धर्म स्थापित करके धर्म प्रवर्तक बनने का लक्ष्य भी अकबर का नहीं था, क्योंकि यदि दीन इलाही की स्थापना में अकबर के ये उद्देश्य होते तो वह इसके प्रचार के लिये राज्य के सभी अधिकारों, शक्तियों, और साधनों का अधिकतम उपयोग करता परन्तु उसने ऐसा नहीं किया ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि दीन इलाही अकबर के थोथे व झूठे अभिमान की उपज था । हास्यास्पद निरर्थक योजना और निरंकुश एकतंत्र का रूप भी नहीं था, यदि ऐसा होता तो वह अपने सम्बन्धियों मित्रों तथा दरबारियों को दीन इलाही स्वीकार करने को कहता, उन पर उसे लादने का प्रयत्न करता । वह तो उदार व धर्म - निरपेक्ष विचार धारा का श्रेष्ठ शासक था । वह हिन्दुओं और मुसलमानों को एक राष्ट्रीय धर्म में बांधना चाहता था, दोनो जातियों में - राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक एकता स्थापित करना चाहता था, विभिन्न धर्मों के सिद्धान्तों का एक धर्म में समन्वय करना चाहता था । इस लिये हम कह सकते हैं कि दीन इलाही अकबर की - समन्वय प्रवृत्ति और उदार सहिष्णु प्रकृति की महान अभिव्यक्ति थी ।

इस्लाम दमन के सम्बन्ध में अकबर पर लगाये गये आरोप :

दीनइलाही के सम्बन्ध में परिचय प्राप्त कर लेने के पश्चात् प्रश्न यह उठता है कि क्या अकबर ने इस्लाम धर्म को त्याग दिया था ? इस प्रश्न के उत्तर में हमें अकबर पर लगाये गये आरोप तथा उनकी समीक्षा करके यह देखना होगा कि वास्तविकता क्या है ?

स्मिथ तथा वूल्जले हेग आदि इतिहासकारों का मत है कि जब एक और अकबर ने प्रत्येक धर्म के लिये सहिष्णु नीति का अवलम्बन किया, तो दूसरी ओर उसने कटटर इस्लाम धर्म को हानि पहुंचाई । यह विचार धारा ईसाई धर्म प्रचारकों तथा बदायूंनी के कथन पर आधारित है । बेवरीज ने भी बदायूंनी के मत का समर्थन किया और अकबर पर आधुनिक व यूरोपीय इतिहासकारों ने इस्लाम की ओर से मुंह मोड़ने का आरोप लगाया । बदायूंनी की पुस्तक "मुन्तखब-उत्त-तवारीख" के आधार पर तथा ईसाई धर्म प्रचारकों के कथनों के आधार पर अकबर पर जो इस्लाम धर्म को छोड़ने का दोषारोपण किया गया है उसके

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लिये अधोलिखित उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं -

(१) बदायूंनी लिखता है कि" अकबर ने नमाज वर्जित कर दी थी उसने दरबार में नमाज पढ़ना निषिद्ध कर दिया था। दरबार - ए - आम में अजान बन्द करवा दी थी, जो कि पांच समय पढ़ी जाती थी। उसने - लोगों को अपने स्वयम् तथा अपने बच्चों के लिये मुहम्मद और अहमद नाम रखने की मनाही कर दी थी, क्योंकि वह मुहम्मद के नाम से घृणा करने लगा था। इस लिये जहां जहां पैगम्बर मुहम्मद का नाम आता था, वहां वहां उसने नाम परिवर्तित कर दिये। २३

(२) अकबर ने नमाज के समय रेशमी वस्त्रों और आभूषणों के पहनने की अनुमति दे दी जब कि इस्लाम धर्म में नमाज के समय जरी के वस्त्र धारण करना निषेध है।

(३) मुसलमानी धर्म के अनुसार रोजा रखना, ईद का त्यौहार मनाना, मुसलिम त्यौहारों को मनाना आदि अकबर ने छोड़ व दिया था और इनके स्थान पर उसने दीवाली, होली, रक्षा बन्धन जैसे हिन्दू त्यौहारों को अपना लिया था।

(४) ईसाई पादरी पीन्हीरो लिखता है कि" इस बादशाह ने मुहम्मद के झूठे धर्म को नष्ट कर दिया, उसे बिलकुल बदनाम कर दिया। इस शहर में न तो कोई मसजिद है, न कुरान। जो मसजिदें पहले से थी, उन्हें घोड़ों का अस्तबल या गोदाम बना दिया गया है। मुसलमानों को - अत्यन्त लज्जित करने के लिये प्रत्येक शुक्रवार को ४० या ५० सुवर लाकर बादशाह के सामने लड़ाये जाते हैं। वह उनके दांतों (दंष्ट्रा) को लेकर सोने में मढ़ा कर रखता है। बादशाह ने अपना एक नया धर्म बनाया है, जिसका वह स्वयम् पैगम्बर है। २४

23- Al-Badaoni Trans. by W.H. Lowe Vol. II P. 324

24 - Al-Badaoni Trans. by W.H. Lowe Vol. II P. 204,6

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५. उसने मुसलिम तीर्थ यात्रियों को प्रोत्साहित नहीं किया । मुसलमानों की हज के यात्रियों को राजकीय धन से भेजना बन्द कर दिया था ।

६. अकबर ने कुछ मसजिदें गिरवा दी थीं कुछ को धर्म विरुद्ध कामों में उपयोग करना प्रारम्भ कर दिया था । कुछ मसजिदों को लूटा और भग्न व गिरती हुई मसजिदों का जीर्णोद्धार नहीं करवाया ।

७. अकबर ने अपनी मुसलमान प्रजा को हजामत करा कर दाढ़ी बनाने की अनुमति दे दी थी तथा जुआ खेलने व सूद लेने की अनुमति दे दी जब कि इस्लाम धर्म में इन बातों का निषेध है ।

८. अकबर ने अजान के लिये बनी दीवारों को तुड़वा दिया ।

९. Smith : Says - The Sijdah or prostration, hitherto considered lawful only in divine worship, was declared to be the due of the emperor...25.

१०. अकबर ने खुतबा पढ़ा और मजहर अथवा अभ्रान्त आज्ञा पत्र प्रसारित किया । बदायूंनी का कहना है कि महजर पर मुल्लाओं व शेखों से जबर-दस्ती हस्ताक्षर करा लिये गये । २६

११ अकबर ने हिन्दुओं का पक्ष लेकर गोवध बन्द करा दिया, सूर्य व अग्नि की पूजा करने लगा तथा हिन्दू संस्कारों को अपनाने लगा ।

१२ दीनइलाही के मुसलिम अनुयायियों के पैर पश्चिम की ओर अर्थात मुसलमानों के तीर्थ स्थान मक्का की ओर तथा सिर पूर्व की ओर रख कर - दफनाया जाता था । जब कि मुसलमानों को पश्चिम की ओर सिर तथा पूर्व की ओर पैर रख कर दफनाया जाता था ।

१३. अकबर ने अरबी भाषा को प्रोत्साहन नहीं दिया और कुरान की प्रतियां नष्ट करवा दी ।

- -

25- Smith : Akbar the great mogul P. 220.

26- Al-Badaoni Trans. by W.H. Lowe Vol. II P. 287

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१४. अकबर ने इस्लाम के कानूनों और आदेशों को रद्द कर दिया ।

१५. अकबर ने सूअर और कुत्ते पाले तथा चीतों और सुअरों के मांस की छूट दे दी । विशेष दिनों में उसने मांस खाना निषेध कर दिया । निषेध के दिनों में यदि कोई मनुष्य गाय अथवा पशुओं की हत्या करता था तो उसे दण्ड का भागी बनना पड़ता था कभी - कभी तो प्राण दण्ड की सजा दी जाती थी । २७

१६ मुता विवाह को नियमित घोषित कर दिया गया था ।

१७. सन् १५८१-८२ के बीच अकबर के विरोधी अनेक शेखों और फकीरों को देश से निर्वासित करके कन्धार में भेज दिया गया । वहां उनको घोड़ों का मूल्य चुकाने में बेच दिया गया । २८

आरोपों की समीक्षा :

इस्लाम दमन के सम्बन्ध में अकबर की जो उपर्युक्त आलोचनाएँ की गयी है उनमें से कुछ तो बिलकुल निराधार है । इन आरोपों की समीक्षा हम निम्नलिखित रूप से कर सकते हैं :-

१. अभी तक विधि ग्रन्थों में ऐसा कोई प्रमाण नही मिलता है जिससे यह कहा जाये कि अकबर ने नमाज पढ़ना निषिद्ध कर दिया था । केवल बदायूंनी के ग्रन्थ के आधार पर ही हमें यह नही मान लेना चाहिये कि अकबर ने नमाज वर्जित कर दी थी । बदायूंनी कट्टर मुसलमान था हो सकता है कि उसने इस लिये अकबर की आलोचना के लिये ऐसा लिखा हो । दूसरी ओर ईसाई धर्म प्रचारकों, जिन्होने कि अकबर पर इस्लाम दमन के आरोप लगाये है के लेखों से हमें यह ज्ञात होता है कि सर्व साधारण मुसलमान भी नित्य पांच बार नमाज पढ़ता था । सन् १५७६ में खुतबा पढ़ने के बाद

27- Al-Badaoni Trans. by W.H. Lowe Vol. II P. 331

28- Al-Badaoni Trans. by W.H. Lowe Vol. II P. 308.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकबर ने धर्मासन से नीचे उतर कर नमाज भी पढ़ाई । दीनइलाही के प्रसारण के भी कई वर्षों बाद अबुल फजल की मृत्यु के बाद तथा उसकी कब्र पर अकबर ने स्वयम् नमाज पढ़ी । यह कहना भी व्यर्थ है कि नमाज के समय रेशमी वस्त्र तथा आभूषण पहनना अनिवार्य कर दिया था क्योंकि इस बात का अभी तक कोई फरमान उपलब्ध नहीं हुआ है न ही इस बात का प्रमाण है कि रमजान में रोजा न रखने का आदेश दिया गया हो । अकबर के विरुद्ध बिहार व बंगाल में जब मुल्लाओं की धार्मिक प्रेरणा से युद्ध हुआ था, तब अनधिकृत मसजिदों में नमाज और अजान बन्द कर दी गयी थी ।

२. मक्का व मदीना की तीर्थ यात्रा पर भी अकबर ने कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया । मक्का की तीर्थ यात्रा पूर्ववत की भांति जारी रही । १५७७ में शाह अबू तुराब के नेतृत्व में राजकीय व्यय से हज के यात्रियों का एक कारवां भेजा गया था । सन् १५८० में जब मीर अबु तुराब मक्का की तीर्थ यात्रा से लौटा तो वह अपने साथ एक भारी पाषाण लाया था । जिस पर कहा जाता था कि मुहम्मद पैगम्बर के पांव का निशान अंकित था । अबु तुराब ने कहा कि "एक पदचिन्ह सुलतान फिरोज के समय - सहीद जलाल बुखारी लाया था । यह चिन्ह दूसरे पैर का है । अकबर जानता था कि यह बात सच नहीं है । विशेषज्ञों ने भी इसे असत्य सिद्ध कर दिया था, फिर भी अकबर ने आदेश दिया कि यात्रियों का कारवां राजधानी से चार कोस की दूरी पर ठहरे । अकबर के लिये बहुत अच्छा शामियाना खड़ा किया गया और बड़े बड़े अफसरों और विद्वानों के साथ वहां वह गया । उसने पद चिन्ह वाले पत्थर को अपने कन्धे पर रखा और कुछ दूर ले गया और फिर अफसरों ने उसको कन्धे पर रखा, अन्त में उसको मीर अबु तुराब के मकान में रख दिया गया । २६ दीनइलाही के प्रसारण

---

२६ - अकबरनामा - हिन्दी अनुवादक - मथुरालाल शर्मा पृ० ४८४

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के बाद भी सन् १५८५ ई० में बहुत से मुसलमान स्त्री - पुरुषों को हज जाने की स्वीकृति दी गई थी । तृतीय ईसाई शिष्ट मण्डल के पादरी जब आये तो उन्होंने भी अनेक मुसलमान स्त्री पुरुषों को हज जाते देखा ।

३. अकबर पर यह आरोप लगाया गया कि उसे हजरत मोहम्मद तथा अहमद के नाम से घृणा हो गयी थी । यह आरोप भी निराधार है । अकबर का स्वयम् का नाम जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर था । लड़कों का अहमद एवं मुहम्मद के नाम से नामकरण करना साधारणतयासभी स्थानों पर प्रचलित था । इसके अलावा मुहम्मद शब्द उसकी राजकीय मुद्राओं पर अंकित किया जाता था । उसने पैगम्बर मुहम्मद के नाम से घृणा नहीं की । मुहम्मद या अहमद नाम न रखने के पीछे अकबर की यह भावना थी कि इस प्रकार नाम रखना पैगम्बर मुहम्मद और इस्लाम की अन्य विभूतियों के प्रति असम्मान प्रकट करना है । इस बात को तो बदायूंनी ने भी स्वीकार किया है कि भ्रष्ट और दुष्ट स्त्री को मुहम्मद की पुत्री फातिमा के नाम से पुकारना अनपयुक्त होगा ।

४. दाढ़ी बनवाना एक सामाजिक और सांस्कृतिक परम्परा है और उससे इस्लाम धर्म का पतन या अवहेलना नहीं होती । दाढ़ी बनवाने की अनुमति काजी इब्राहीम के फतवे से हो गयी थी । यदि दाढ़ी बनवाने से इस्लाम की उपेक्षा होती तो मुसलमानों का आधे से अधिक विश्व इस्लाम की उपेक्षा कर उससे पृथक हो जाता । इसके अलावा अकबर के शासन काल के पश्चात् के समय के चित्रों से ज्ञात होता है कि दरबारी तथा सरदार खूब दाढ़ियां रखते थे । यदि अकबर ने अपनी दाढ़ी कटादी तथा उसके कुछ दरबारियों ने उसका अनुसरण किया तो इससे यह नहीं समझ लेना चाहिये कि अकबर ने इस्लाम का दमन किया ।

५. सन् १५७८-७९ में शेख ताजुद्दीन ने सिजदा अथवा साष्टांग प्रणाम प्रारम्भ किया और इसे जमीं बोस कहा गया । कट्टर इस्लामी धारणाओं के अनुसार सिजदा केवल अल्लाह के लिये ही है, परन्तु इस्लाम के कुछ धर्म

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शास्त्रियों के अनुसार जो मनुष्य पूर्णत्व को प्राप्त हो चुका है और - जिसमें ईश्वर का देवत्व है उसे सिजदा किया जा सकता है । बादशाह इनसान - ए - कामिल है, इस लिये उसे सिजदा करना चाहिये और इसे सिजदा - ए - ताजिम कहा जाता था । तर्क की दृष्टि से यह ठीक है, लेकिन यहां यह उल्लेखनीय है कि अकबर सब समय सिजदा करने पर बाध्य नहीं करता था और इसे सिजदा नहीं, जमीं बोस कहा जाता था ।

६. अकबर पर यह आरोप लगाया गया कि उसने मुसलिम त्यौहारों को छोड़कर हिन्दू त्यौहारों को अपना लिया था लेकिन इसके विरुद्ध भी यह तर्क दिया जा सकता है कि तुर्क एवं मंगोलों के स्वभाव का यह लचीला पन था कि वे अपने से अधिक श्रेष्ठ संस्कृति के तत्वों को अपना लेते थे । सुल्ताना रजिया ने भारतीय परम्परा के अनुसार राजकीय छत्र रखने की प्रथा अपना ली तो सिकन्दर लोदी ने प्राचीन भारतीय हिन्दू राजाओं की स्वर्ण के तुलादान की प्रथा ग्रहण कर ली । यदि अकबर ने भी ऐसी ही भारतीय परम्परायें, रीति - रिवाज और त्यौहार अपना लिये तो यह सामाजिक और सांस्कृतिक बात थी, धार्मिक नहीं । इसके अतिरिक्त उसकी अधिकांश प्रजा हिन्दू थी और वह हिन्दुओं के सान्निध्य व सम्पर्क में अधिक था राज्य को स्थायित्व व दृढ़ता प्रदान करने के लिये और हिन्दुओं को सन्तुष्ट करने के लिये हिन्दुओं की ऐसी परम्परायें अपनाना या उनके त्यौहार मनाना एक राजनीतिक और न्याय संगत बात थी ।

७. इस्लामी परम्परा के अनुसार एक व्यक्ति चार विवाह कर चार पत्नियां रख सकता है । एक बार इबादतखाने में अकबर के आदेश पर - विद्वान मुल्लाओं और शेखों के बीच इस प्रश्न पर वाद - विवाद आयोजित किया गया कि एक व्यक्ति कितने विवाह कर सकता है ? बदायूंनी ने स्वयम् लिखा है कि इस वाद विवाद में इमाम, मलिक और शिया लोगों

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ने मुता विवाह को कानूनी व वैध माना तथा बदायूंनी ने स्वयम् ऐसे विवाह के लिये अपनी अनुमति दे दी थी । ३० इसके बाद यदि विवाह के प्रश्न पर मतभेद हुए तो इसके लिये अकबर को दोषी नहीं ठहराया जा सकता ।

८. अकबर ने हाथी, ऊंट, रीछ, चीते, सूअर, कुत्ते, भैंसे, - खच्चर तथा कई प्रकार के पक्षी पाल रखे थे । इससे दीनइलाही या इस्लाम का कोई सम्बन्ध नहीं आता । स्वयम् बदायूंनी ने भी स्वीकार किया है कि चीते के मांस का उपयोग मुसलमान मध्य एशिया में करते - थे । ३१ सन् १५६८-६६ में चित्तौड़ के घेरे के समय अर्थात दीनइलाही प्रसारण के कई वर्ष पूर्व अकबर की सेना में तुर्क, राजपूत आदि विभिन्न जातियों के लोग थे । वहां अकबर ने तुर्कों के लिये चीते के मांस का और राजपूतों के लिये सूअर के मांस का उपयोग करने की अनुमति दे दी थी, पर सभी मुसलमानों ने ऐसा नहीं किया । ऐसा प्रतीत होता है कि बदायूंनी ने इस आदेश की खींचातानी की है ।

६. अकबर ने फारसी के प्रचार में उन्नति की तथा संस्कृत एवं हिन्दी को भी आश्रय दिया । पर अरबी को नष्ट करने का न तो उसने कोई नियम बनाया और न ही आज्ञा दी । बदायूंनी की भांति कुछ - कट्टर लोग संस्कृत को प्रोत्साहन मिलने से ही अरबी की अवनति समझ बैठे ।

इस प्रकार यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि अकबर ने अपने पूर्वजों के धर्म का दमन करने के लिये कदापि प्रयत्न नहीं किया था । इस्लाम की उपेक्षा करने के लिये उस पर जो आरोप लगाये गये है वे निराधार, निर्मूल तथा थोथे हैं । बदायूंनी कट्टर धर्मांध मुसलमान था

30- Al-Badaoni Trans. by W.H.Lowe Vol. II P. 213

31 - Al-Badaoni Trans. by W.H.Lowe Vol. II P. 317.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उसने अकबर के सुधारों को संकीर्ण दृष्टि कोण से देखा और अकबर पर इस्लाम दमन के आरोप लगाये । इसी प्रकार जब ईसाई धर्म प्रचारकों के उद्देश्य पूरे नहीं हुए तो उन्होंने अकबर के बारे में मिथ्या बाते लिखनी प्रारम्भ कर दीं ।

सत्य तो यह है कि अकबर ने न तो कुरान का अनादर किया और न ही मसजिद का । उसने न तो अरबी की उपेक्षा की और न ही इस्लाम धर्म की । यह निर्विवाद है कि अकबर मृत्यु पर्यन्त ईश्वर में विश्वास करता रहा तथा हज जाने वाले मुसलिम यात्रियों की भी - व्यवस्था की । अंग्रेज राजदूत सर टामसरों का मत है कि अकबर अपने समस्त जीवन में मुसलमान ही रहा और मुसलमान रहते हुए ही उसकी मृत्यु हुई ।

-o- -o- -o-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धार्मिक नीति
के
परिणाम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धार्मिक नीति के परिणाम

अकबर के पूर्व दिल्ली सुल्तानों ने राजसत्ता को इस्लामी स्वरुप प्रदान किया तथा उसे एक अत्यन्त संकीर्ण, साम्प्रदायिक और मानव समाज विरोधी ईशसत्तात्मक मान लिया था। अकबर ने इस साम्प्रदायिक ईश अधीन सत्ता के स्तरों को ऊपर उठाकर सर्व माननीय ईशसत्ता के उत्कृष्ट तल पर पहुंचा दिया। उसने एक संकीर्ण साम्प्रदायिक राजसत्ता की विचार धारा को परिष्कृत तथा परिवर्तित कर दिया। अकबर ने भारत के प्रचलित अनेक धर्मों का शास्त्रीय विधि से निरीक्षण किया था जिसके फल स्वरुप वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि प्रत्येक धर्म में सत्य विद्यमान है और यह कहना गलत है कि सत्य केवल इस्लाम धर्म तक ही सीमित है जो कि दूसरे धर्मों की अपेक्षा नया है। अत: उसने इस्लाम धर्म को राज्य धर्म से पृथक करके दीन इलाही नामक नया धर्म को उस स्थान पर स्थापित - किया। यह नवीन धर्म एक सार पूर्ण विश्वास था तथा इसमें प्रत्येक धर्म में से लिये हुए उत्तम नियम संयुक्त थे। दीनइलाही की स्थापना के बाद भी अकबर ने अपनी प्रजा को व्यक्तिगत धार्मिक स्वतंत्रता देने की नीति का अनुसरण किया क्योंकि बादशाह को यह पूर्ण विश्वास था कि प्रत्येक धर्म में सत्यांश है, उनमें ईश्वर भी है चाहे उसकी उपासना मंदिर, मसजिद अथवा गिरजा घर में की जाये। उसका कहना था कि प्रत्येक धर्म को समान समझना चाहिये, प्रत्येक धर्मानुयायी को अपने धर्म में विश्वास करने और पालन करने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिये। इस्लाम धर्म को उच्च स्थान से उतार कर दूसरे धर्म के बराबर रखने के लिये ही उसने यह सब किया। उसकी इस धार्मिक नीति के परिणाम निम्नलिखित हुए -

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१. धार्मिक एकता व धर्म निरपेक्ष राज्य की स्थापना :

अकबर से पूर्व सुल्तानों के शासन काल में शासन धर्मसापेक्षता की नीति पर आधारित था। इस्लाम धर्म को सर्वोच्चता प्राप्त होने के - कारण सदियों तक मुस्लिम शासक वर्ग ने अपनी विधर्मी प्रजा पर अत्याचार किये थे। अकबर ने भारत में धार्मिक मतभेदों और संकीर्ण धर्मान्धता को नष्ट कर विभिन्न धर्मों को समन्वित करने का सराहनीय कार्य किया। राष्ट्रीयता, सहिष्णुता व उदारता की भावना से प्रेरित होकर अकबर ने विभिन्न धर्मों की श्रेष्ठतम विचार धाराओं और सत्य के सिद्धान्तों को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया। धार्मिक व कट्टरता, अन्ध विश्वास और असहिष्णुता के घेरे से उपर उठकर अपने राज्य के सभी धर्मावलम्बियों के साथ उसने समान व्यवहार किया तथा उदारता और सहिष्णुता की नीति अपनाई। उसे यदि सभी धर्मों में एक ओर कुछ दोष व अभाव - दिखाई दिये तो दूसरी ओर सत्य बातें भी दिखाई दीं। वह चाहता था कि सम्पूर्ण प्रजा के लिये एक ऐसा सरल एवं सत्य धर्म हो जिसका प्रत्येक व्यक्ति अनुसरण कर सके और धार्मिक भेद भाव लुप्त हो जाये। इसी लिये सभी प्रचलित धर्मों की श्रेष्ठ और सत्य बातों का समन्वय कर उसने दीन-इलाही धर्म चलाया। लेकिन इसके प्रचलन के बाद भी उसने विभिन्न धर्मावलम्बियों को धार्मिक स्वतंत्रता दे रखी थी, क्योंकि वह धर्म निरपेक्ष - राज्य की स्थापना करना चाहता था। उसने हिन्दुओं, मुसलमानों व ईसाइयों को मंदिर, मसजिद व गिरजा घर बनवाने तथा अपने अपने धर्मानुसार पूजा - पाठ व उपासना आदि करने की स्वीकृति दे दी। इस - नीति से अकबर ने विभिन्न धर्मों की कटुता का अन्त कर धार्मिक एकता स्थापित की।

परन्तु दुर्भाग्यवश अकबर का यह धार्मिक एकता और समन्वय का प्रयत्न सफल न हो सका। भारत में हिन्दू व मुसलमान अब इस बीसवी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सदी के उत्तरार्ध में भी इसके लिये तत्पर नहीं है तो इससे पूर्व सोलहवीं सदी में तो और भी पीछे थे । वास्तव में अकबर धार्मिक एकता और समन्वय लाने के अपने प्रयत्नों में असफल हुआ क्योंकि वह समय से आगे था । उस समय के हिन्दू और मुसलमान दोनों ही उसके धार्मिक विचारों को समझने में असमर्थ रहे । फिर भी अकबर ने अपनी नीति और सिद्धान्तों से संकुचित धार्मिक दृष्टिकोण, धर्मान्ध कटुता, असहिष्णुता, पारस्परिक धार्मिक कलह आदि को समाप्त कर दिया और विभिन्न धर्मों के सिद्धान्तों की एकता तथा धार्मिक व सामाजिक भाइचारे की भावना को प्रोत्साहित किया । कम से कम अपने शासन काल तक उसने सभी धर्मावलम्बियों को धार्मिक स्वतंत्रता देकर राज्य को धर्म निरपेक्ष बनाये रखा । प्रजा में किसी भी धर्म अथवा मत को मानने वाला व्यक्ति अपनी इच्छानुसार अपने धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन कर सकता था । अपने धर्म की उपासना व पूजन की विधी अपना सकता था । उसमें राज्य की ओर से किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जाता था ।

२. विभिन्न धर्मावलम्बियों में संतुलन रखने से साम्राज्य की सुरक्षा :

अकबर के विशाल साम्राज्य की सुरक्षा के लिये यह आवश्यक था कि वह विभिन्न धर्मावलम्बियों में संतुलन बनाये रखे । मध्य युग में वही प्रथम सम्राट था जिसने इस बात का स्पष्ट अनुभव कर लिया था कि उसकी प्रजा के सभी व्यक्तियों के साथ, चाहे वे किसी भी सम्प्रदाय या धर्म के हो, उसका व्यवहार न्याय संगत, निष्पक्ष एवं समान होना चाहिये । उससे पूर्व सुल्तानों के शासन काल में ऐसी नीति का अभाव होने से हिन्दुओं में असहयोग, विरोध तथा विद्रोह की प्रवृत्ति बलवती होती गयी थी । अकबर ने भेद भाव और पक्षपात की नीति को त्याग कर सुलह - ए - कुल की नीति अपनाई । हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई, जैन, और यहूदी आदि प्रत्येक पर उसकी दृष्टि समान थी । इतना ही नहीं उसने हर एक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्म वाले को जुदा - जुदा ऐसे फर्मान दिये कि, जो यावच्चंद्रदिवाकरौ अकबर का स्मरण कराते रहेंगे । राजनीति और प्रशासन में भी अकबर ने कोई भेद - भाव नहीं माना । उसने मुसलमानों के साथ - साथ बहुसंख्यक हिन्दू जाति को भी अपनाया तथा हिन्दुओं को ऊँचे उत्तरदायि पदों पर नियुक्त किया । न्याय देने में जाति, धर्म, मत, सम्प्रदाय और पद का विचार नहीं किया गया । अकबर ने जिस प्रकार प्रशासन और न्याय की नीति में जाति, धर्म व सम्प्रदाय आदि का विभेद नहीं किया उसी प्रकार दान देने में भी जाति, धर्म, मूर्ख व पंडित का भेद नहीं रखा । अपने राज्य में अनेक स्थलों पर उसने अनाथालय खोले । फतेहपुर सीकरी में भी दो बहुत बड़े महल बनवाये, इनमें एक का नाम खैरपुरा और दूसरे का नाम धर्मपुरा था । खैरपुरा में मुसलमान फकीरों के लिये ठहरने, विश्राम करने और भोजन करने की व्यवस्था थी । धर्मपुरा में हिन्दू - साधुओं के लिये प्रबन्ध था । प्रजा के लाभार्थ ऐसी - ऐसी व्यवस्थाएँ करने वाला राजा प्रजा का प्रिय क्यों न होता ? उसने अपनी उदार धार्मिक नीति के कारण हिन्दू, मुसलमान पारसी व जैन और ईसाई धर्मावलम्बियों में संतुलन बनाये रखा, जिससे उसके विशाल साम्राज्य की सुरक्षा सम्भव हो सकी ।

३. हिन्दुओं की दशा में सुधार :

उदार हृदयी सुल्तान अकबर ने हिन्दू धर्मावलम्बियों पर लगे अनेक अनुचित करों को समाप्त कर दिया । मुस्लिम सुलतान और शासक हिन्दू यात्रियों से उनके तीर्थ स्थानों में तीर्थ यात्रा कर वसूल करते थे । अकबर ने इसे अनावश्यक, अनुचित और ईश्वर की आराधना में प्रतिबन्ध समझ कर १५६३ में समाप्त कर दिया । लगभग आठ सौ वर्षों से भारत में हिन्दुओं पर मुसलमान शासकों द्वारा जजिया कर लगाया जाता रहा था । उन्हें यह आशा रहती थी कि इस जजिया कर के आर्थिक दबाव के कारण हिन्दू

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विवश होकर इस्लाम ग्रहण कर लेंगे । इस्लाम स्वीकार न करने वाले हिन्दुओं से यह कर दण्ड के रूप में लिया जाता था । अकबर ने इस इस्लामी प्रथा का अन्त कर १५६४ को जजिया कर समाप्त कर दिया । इस प्रकार इस कर की समाप्ति से राज्य की नीति में आमूल परिवर्तन हुए । १५८२ में अकबर ने अपने साम्राज्य में गुलामी प्रथा का अन्त कर दिया और एक विशेष दरबार में समस्त गुलामों की मुक्ति की घोषणा कर दी ।

उस समय हिन्दुओं में अनेक सामाजिक दोष, अनिष्टकारी - रूढियां और कुप्रथाएँ प्रचलित थीं जैसे - मद्यपान की बहुलता, बाल - विवाह, बहु पत्नीत्व, सती प्रथा, विधवाओं की विडम्बनाएँ और नारकीय जीवन, नरबलि, वेश्यावृत्ति आदि । इन दोषों के निराकरण व समाप्ति के लिये अकबर ने आदेश प्रसारित किये । मदिरापान को नियंत्रित करने के लिये अकबर ने कुछ नियम बनाये । मुक्त रूप से शराब का बनाना, बेचना और पीना निषिद्ध कर दिया । मदिरा का मूल्य कानून द्वारा निर्धारित कर दिया गया और लाइसेन्स प्राप्त शराब की दुकानें खोल दी गयीं ।

बाल विवाह को रोकने के लिये उसने यह आज्ञा दी कि लड़के का सोलह वर्ष और लड़की का चौदह वर्ष की अवस्था से पहले विवाह न किया जाये । उसने पुनर्विवाह का निषेध किया और इस बात का - प्रबन्ध किया कि वृद्ध स्त्रियां युवकों के साथ विवाह न करें । विधवा विवा -ह और अन्तरजातीय विवाहों को प्रोत्साहित किया गया ।

उस समय हिन्दुओं में पति की चिता पर सती होने की प्रथा प्रचलित थी । अकबर ने यह आदेश दिया कि किसी भी स्त्री को उसकी इच्छा के विरुद्ध सती होने के लिये विवश न किया जाये । यदि स्वेच्छा से कोई हिन्दू नारी अपने पति के शव के साथ सती होना चाहे तो उसे रोका न जाये ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसी प्रकार अकबर ने भिक्षावृत्ति पर नियंत्रण लगा दिया। राजपूतों में प्रचलित कन्या वध को दूर करने का प्रयत्न किया। वेश्यावृत्ति को रोकने और उनकी बढ़ती हुई संख्या को कम करने के लिये एक पृथक नगर की स्थापना की और उसका नाम शैतानपुरा रखा।

इन सुधारों से हिन्दुओं में व्याप्त राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक हीनता व दयनीयता की भावना कम हो गई। इसके साथ साथ इन कुप्रथाओं की समाप्ति से हिन्दुओं की दशा भी सुधर गई।

४. साम्राज्य में मेल - जोल का वातावरण :

अकबर की उदार धार्मिक नीति से साम्राज्य में हिन्दू - मुस्लिम मेल जोल का वातावरण बन गया। मुसलमान होने पर भी अकबर ने हिन्दुओं की अनेक प्रथाएँ और त्यौहार अपना लिये। उसने अपने रनवास में हिन्दू रानियों और उनकी दासियों व परिचारिकाओं के लिये हिन्दू धर्म की उपासना, पूजा, व्रत, उपवास, हवन, अनुष्ठान तथा अन्य धार्मिक और सामाजिक कार्य करने की स्वतंत्रता दे दी। इसका प्रभाव रनवास की अन्य मुस्लिम बेगमों और महिलाओं पर भी पड़ा। अकबर स्वयम् - हिन्दुओं के त्यौहार जैसे रक्षा बन्धन, दशहरा, दीवाली, होली, बसंत और शिवरात्रि आदि मनाने लगा। वह स्वयम् हिन्दू राजाओं के समान दशहरे को दरबार करने लगा था और अपने दरबारियों को भी हिन्दुओं के त्यौहारों तथा फारस के नौरोज के त्यौहार मनाने के लिये प्रोत्साहित करता था।

अकबर ने हिन्दू राजाओं के झरोखा दर्शन और तुलादान की प्रथा भी अपना ली थी। उसने स्वयम् अपना और अपने पुत्र का तुलादान किया था। जब अकबर ने अपने पुत्रों के विवाह हिन्दू राजपूत राजकुमारियों से किये तब उसने कुछ हिन्दू विवाह प्रथा अपनाई और कुछ प्रमुख मुस्लिम रस्मों का भी पालन किया। अकबर हिन्दुओं के त्यौहारों विशेष कर दशहरे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के समय और मुसलमानों के बाराबफात और ईद के त्यौहार के समय दावतें देता था और उनमें हिन्दू तथा मुसलमान दोनों वर्गों के अधिकारियों, सामन्तों और दरबारियों को आमंत्रित करता था । उसने हिन्दुओं की वेश भूषा व पगड़ी को अपनाया । अपने सम्बन्धियों की मृत्यु पर हिन्दुओं के समान ही सिर, दाढ़ी व मूंछें मुंडा कर शोक - मनाया । उसने हिन्दुओं और मुसलमानों को आमोद प्रमोद के साधन भी एक साथ ही उपलब्ध कराये ।

अकबर ने हिन्दू मुसलिम संस्कृति का भी समन्वय किया । दोनों वर्गों की शिक्षा हेतु कदम उठाये । मसजिदों के साथ मकतब स्थापित किये । मकतबों के साथ साथ अनेक हिन्दू पाठशालाओं और संस्कृत के विद्यालयों का निर्माण किया गया । ऐसे मिले - जुले विद्यालय और उच्च शिक्षा के हेतु शिक्षण संस्थाएँ स्थापित की गईं जहां हिन्दू और मुसलमान दोनों जातियों के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे । उसमें श्रेष्ठ भारतीय और मुसलिम विचार धारा के द्वारा फारसी को साहित्यिक और सांस्कृतिक रूप दिया । हिन्दुओं, मुसलमानों व ईसाईयों के धार्मिक ग्रन्थ व अन्य शास्त्रों के अनुवाद फारसी में कर देने से विभिन्न वर्ग व जातियां परस्पर एक दूसरे के धार्मिक विचारों से अवगत हो गयी ।

इस प्रकार अकबर के काल में साम्राज्य में मेल - जोल का वातावरण रहा ।

५. नवीन स्थापित मुगल - साम्राज्य की आवश्यकता एवं उसकी पूर्ति :

हिन्दुस्तान में मुगलों को अभी तक विदेशी मान कर हीनता और घृणा की दृष्टि से देखा जाता था । भारत में अकबर के पूर्वज तैमूर की लूट मार, उसके हिंसा और विध्वंस के कार्य, नृशंस हत्याएँ आदि के कारण, मुगलों के प्रति भारतीयों में स्वाभाविक घृणा हो गई थी । बाबर और हुमायूं का शासन भी अल्पकालीन ही रहा । उन्होंने भारत

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में कोई ऐसी लोकोपकारी कार्य नहीं किये जिससे जनता पर उनका प्रभाव पड़ा हो और उन्हें जनता का सौहार्द मिला हो । अत: इस नवीन स्थापित मुगल साम्राज्य की सुरक्षा के लिये यह आवश्यक था कि सभी वर्गों का साम्राज्य को सहयोग मिले । इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये अकबर ने निष्पक्ष हो सभी वर्गों के साथ सद्भावना की नीति अपनाई । धार्मिक पक्षपात को त्याग कर सब को अपने - अपने धर्म का पालन करने की स्वतंत्रता दी गई । अन्य धर्मों पर लगे अनेक अनुचित प्रतिबन्ध हटा दिये । साम्राज्य के उच्च पदों पर बिना किसी भेद - भाव के नियुक्तियां की गई । इससे प्रभावित हो सभी वर्गों ने साम्राज्य को दृढ़ बनाने के लिये सहयोग दिया । इस प्रकार अकबर की उदार धार्मिक नीति से नवीन स्थापित मुगल साम्राज्य की आवश्यकता की पूर्ति हो सकी ।

6. उलमाओं की शक्ति, प्रभाव और अधिकार का ह्रास :

अकबर द्वारा खुतबा पढ़ने, महजर या अभ्रांत आज्ञा पत्र - घोषित करने तथा दीनइलाही स्थापित करने से सैयदों, शेखों और मुल्ला-मुल्लाओं के अधिकार कम हो गये थे, उनकी शक्ति क्षीण हो गई थी और प्रभाव नगण्य हो गया था । उलमाओं के प्रति लोगों की श्रद्धा, भक्ति और सम्मान कम हो गया था । उलमा वर्ग के कुछ प्रभाव शाली व्यक्ति जो प्रशासन में नियुक्त किये गये थे, उनके पदों से पृथक कर दिये गये क्योंकि उनके विरुद्ध भ्रष्टाचार व गबन के आरोप थे । इससे राजनीति और प्रशासन में उनका प्रभाव लुप्त हो गया था । इससे प्रशासन और न्याय व्यवस्था में उलमा वर्ग हस्तक्षेप नहीं कर सका तथा प्रशासन शांति पूर्ण, निष्पक्ष एवं व्यवस्थित रहा । जहां विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय और वर्ग संघर्ष रत थे, वहां दीन इलाही ने अल्प काल के लिये सभी - धर्मावलम्बियों और वर्गों के लोगों को एक सूत्र में बांध दिया । मुल्लाओं की धर्मान्धता से मुक्त होकर अकबर ने और भी अधिक धार्मिक उदारता

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सहिष्णुता और समान व्यवहार की नीति को कार्यान्वित किया ।

७. हिन्दुओं का मुगल साम्राज्य को सहर्ष स्वीकार करना :

अकबर ने प्रत्येक क्षेत्र में हिन्दुओं के साथ सद्व्यवहार किया । हिन्दुओं पर लगे अनेक अनुचित करों को हटा दिया क्योंकि उसका कहना था कि सभी मनुष्यों से अच्छे सम्बन्ध रखना मेरा कर्तव्य है । उसने अपने शासन काल में इस बात की अनुमति दे दी थी कि यदि कोई ऐसा हिन्दू जिसको बल पूर्वक मुसलमान बना लिया गया था, फिर अपने पूर्वजों का धर्म ग्रहण करना चाहता हो तो उसे अपने धर्म में जाने दिया जाये । हिन्दुओं पर कुरान के नियमों और कुरान के अनुसार शासन करने की नीति त्याग दी गई । हिन्दू लेखा - जोखा और हिसाब किताब में बड़े दक्ष होते थे, अतएव सुल्तानों के शासन काल में वे केवल राजस्व विभाग के छोटे सामान्य कर्मचारी के पद पर ही नियुक्त होते थे । राज्य के ऊंचे पदों पर मुसलमानों के एकाधिकार को त्याग कर हिन्दुओं को योग्यता व निष्पक्षता से प्रतिभा के आधार पर शासन में नियुक्त करने से हिन्दू कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि हो गई । साम्राज्य के १३७ मनसबदारों में से १५ मनसबदार हिन्दू थे और ६ से अधिक प्रान्तों के दीवान हिन्दू थे । परिणाम स्वरूप हिन्दुओं ने अपनी स्वामिभक्ति दक्षता और ईमानदारी से मुगल साम्राज्य के प्रशासन में महत्व पूर्ण योग दिया । टोडरमल इसका उदाहरण है ।

अकबर ने बैलों, भैंसों और भेड़ों के मांस का प्रयोग बन्द करवा दिया था । हिन्दू साहित्य एवं संस्कृति को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से उसने ग्रन्थों का फारसी में अनुवाद करवाया । रामायण, महाभारत, वेद आदि का फारसी में अनुवाद हुआ । बीरबल, मानसिंह और अब्दुर्रहीम खानखाना जैसे योग्य हिन्दी कवियों को उसने प्रश्रय दिया ।

अकबर के इन कार्यों से हिन्दू जो कि अभी तक मुगलों को विदेशी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समझ रहे थे, सहर्ष मुगल साम्राज्य को स्वीकार कर लिया ।

८. राजपूतों की सेवाएं मुगल साम्राज्य की कई पीढ़ियों को प्राप्त :

अकबर प्रथम मुसलिम बादशाह था, जिसने राजपूतों के साथ उदारता सहृदयता और मैत्री का व्यवहार किया । सलतनत काल में सुलतानों ने राजपूतों के प्रति संकीर्णता, धर्मान्धता और आंतक की नीति अपनाई थी । इस लिये वे अपने राजवंशों को चिरस्थाई और दृढ़ बनाने में असफल रहे । परन्तु अकबर अपनी उदार, सहिष्णु और मैत्री पूर्ण राजपूत नीति के कारण पूर्व सुलतानों की अपेक्षा अधिक सफल रहा । राजपूतों से अपने सम्बन्ध को दृढ और स्थाई बनाने के लिये अकबर ने प्रमुख राजपूत राजवंशों की राज कन्याओं से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये । अकबर ने आमेर, बीकानेर तथा जैसलमेर की राज कन्याओं से विवाह किये । जिन राजपूत राजाओं ने अकबर से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये अथवा आत्म समर्पण कर दिया, उन राजपूत नरेशों, सामान्तों और सम्बन्धियों को उनकी योग्यता और प्रतिभा के अनुसार सैनिक और असैनिक पदों पर नियुक्त किया गया । इससे अकबर को अनेक वीर और रणकुशल सेना नायकों, प्रशासकों प्रान्त पतियों और राजनीतिज्ञों की अमूल्य और अभूत पूर्व सेवाएं प्राप्त हो गयी । इन्होंने बाह्य एवं आन्तरिक विद्रोहों का दमन कर - साम्राज्य में शांति स्थापित करने में महान योगदान दिया । वे मुगल - साम्राज्य की रीढ की हड्डी बन गये । आमेर की राजकुमारी, हरकू बाई से उत्पन्न पुत्र सलीम को अकबर ने अपना उत्तराधिकारी बनाया । इस विवाह (अकबर का हरकू बाई) के महत्व के बारे में डा० बेनीप्रसाद ने लिखा है कि यह विवाह भारत की राजनीति में नवयुग के उदय का प्रतीक था, इससे देश में उत्तम शासकों की पीढ़ियां चली और इससे मुगल सम्राटों की चार पुश्तों तक मध्य कालीन भारत के सर्वोच्च सेनानायक और कूट नीतिज्ञों की सेवाएं प्राप्त हो सकी ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन् १५५६ में जब अकबर राज्य सिंहासनारूढ़ हुआ था तब उसके पास कोई निश्चित साम्राज्य नहीं था । किन्तु सन् १६०५ में उसकी मृत्यु के समय उसने अपने उत्तराधिकारी के लिये उत्तरी भारत में विस्तृत और सुसंगठित राज्य छोड़ा था । यह अकबर की राजपूतों के प्रति सद्भावना का ही परिणाम था । जहांगीर और शाहजहां का जाज्वल्यमान युग राजपूतों के ही सहयोग से निर्मित हुआ था । इस तरह अकबर की उदार नीति से मुगल साम्राज्य की कई पीढ़ियों को राजपूतों की सेवाएंप्राप्त हुई ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रन्थ सूची

लेखक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	सन्
सै० अतहर अब्बास रिजवी	खिलजी कालीन भारत	अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय	१९५५
,, ,,	तुगलक कालीन भारत भाग - १	,,	१९५६
,, ,,	भाग - २	,,	१९५७
अबुल फजल	१ अकबरनामा हिन्दी अनुवादक एम. एल. शर्मा	कैलाश पुस्तक सदन ग्वालियर	१९७५
	2. Ain-i-Akbari Vol. I Trans. in English by H. Blochmann, Second edition.	Asiatic Society of Bengal	1927
	3. Ain-i-Akbari Vol. III Trans. by H. S. Jarrett.	-do-	1948
Abdul Quadir Badaoni.	Al-Badaoni or Muntakhabut Tawarikh Vol. II Trans. by W.H. Lowe	-do-	1924
Vincent A. Smith.	Akbar the great Mogul.	Oxford at the clarendon press.	1929
Sir Wolseley Haig.	Combridge History of India Vol. IV.	Combridge at the University press.	1937
शम्सुल उल्मा मौलाना मुहम्मद हुसैन आजाद	अकबरी दरबार हिन्दी अनुवादक रामचन्द्र वर्मा पहला भाग।	काशीनागरी प्रचारिणी सभा	१९२४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेखक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	सन्
श्री विद्याविजयजी	सूरीश्वर और सम्राट अकबर हिन्दी अनुवादक श्री कृष्णलाल वर्मा	श्री विजय धर्म-लक्ष्मी ज्ञान मंदिर आगरा ।	सम्वत् १९८०
एस.आर. शर्मा	भारत में मुगल साम्राज्य हिन्दी अनुवादक एम. एल. शर्मा ।	लक्ष्मीनारायण अग्रवाल आगरा-३	१९७३
आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव	मुगलकालीन भारत	शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी आगरा	१९५७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only